

# प्रारंभिक पाती

(पाली प्रायमरचा मराठी अनुवाद)

लिली डे सिल्वा

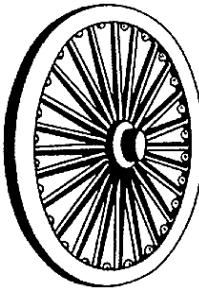
एम.ए., पीएच.डी

विपश्यना विशोधन विन्यास

# प्रारंभिक पाली

(पाली प्रायमरच्या मराठी अनुवाद)

लिली डे सिन्हा, एम. ए., पीएच. डी.



विषयना विशेषण विन्यास  
धर्मगिरि, इगतपुरी

## **M26 - प्रारंभिक याली**

© विपश्यना विशोधन विन्यास  
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम आवृत्ति : एप्रिल २०१५

ISBN 978-81-7414-369-3

### **प्रकाशकः**

**विपश्यना विशोधन विन्यास**  
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२ ४०३  
जिला- नाशिक, महाराष्ट्र  
फोन: ०२५५३-२४४०७६, २४४०८६, २४४१४४,  
२४४४४०; फैक्स: ९१-२५५३-२४४१७६  
Email: vri\_admin@dhamma.net.in  
info@giri.dhamma.org  
Website: www.vridhamma.org

### **मुद्रकः**

**अपोलो प्रिंटिंग प्रेस**  
जी-२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी.,  
सातपुर, नाशिक-४२२००७, महाराष्ट्र

# प्रारंभिक पाली

## विषयानुक्रमणिका

**पृष्ठ क्र.**

|        |  |
|--------|--|
| ५....  | समर्पण   |
| ७....  | प्रस्तावना   |
| ९....  | मुळाक्षरे  |
| ११.... | पाठ - १      अकारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे - पठमा विभक्ति (कर्ता)     |
| १४.... | पाठ - २      अकारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे दुतिया विभक्ति (कर्म)      |
| १७.... | पाठ - ३      अकारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे ततिया विभक्ति (करण)        |
| २१.... | पाठ - ४      अकारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे चतुर्थी विभक्ति (संप्रदान) |
| २५.... | पाठ - ५      अकारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे पञ्चमी विभक्ति (अपादान)    |
| २९.... | पाठ - ६      अकारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे छट्टी विभक्ति (संबंध)      |
| ३२.... | पाठ - ७      अकारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे सत्तमी विभक्ति (अधिकरण)    |
| ३६.... | पाठ - ८      अकारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे आलपन (संबोधन)              |
| ४०.... | पाठ - ९      क्रियापद - पूर्वकालिक अव्यय रूपे                                |
| ४४.... | पाठ - १०      क्रियापद - निमित्तार्थक अव्यय रूपे                             |
| ४७.... | पाठ - ११      वर्तमान काळवाचक धातुविशेषण रूप पुलिंगी                         |
| ५१.... | पाठ - १२      क्रियापदाची रूपे - वर्तमानकाळ कर्तरी प्रयोग                    |
| ५४.... | पाठ - १३      क्रियापदाची रूपे - वर्तमानकाळ कर्तरी प्रयोग (भाग - दुसरा)      |
| ५९.... | पाठ - १४      भविष्यकाळ  |

|         |                                  |   |
|---------|----------------------------------|---|
| ६२....  | <b>पाठ - १५</b>                  | क्रियापदाची हेतू - फल (संभावना) किंवा संकेतार्थी रूपे                                     |
| ६५....  | <b>पाठ - १६</b>                  | क्रियापदाची आज्ञार्थी रूपे  |
| ६८....  | <b>पाठ - १७</b>                  | भूतकाळ  |
| ७१....  | <b>पाठ - १८</b>                  | आकारान्त स्त्रीलिंगी नामाची विभक्ति रूपे  |
| ७४....  | <b>पाठ - १९</b>                  | भूतकाळवाचक धातुसाधित विशेषण रूप (कृदन्त)  |
| ७९....  | <b>पाठ - २०</b>                  | इकारान्त व ईकारान्त स्त्रीलिंगी नामाची विभक्ति रूपे                                       |
| ८२....  | <b>पाठ - २१</b>                  | वर्तमानकाळ वाचक धातुविशेषण रूप - स्त्रीलिंगी  |
| ८७....  | <b>पाठ - २२</b>                  | भविष्यकाळ वाचक कर्मणि धातुसाधित   |
| ८९....  | <b>पाठ - २३</b>                  | प्रयोजक( प्रेरणार्थक ) क्रियापद   |
| ९२....  | <b>पाठ - २४</b>                  | उकारान्त स्त्रीलिंगी नामांची विभक्ति रूपे   |
| ९५....  | <b>पाठ - २५</b>                  | इकारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे  |
| ९९....  | <b>पाठ - २६</b>                  | ईकारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे  |
| १०२.... | <b>पाठ - २७</b>                  | उकारान्त व ऊकारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे   |
| १०५.... | <b>पाठ - २८</b>                  | ‘उ’/‘अर’ -कारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे   |
| १०९.... | <b>पाठ - २९</b>                  | ‘इ’ व ‘उ’कारान्ती नपुंसकलिंगी नामाची विभक्ति रूपे   |
| ११२.... | <b>पाठ - ३०</b>                  | ‘वन्तु’ व ‘मन्तु’ अन्त विशेषणांची विभक्ति रूपे  |
| ११६.... | <b>पाठ - ३१</b>                  | पुरुषवाचक सर्वनामांची विभक्ति रूपे  |
| ११९.... | <b>पाठ - ३२</b>                  | सर्वनामांची विभक्ति रूपे -‘संबंधी सर्वनामे’,<br>‘दर्शक सर्वनामे’ व ‘प्रश्नार्थक सर्वनामे’ |
| १२६.... | <b>पाली शब्दार्थ (क्रियापदे)</b> |   |
| १३०.... | <b>पाली शब्दार्थ</b>             |   |
| १३७.... | <b>शब्दार्थ (मराठी-पाली)</b>     |   |

## **समर्पण**

माझ्या शैक्षणिक वाटचालीत माझे मार्गदर्शक  
दिवंगत पूज्य श्री. ज्युलियस बेरुगोडा यांच्या सृतीस  
सादर अर्पण.  
॥ नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स ॥

## प्रस्तावना

## प्रस्तावना

हे पुस्तक खूप पूर्वीच लिहिले गेले पाहिजे होते. माझे पाली भाषेचे प्रथम शिक्षक दिवंगत पूज्य श्री. ज्युलियस बेर्स्गोडा यांनी अनेक वर्षांपूर्वीच असे पुस्तक मी संकलीत करावे किंवा त्यांनी लिहिलेल्या पुस्तकाचा अनुवाद करावा अशी इच्छा प्रकट केली होती. त्यांच्या हयातीत हे पुस्तक मी पुरे करू न शकल्याचा मला खेद आहे; परंतु आजही मी एक मोठी जबाबदारी पार पाडत असल्याची भावना माझ्या मनात आहे.

या पुस्तकातील शिकविण्याच्या पद्धतीचे श्रेय माझ्या गुरुंचे आहे. जेव्हा १९४९ मध्ये मी त्यांना प्रथम भेटले तेव्हा पाली भाषेत किंती विभक्ती प्रत्यय असतात याची मी विचारणा केली. लॅटिन प्रमाणेच मला नाम आणि धातूची रूपे पाठ करावी लागतील अशी भीती वाटत होती. त्यांनी मोठ्या चतुराईने उत्तर दिले, की पालीत विभक्ती प्रत्यय नाहीत. आश्चर्य आणि कुतूहलाने मी त्यांना पाठ सुरु करण्याची विनंती केली. आम्ही लगेच वाक्ये बनविण्यास सुरुवात केली, जी पाठागणिक मोठी, जटिल आणि उत्सुकता वाढविणारी होत गेली. हे सराव सोडविताना मला फारच आनंद मिळाला व मला पाली भाषा आवडू लागली. मला शिकविण्यासाठी श्री. ज्युलियस बेर्स्गोडा यांनी सिंहलीमध्ये ‘पाली सुबोधिनी’ नावाचे पाली व्याकरणाचे एक पुस्तक संकलीत केले, जे १९५० च्या दशकाच्या पूर्वार्धात प्रकाशित झाले. आज हे पुस्तक उपलब्ध नाही व माझ्यापाशी देखील त्याची प्रत नाही.

१९८० च्या दशकाच्या पूर्वार्धात श्री. ज्युलियस बेर्स्गोडा यांनी सिंहलीमध्ये पाली व्याकरणाचे दुसरे पुस्तक संकलीत केले. त्यांच्या मते ही ‘पाली सुबोधिनी’ची विकसित आवृत्ती होती व मी त्याचा इंग्रजी अनुवाद करावा अशी त्यांची इच्छा होती. सिंहली विभागाचे प्रो. पी. बी. मीगसकुम्बुरा यांच्या मदतीने मी या पुस्तकाचा अनुवाद केला, परंतु यातील पाठांच्या रचनेबद्दल मी समाधानी नव्हते. त्यांनी उत्साहपूर्वक केलेल्या सुधारणा या पुस्तकाकरीता हानिकारक होत्या असे माझे मत होते, परंतु माझे हे परखड मत मी त्यांना सांगू शकले नाही. निधीच्या अभावामुळे हे पुस्तक प्रकाशित होऊ शकले नाही.

व्याकरण शिकविण्यासाठी सदर पुस्तकामध्ये वाक्यरचनेच्या त्याच पद्धतीचा नव्याने प्रयोग करण्यात आला आहे. पाली भाषेमध्ये वारंवार उपयोगात येणाऱ्या रूपांवर आधारीत क्रमशः: विस्तृत होणाऱ्या शब्दसंग्रहाचा येथे प्रयोग करण्यात आला आहे. सुरुवातीला केवळ अ- कारान्त पुलिंगी नामे वापरून विभक्ती प्रत्ययांची ओळख करून देण्यात आली आहे. तसेच वाक्यांमध्ये अ-कारान्त धातूंची वर्तमान कालवाचक तृतीय पुरुषी एकवचनी रूपे वापरण्यात आली आहेत. पाली

भाषेत ज्यांचा वारंवार उपयोग होतो अशा पूर्वकालिक व निमित्तार्थक अव्ययांचा परिचय यानंतर करून देण्यात आला आहे, जेणे करून विद्यार्थी अधिक मोठी व जटिल वाक्ये बनवू शकतील. या पायाभूत रचनेत विद्यार्थी तरबेज झाल्यानंतर व्याकरणातील इतर रूपे क्रमशः शिकविण्यात आली आहेत. असे करतानाही पूर्वी शिकलेल्या रूपांशी मिळतीजुळती रूपे प्रथम शिकविण्याचे तत्त्व अनुसरण्यात आले आहे. पालीतून आणि पालीत भाषांतर करण्याचा सराव हा प्रत्येक पाठाचा अविभाज्य घटक आहे.

हे पुस्तक नवीन विद्यार्थ्यांसाठी पाली व्याकरण परिचय पुस्तक आहे. ए. के. वॉर्डर यांच्या ‘इन्ट्रोडक्शन टु पालि’ सारख्या प्रगत पुस्तकाचा अभ्यास करण्यासाठी विद्यार्थ्यांना उपयोगी पडेल अशा तळेने या पुस्तकाची रूपरेषा बनविण्यात आली आहे.

भिक्षु ए.पी. बुद्धदत्त यांच्या ‘न्यू पालि कोर्स, भाग - १’ या पुस्तकातून मी शब्दसंग्रह संकलीत केला आहे; त्याबद्दल मी त्यांची ऋणी आहे. माझे विश्वविद्यालयातील गुरु प्रो. एन. ए. जयविक्रम यांनी या पुस्तकाचा पहिला आराखडा काळजीपूर्वक तपासून केलेल्या बहुमूल्य सूचनांबद्दल मी त्यांची मनःपूर्वक आभारी आहे.

लिली डी सिल्वा

## मुळाक्षरे

पाली भाषेची स्वतःची लिपी होती का याची माहिती उपलब्ध नाही. ज्या देशात पालीचा अभ्यास केला जातो, त्या देशातील लिपी ही पाली भाषा लिहिण्यासाठी वापरतात. भारतात देवनागरी, श्रीलंकेत सिंहली, ब्रह्मदेशात बर्मी, थायलंडमध्ये कंबोज इ. लिपी वापरल्या जातात. पाली टेक्स्ट सोसायटी लंडन, पाली लिहिण्यासाठी रोमन लिपीचा वापर करते आणि आता त्यास आंतरराष्ट्रीय मान्यता मिळाली आहे.

पालीत एकूण मुळाक्षरे ४१ आहेत. यात ८ स्वर, ३२ व्यंजने आणि १ निग्गहित आहेत.

### स्वर

अ आ इ ई उ ऊ ए ओ

### व्यंजने

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| क | ख | ग | घ | ङ |
| च | छ | ज | झ | ञ |
| ट | ठ | ડ | ढ | ণ |
| त | थ | द | ধ | ন |
| প | ফ | ব | ভ | ম |
| য | র | ল | ব | হ |
|   |   | স | হ | ং |

### निग्गहित (अनुनासिक)

অঁ

অ, ই, উ হে স্বর নহস্ব অসুন; আ, ঈ, ঊ হে স্বর দীর্ঘ আহेत. এ, ও হে স্বর মধ্যম স্বরুপাচে আहेत (না নহস্ব না দীর্ঘ). জোডাক্ষরাচ্যা আধী আল্যাস ত্যাংচা উচ্চার নহস্ব হोतো.

উদা. মেত্তা, খেত্ত, কোঢু, সোঞ্চি আणि ইতर বেঁকী দীর্ঘ হोतো উদা. দেব, সেনা, লোক, ওদন.

टीप:- \* बुद्ध, तथागत इ. शब्दांचे भाषांतर करताना आदरार्थी बहुवचनाचा वापर करण्यात आला आहे.

पाठ - १

## पाठ - १

### १. शब्द संग्रह:-

#### अकारान्त पुलिंगी नामे:-

|                  |                   |
|------------------|-------------------|
| बुद्ध/तथागत/सुगत | - बुद्ध           |
| मनुस             | - मनुष्य, मानव    |
| नर/पुरिस         | - नर, पुरुष, माणस |
| कस्सक            | - कृषक, शेतकरी    |
| ब्राह्मण         | - ब्राह्मण        |
| पुत              | - पुत्र           |
| मातुल            | - मामा            |
| कुमार            | - मुलगा           |
| वाणिज            | - वाणी, व्यापारी  |
| भूपाल            | - राजा            |
| सहाय/सहायक/मित्र | - मित्र, सहायक    |

#### क्रियापदे (वर्तमानकाळ, तृतीय पुरुष, एकवचन):-

|         |                 |
|---------|-----------------|
| भासति   | - बोलतो         |
| पचति    | - शिजवतो        |
| कसति    | - कसतो, नांगरतो |
| भुजति   | - खातो, जेवतो   |
| सयति    | - झोपतो         |
| पस्सति  | - पाहतो, बघतो   |
| छिन्दति | - कापतो, तोडतो  |
| गच्छति  | - जातो          |
| आगच्छति | - येतो          |
| धावति   | - धावतो, पळतो   |

### २. अकारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे:-

#### पठमा विभक्ति (कर्ता):-

नामाच्या शेवटी ‘ओ’ प्रत्यय लावून नामाची प्रथमा विभक्ति एकवचन होते आणि ‘आ’ प्रत्यय लावून नामाची प्रथमा विभक्ति अनेकवचन होते. अशाप्रकारे वाक्यात प्रथमा विभक्तिचा ‘कर्ता’ म्हणून प्रयोग होतो.

| एकवचन     | अनेकवचन  |
|-----------|----------|
| नर + ओ    | = नरो    |
| मातुल + ओ | = मातुलो |
| कस्सक + ओ | = कस्सको |
| नर + आ    | = नरा    |
| मातुल + आ | = मातुला |
| कस्सक + आ | = कस्सका |

३. वर्तमानकाळ तृतीय पुरुष - एक आणि अनेक वचनी क्रियापदे:-

वरील क्रियापदांमधे भास, पच, कस इत्यादि क्रियापदांचे मूळ धातू असून शेवटी लावलेले 'ति' हे प्रत्यय वर्तमानकाळ तृतीय पुरुष एकवचनातील आहेत. तसेच मूळ धातूच्या शेवटी 'न्ति' हे प्रत्यय लावून वर्तमानकाळ तृतीय पुरुष अनेकवचन होते.

| एकवचन                        | अनेकवचन   |
|------------------------------|---|
| भासति - (तो) बोलतो.          | भासन्ति - (ते) बोलतात, (ती) बोलते.                        |
| पचति - (तो) शिजवतो.          | पचन्ति - (ते) शिजवतात, (ती) शिजवते.                       |
| कसति - (तो) कसतो, शेती करतो. | कसन्ति - (ते) शेती करतात (कसतात)<br>(ती) कसते, शेती करते. |

४. वाक्य प्रयोगाची उदाहरणे:-

#### एकवचन

- (१) नरो भासति | - मनुष्य बोलतो.
- (२) मातुलो पचति | - मामा शिजवतो.
- (३) कस्सको कसति | - शेतकरी शेती करतो.

#### अनेकवचन

- (१) नरा भासन्ति | - माणसे बोलतात.
- (२) मातुला पचन्ति | - मामा शिजवतात.
- (३) कस्सका कसन्ति | - शेतकरी शेती करतात.

#### सराव - १

५. मराठीत भाषांतर करा

- |                  |                      |
|------------------|----------------------|
| १. भूपालो भुजति  | ७. ब्राह्मणा भासन्ति |
| २. पुता सयन्ति   | ८. मिता गच्छन्ति     |
| ३. वाणिजा सयन्ति | ९. कस्सका पचन्ति     |
| ४. बुद्धो पस्सति | १०. मनुस्सो छिन्दति  |
| ५. कुमारो धावति  | ११. पुरिसा धावन्ति   |
| ६. मातुलो कसति   | १२. सहायको भुजति     |

१३. तथागतो भासति ।

१४. नरो पचति ।

१५. सहाया कसन्ति ।

१६. सुगतो आगच्छति ।

#### ६. पालीत भाषांतर करा

१. मुले धावतात.

२. मामा पाहतो.

३. बुद्ध येतात\*.

४. मुले खातात.

५. व्यापारी जातात.

६. मनुष्य झोपतो.

७. राजे जातात.

८. ब्राह्मण कापतो.

९. मित्र बोलतात.

१०. शेतकरी शेती करतो.

११. व्यापारी येतो.

१२. पुत्र कापतात.

१३. मामा बोलतात.

१४. मुलगा धावतो.

१५. मित्र बोलतो.

१६. बुद्ध पाहतात.\*

## पाठ - २

### १. शब्द संग्रह:-

| अकारान्त पुलिंगी नामे:- |   |
|-------------------------|---|
| धम्म                    | - सिद्धान्त, स्वभाव,<br>सत्य, सदाचार, शिकवण |
| भत्त                    | - भात, तांदूळ, भोजन                         |
| ओदन                     | - शिंजवलेला भात                             |
| गाम                     | - गाव                                       |
| सुरिय                   | - सूर्य                                     |
| चन्द                    | - चंद्र                                     |
| कुक्कुर                 |   |
| /सुनख/सोण               | - कुत्रा                                    |
| विहार                   | - विहार                                     |
| पत्त                    | - पात्र, भांडे                              |
| आवाट                    | - खड्डा                                     |
| पब्बत                   | - पर्वत, डोंगर                              |
| याचक                    | - याचक, भिकारी                              |
| सिगाल                   | - कोळ्हा                                    |
| रुक्ख                   | - वृक्ष, झाड                                |

| क्रियापदे:- |                            |
|-------------|----------------------------|
| हरति        | - नेतो, घेऊन जातो          |
| आहरति       | - आणतो                     |
| आरुहति      | - चढतो, वर जातो            |
| ओरुहति      | - उतरतो, खाली येतो         |
| याचति       | - मागतो, याचना करतो        |
| खणति        | - खणतो, खोदतो              |
| विज्ञति     | - (बाणाने) वेधतो, वेध घेतो |
| पहरति       | - प्रहार करतो, मारतो       |
| रक्खति      | - रक्षितो, रक्षण करतो      |

### २. अकारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे (क्रमशः)

#### दुतिया विभक्ति (कर्म):-

नामाच्या शेवटी 'अं' हा प्रत्यय लावून नामाची दुतिया विभक्ति एकवचन होते आणि नामाच्या शेवटी 'ए' हा प्रत्यय लावून नामाची दुतिया विभक्ति अनेकवचन होते. अशाप्रकारे वाक्यात दुतिया विभक्तिचा 'कर्म' म्हणून प्रयोग होतो. दुतिया विभक्तीने गतीचे अंतिम लक्ष्य देखील व्यक्त होते.

| एकवचन      |          | अनेकवचन   |          |
|------------|----------|-----------|----------|
| नर + अं    | = नरं    | नर + ए    | = नरे    |
| मातुल + अं | = मातुलं | मातुल + ए | = मातुले |
| कस्सक + अं | = कस्सकं | कस्सक + ए | = कस्सके |

### ३. वाक्य प्रयोगाची उदाहरणे:-

#### एकवचन

१. पुतो नरं पस्सति | - पुत्र मनुष्याला पाहतो.  
 २. ब्राह्मणो मातुलं रक्खति | - ब्राह्मण मामाला रक्षितो.(रक्षण करतो)  
 ३. वाणिजो कस्सकं पहरति | - व्यापारी शेतकऱ्याला मारतो.

#### अनेकवचन

१. पुता नरे पस्सन्ति | - पुत्र मनुष्यांना पाहतात.  
 २. ब्राह्मणा मातुले रक्खन्ति | - ब्राह्मण मामांना रक्षितात. (रक्षण करतात)  
 ३. वाणिजा कस्सके पहरन्ति | - व्यापारी शेतकऱ्यांना मारतात. (प्रहार करतात)

### सराव - २

#### ४. मराठीत भाषांतर करा

- |                             |                              |
|-----------------------------|------------------------------|
| १. तथागतो धर्मं भासति       | १४. सिगाला गामं आगच्छन्ति    |
| २. ब्राह्मणा ओदनं भुजन्ति   | १५. ब्राह्मणा सहायके आहरन्ति |
| ३. मनुस्सो सुरियं पस्सति    | १६. भूपाला सुगतं वन्दन्ति    |
| ४. कुमारा सिगाले पहरन्ति    | १७. याचका सयन्ति             |
| ५. याचका भतं याचन्ति        | १८. मित्ता सुनखे हरन्ति      |
| ६. कस्सका आवाटे खणन्ति      | १९. पुतो चन्दं पस्सति        |
| ७. मित्तो गामं आगच्छति      | २०. कस्सको गामं धावति        |
| ८. भूपालो मनुस्से रक्खति    | २१. वाणिजा रुक्खे छिन्दन्ति  |
| ९. पुता पब्बतं गच्छन्ति     | २२. नरो सिगालं विज्ञति       |
| १०. कुमारो बुद्धं वन्दति    | २३. कुमारो ओदनं भुजति        |
| ११. वाणिजा पत्ते आहरन्ति    | २४. याचको सोणं पहरति         |
| १२. पुरिसो विहारं गच्छति    | २५. सहायका पब्बते आरुहन्ति   |
| १३. कुक्कुरा पब्बतं धावन्ति |                              |

**५. पालीत भाषांतर करा**

- |                                    |                               |
|------------------------------------|-------------------------------|
| १. पुरुष विहाराकडे जातात.          | १४. व्यापारी भात शिजवतो.      |
| २. शेतकरी पर्वत चढतात.             | १५. मुळे मामास वंदन करतात.    |
| ३. ब्राह्मण भात खातो.              | १६. राजे मनुष्यांना रक्षितात. |
| ४. बुद्ध मुलांना पाहतात.*          | १७. बुद्ध विहाराकडे येतात.*   |
| ५. मामा पात्रे नेतात.              | १८. पुरुष उतरतात.             |
| ६. पुत्र कुत्र्यास रक्षितो.        | १९. शेतकरी खहे खणतात.         |
| ७. राजा बुद्धांना वंदन करतो.*      | २०. व्यापारी धावतो.           |
| ८. व्यापारी मुलास आणतो.            | २१. कुत्रा चंद्रास पाहतो.     |
| ९. मित्र ब्राह्मणास नमस्कार करतात. | २२. मुळे झाडे चढतात.          |
| १०. याचक भात मागतात.               | २३. ब्राह्मण पात्र आणतो.      |
| ११. व्यापारी कोल्ह्यांना वेधतात.   | २४. याचक झोपतो.               |
| १२. मुळे पर्वत चढतात.              | २५. राजा बुद्धांना पाहतो.*    |
| १३. शेतकरी गावाकडे धावतो.          |                               |
| .                                  |                               |

## पाठ - ३

### शब्द संग्रह:-

#### अकारान्त पुलिंगी नामे:-

|      |                    |         |                   |
|------|--------------------|---------|-------------------|
| रथ   | - रथ               | सग      | - स्वर्ग          |
| सकट  | - गाडी             | अस्स    | - अश्व, घोडा      |
| हत्थ | - हात              | मिंग    | - मृग, हरिण, पशु  |
| पाद  | - पाय              | सर      | - शर, बाण, तीर    |
| मग्ग | - मार्ग            | पासाण   | - खडक, दगड        |
| दीप  | - दीप/वेट, दिवा    | ककच     | - करवत            |
| सावक | - शिष्य            | खग्ग    | - खड़ग, तलवार     |
| समण  | - श्रमण, परीग्राजक | चोर     | - चोर             |
|      |                    | पाण्डित | - विद्वान, ज्ञानी |

#### अकारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे (क्रमशः)

#### ततिया विभक्ति (करण):-

नामाच्या शेवटी ‘एन’ हा प्रत्यय लावून नामाची ततिया विभक्ति एकवचन होते आणि नामाच्या शेवटी ‘एहि’ हा प्रत्यय लावून नामाची ततिया विभक्ति अनेकवचन होते. काही वेळा ‘एभि’ हा पारंपरिक प्रत्यय सुन्दरा लावला जातो. अशाप्रकारे बनवलेली रूपे ‘तर्फे’, ‘सह’, ‘द्वारा’ हे अर्थ प्रकट करतात.

#### एकवचन

|            |           |                 |
|------------|-----------|-----------------|
| नर + एन    | = नरेन    | (नराने)         |
| मातुल + एन | = मातुलेन | (मामासह)        |
| कस्सक + एन | = कस्सकेन | (शेतकऱ्यातर्फे) |

#### अनेकवचन

|             |                     |                  |
|-------------|---------------------|------------------|
| नर + एहि    | = नरेहि/नरेभि       | (नरांनी)         |
| मातुल + एहि | = मातुलेहि/मातुलेभि | (मामांसह)        |
| कस्सक + एहि | = कस्सकेहि/कस्सकेभि | (शेतकऱ्यांतर्फे) |

सद्धिं / सह – (सह/बरोबर) हे शब्द देखील ततिया विभक्तिसाठी वापरले जातात. हे शब्द निर्जीव वस्तुंसाठी सहसा वापरले जात नाहीत.

### ३. वाक्य प्रयोगाची उदाहरणे:-

#### एकवचन

१. समणो नरेन सद्धिं गामं गच्छति ।  
श्रमण माणसाबरोबर गावाला जातो.
२. पुतो मातुलेन सह चन्दं पस्सति ।  
पुत्र मामाबरोबर चंद्र पाहतो.
३. कस्सको ककचेन रुक्खं छिन्दति ।  
शेतकरी करवतीने वृक्ष कापतो.

#### अनेकवचन

१. समणा नरेहि सद्धिं गामं गच्छन्ति ।  
श्रमण माणसांबरोबर गावी जातात.
२. पुता मातुलेहि सह चन्दं पस्सन्ति ।  
पुत्र मामांबरोबर चंद्र पाहतात.
३. कस्सका ककचेहि रुक्खे छिन्दन्ति ।  
शेतकरी करवतीनी झाडे कापतात.

**सराव - ३**

### ४. मराठीत भाषांतर करा

१. बुद्धो सावकेहि सद्धिं विहारं गच्छति ।
२. पुरिसो पुतेन सह दीपं धावति ।
३. कस्सको सरेन सिगालं विज्ञति ।
४. ब्राह्मणा मातुलेन सह पब्बतं आरुहन्ति ।
५. पुता पादेहि कुक्कुरे पहरन्ति ।
६. मातुले पुतेहि सद्धिं रथेन गामं आगच्छति ।
७. कुमारा हत्थेहि पत्ते आहरन्ति ।
८. चोरो मग्गेन अस्सं हरति ।
९. कस्सको आवाटं ओरुहति ।
१०. भूपाला पण्डितेहि सह समणे पस्सन्ति ।
११. पण्डितो भूपालेन सह तथागतं वन्दति ।
१२. पुता सहायेन सद्धिं ओदनं भुजन्ति ।

१३. वाणिजो पासाणेन मिगं पहरति ।  
 १४. सुनखा पादेहि आवाटे खणन्ति ।  
 १५. ब्राह्मणो पुतेन सह सुरियं वन्दति ।  
 १६. कस्सको सोणेहि सद्बिं रुक्खे रक्खति ।  
 १७. सुगतो सावकेहि सह विहारं आगच्छति ।  
 १८. याचको पत्तेन भत्तं आहरति ।  
 १९. पण्डिता सगं गच्छन्ति ।  
 २०. कुमारा अस्सेहि सद्बिं गामं धावन्ति ।  
 २१. चौरो खगेन नरं पहरति ।  
 २२. वाणिजो सकटेन दीपे आहरति ।  
 २३. अस्सा मगेन धावन्ति ।  
 २४. सिगाला मिगेहि सद्बिं पब्बतं धावन्ति ।  
 २५. भूपालो पण्डितेन सह मनुस्से रक्खति ।

#### **५. पालीत भाषांतर करा**

१. श्रमण मित्रासह बुद्धांना पाहतो.\*  
 २. शिष्य बुद्धांबरोबर विहाराकडे जातात.\*  
 ३. घोडा कुञ्चांसह डोंगराकडे धावतो.  
 ४. मुलगा दगडाने दिव्यास मारतो.  
 ५. व्यापारी बाणांनी हरणांना मारतात.  
 ६. शेतकरी हातांनी खड्हे खणतात.  
 ७. मुले मामाबरोबर रथाने विहाराकडे जातात.  
 ८. ब्राह्मण मित्रासह भात शिजवतो.  
 ९. राजा विद्वानांसह द्वीप रक्षितो.  
 १०. राजे पुत्रांसह श्रमणांना वंदितात.  
 ११. चोर द्वीपास घोडे आणतात.  
 १२. शिष्य माणसांसह डोंगर चढतात.  
 १३. व्यापारी शेतकर्यांसह झाडे तोडतात.  
 १४. याचक मित्रासह खड्हा खणतो.  
 १५. ब्राह्मण मामांसह चंद्र पाहतो.  
 १६. चोर तलवारीने घोड्यास मारतो.

- 
- १७. पुत्र पात्राने भात आणतो.
  - १८. मुले कुच्यांसह डोंगराकडे धावतात.
  - १९. व्यापारी शेतकच्यांसह गाड्यांनी गावाला येतात.
  - २०. मामा पुत्रांसह रथांनी विहाराकडे येतात.
  - २१. कोल्हे रस्त्याने डोंगराकडे धावतात.
  - २२. कुत्रे पायांनी खड्हे खणतात.
  - २३. मनुष्य हाताने करवत नेतो.
  - २४. श्रमण स्वर्गास जातात.
  - २५. बुद्ध शिष्यांसह गावास येतात.\*

## पाठ - ४

### १ शब्द संग्रह:-

#### अकारान्त पुलिंगी नामे:-

|            |                   |
|------------|-------------------|
| तापस       | - तपस्वी          |
| आचारिय     | - आचार्य          |
| वेज्ज      | - वैद्य           |
| सीह        | - सिंह            |
| लुहक       | - शिकारी          |
| अज         | - बकरा            |
| वानर/मक्कट | - वानर/माकड       |
| लाभ        | - लाभ, नफा, फायदा |
| मञ्च       | - पलंग            |
| कुद्दाल    | - कुदळ            |

#### क्रियापदे:-

|        |                             |
|--------|-----------------------------|
| रोदति  | - रडतो                      |
| हसति   | - हसतो                      |
| लभति   | - मिळवितो, प्राप्त करतो     |
| पविसति | - प्रवेश करतो               |
| ददाति  | - देतो                      |
| आददाति | - घेतो                      |
| कीलति  | - खेळतो                     |
| नहायति | - आंघोळ करतो,<br>स्नान करतो |
| आकहृति | - ओढतो, खेचतो               |
| पजहति  | - त्यागतो, वर्जित करतो      |

### २. अकारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे (क्रमशः)

#### चतुर्थी विभक्ति (संप्रदान):-

नामाच्या शेवटी ‘आय/स्स’ प्रत्यय लावून नामाची चतुर्थी विभक्ति एकवचन होते आणि नामाच्या शेवटी ‘आनं’ प्रत्यय लावून चतुर्थी विभक्ति अनेकवचन होते.

#### एकवचन

- १. नर + आय/स्स = नराय/नरस्स (नरासाठी, नरास)
- २. मातुल + आय/स्स = मातुलाय/मातुलस्स (मामासाठी, मामास)
- ३. कस्सक + आय/स्स = कस्सकाय/कस्सकस्स (शेतकऱ्यासाठी, शेतकऱ्यास,  
शेतकऱ्याकरीता)

#### अनेकवचन

- १. नर + आनं = नरानं (नरांसाठी, नरांना)
- २. मातुल + आनं = मातुलानं (मामांसाठी, मामांना)
- ३. कस्सक + आनं = कस्सकानं (शेतकऱ्यांसाठी, शेतकऱ्यांना, शेतकऱ्यांकरीता)

### ३. वाक्य प्रयोगाची उदाहरणे:-

#### एकवचन

१. धीवरो नराय मच्छं आहरति ।  
मच्छीमार माणसासाठी मासा आणतो.
२. पुतो मातुलस्स ओदनं ददाति ।  
पुत्र मामासाठी भात देतो.
३. वाणिजो कस्सकस्स अजं ददाति ।  
व्यापारी शेतकन्यास बकरा देतो.

#### अनेकवचन

१. धीवरा नरानं मच्छे आहरन्ति ।  
मच्छीमार माणसांसाठी मासे आणतात.
२. पुता मातुलानं ओदनं ददन्ति ।  
पुत्र मामांसाठी भात देतात.
३. वाणिजा कस्सकानं अजे ददन्ति ।  
व्यापारी शेतकन्यांना बकरे देतात.

### सराव - ४

#### ४. मराठीत भाषांतर करा

१. वाणिजो रजकस्स साटकं ददाति ।
२. वेज्जो आचरियस्स दीपं आहरति ।
३. मिगा पासाणम्हा पब्बतं धावन्ति ।
४. मनुस्सा बुद्धेहि धम्मं लभन्ति ।
५. पुरिसो वेज्जाय सकटं आकडृति ।
६. दारको हत्येन याचकस्स भत्तं आहरति ।
७. याचको आचरियाय आवाटं खणति ।
८. रजको अमच्यानं साटके ददाति ।
९. ब्राह्मणो सावकानं मज्चे आहरति ।
१०. वानरो रुक्खम्हा पतति, कुक्कुरो वानरं डसति ।
११. धीवरा पिटकेहि अमच्यानं मच्छे आहरन्ति ।
१२. कस्सको वाणिजाय रुक्खं छिन्दति ।

१३. चोरो कुद्दालेन आचरियाय आवाटं खणति ।  
 १४. वेज्जो पुत्तानं भत्तं पचति ।  
 १५. तापसो लुद्केन सद्धिं भासति ।  
 १६. लुद्को तापसस्स दीपं ददाति ।  
 १७. सीहा मिगे हनन्ति ।  
 १८. मक्कटो पुत्तेन सह रुक्खं आरुहति ।  
 १९. समणा उपासकेहि ओदनं लभन्ति ।  
 २०. दारका रोदन्ति, कुमारो हसति, मातुलो कुमारं पहरति ।  
 २१. वानरा पब्बतम्हा ओरुहन्ति, रुक्खे आरुहन्ति ।  
 २२. चोरा रथं पविसन्ति, अमच्छो रथं पजहति ।  
 २३. आचरियो दारकाय रुक्खम्हा सुकं आहरति ।  
 २४. लुद्को पब्बतम्हा अजं आकङ्क्षति ।  
 २५. तापसो पब्बतम्हा सीहं पस्सति ।  
 २६. वाणिजा कस्सकेहि लाभं लभन्ति ।  
 २७. लुद्को वाणिजानं वराहे हनति ।  
 २८. तापसो आचरियम्हा पञ्चे पुच्छति ।  
 २९. पुत्तो मज्जम्हा पतति ।  
 ३०. कुमारा सहायकेहि सद्धिं नहायन्ति ।

#### ५. पालीत भाषांतर करा

१. व्यापारी मंत्र्यांसाठी घोडे आणतात.
२. शिकारी व्यापाच्यासाठी बकरा मारतो.
३. मनुष्य शेतकच्यासाठी करवतीने झाड कापतो.
४. हरणे सिंहापासून पळतात.
५. राजा उपासकांबरोवर बुद्धांना पूजतो.
६. चोर गावांकडून डोंगरांकडे धावतात.
७. धोबी राजासाठी कपडे धुतो.
८. मच्छीमार शेतकच्यांसाठी टोपल्यांनी मासे आणतो.
९. आचार्य विहारात(दु.वि.) प्रवेश करतो, श्रमणांना पाहतो.
१०. साप माकडास चावतो.
११. मुले ब्राह्मणासाठी पलंग ओढतात.

- 
१२. चोर माणसांसह महालात प्रवेश करतात.  
 १३. शेतकरी मच्छीमारांकडून मासे मिळवितात.  
 १४. डुकरे द्वीपाहून डोंगराकडे जातात.  
 १५. राजा प्रासाद त्यागतो, पुत्र विहारात (दु.वि.) प्रवेश करतो.  
 १६. सिंह झोपतो, माकडे खेळतात.  
 १७. आचार्य कुञ्चापासून पुत्रांना रक्षितो.  
 १८. शिकारी मंच्यांसाठी बाणांनी हरणे मारतात.  
 १९. मुले मामाकडून भात इच्छितात.  
 २०. वैद्य तपस्व्याला वस्त्र देतो.  
 २१. व्यापारी आचार्यासाठी गाडीने बकरा आणतो.  
 २२. पुत्र डोंगरावरून चंद्र पाहतात.  
 २३. विद्वान लोक धर्मापासून लाभ मिळवितात.  
 २४. माकडे गाव सोडतात.  
 २५. पुत्र मित्रासाठी डोंगरावरून पोपट आणतो.  
 २६. वैद्य विहारात प्रवेश करतो.  
 २७. कोल्हा रस्त्याने गावातून डोंगराकडे धावतो.  
 २८. गाडी रस्त्यावरून पडते, मूळ रडते.  
 २९. मंत्री जिना चढतात, वैद्य जिना उतरतो  
 ३०. विद्वान लोक बुद्धांना प्रश्न विचारतात.\*

## पाठ - ५

### १. शब्द संग्रह:-

#### अकारान्त पुलिंगी नामे:-

|       |                  |
|-------|------------------|
| धीवर  | - मासेमार, कोळी  |
| मच्छ  | - मासा           |
| पिटक  | - टोपली          |
| अमच्य | - मंत्री, अमात्य |
| उपासक | - उपासक          |
| पासाद | - महाल, प्रासाद  |
| दारक  | - मूळ            |
| साटक  | - वस्त्र         |
| रजक   | - धोबी           |
| सप्प  | - सर्प           |
| पऱ्ह  | - प्रश्न         |

#### क्रियापदे:-

|          |                        |
|----------|------------------------|
| पतति     | - पडतो                 |
| धोवति    | - धुतो                 |
| इच्छति   | - इच्छितो              |
| डसति     | - चावतो, डसतो          |
| पुच्छति  | - विचारतो              |
| पक्कोसति | - बोलावतो              |
| खादति    | - खातो                 |
| हनति     | - ठार मारतो            |
| ओतरति    | - उतरतो                |
| निक्खमति | - निघतो,<br>बाहेर पडतो |
| सोपान    | - जिना                 |
| सुक/सुव  | - पोपट                 |

### २. अकारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे (क्रमशः)

#### पञ्चमी विभक्ति (अपादान):-

नामाच्या शेवटी ‘आ’/‘म्हा’/‘स्मा’ हे प्रत्यय लावून नामाची पंचमी विभक्ति एकवचन होते. नामाच्या शेवटी ‘एहि’ हा प्रत्यय लावून नामाची पंचमी विभक्ति अनेकवचन होते. पारंपरिक ‘एभि’ प्रत्यय सुद्धा लावतात.

#### एकवचन

- १. नर + आ / म्हा / स्मा = नरा / नरम्हा / नरस्मा (पुरुषापासून)
- २. मातुल + आ / म्हा / स्मा = मातुला / मातुलम्हा / मातुलस्मा (मामापासून)
- ३. कस्सक + आ / म्हा / स्मा = कस्सका / कस्सकम्हा / कस्सकस्मा (शेतकऱ्यापासून)

#### अनेकवचन

- १. नर + एहि (एभि) = नरेहि/नरेभि (पुरुषांकङ्गून)
- २. मातुल + एहि (एभि) = मातुलेहि/मातुलेभि (मामांकङ्गून)
- ३. कस्सक + एहि (एभि) = कस्सकेहि/कस्सकेभि (शेतकऱ्यांकङ्गून)

### ३. वाक्य प्रयोगाची उदाहरणे:-

#### एकवचन

१. याचको नरम्भा भत्तं याचति ।  
याचक माणसाकडून भात मागतो.
२. पुतो मातुलम्भा पञ्चं पुच्छति ।  
पुत्र मामास प्रश्न विचारतो.
३. कस्सको रुक्खस्मा पतति ।  
शेतकरी झाडावरून पडतो.

#### अनेकवचन

१. याचका नरेहि भत्तं याचन्ति ।  
याचक माणसांकडून भात मागतात.
२. पुता मातुलेहि पञ्चे पुच्छन्ति ।  
पुत्र मामांना प्रश्न विचारतात.
३. कस्सका रुक्खेहि पतन्ति ।  
शेतकरी झाडांवरून पडतात.

सराव - ५

### ४. मराठीत भाषांतर करा

१. चोरा गामम्हा पब्बतं धावन्ति ।
२. दारको मातुलस्मा ओदनं याचति ।
३. कुमारो सोपानम्हा पतति ।
४. मातुला साटके धोवन्ति ।
५. धीवरा पिटकेहि मच्छे आहरन्ति ।
६. उपासका समणेहि सद्धिं विहारस्मा निक्खमन्ति ।
७. ब्राह्मणो ककचेन रुक्खं छिन्दति ।
८. कुमारा मित्रेहि सह भूपालं पस्सन्ति ।
९. वाणिजो अस्सेन सद्धिं पब्बतस्मा ओरुहति ।
१०. याचको कस्सकस्मा सोणं याचति ।
११. सप्पा पब्बतेहि गामं ओतरन्ति ।
१२. अमच्च्या सरेहि मिगे विज्ञन्ति ।

१३. चोरो गामम्हा सकटेन साटके हरति ।  
 १४. भूपालो अमच्येहि सद्बिं रथेन पासादं आगच्छति ।  
 १५. सूकरा पादेहि आवाटे खणन्ति ।  
 १६. कुमारो सहायकेहि सह साटके धोवति ।  
 १७. समणा गामम्हा उपासकेहि सद्बिं निक्खमन्ति ।  
 १८. कुकुरो पिटकम्हा मच्छं खादति ।  
 १९. मित्तो पुतम्हा सुनखं याचति ।  
 २०. बुद्धो सावके पुच्छति ।  
 २१. अमच्या पण्डितेहि पज्जे पुच्छन्ति ।  
 २२. रजको सहायेन सह साटकं धोवति ।  
 २३. मच्छा पिटकम्हा पतन्ति ।  
 २४. चोरा पासाणेहि वराहे पहरन्ति ।  
 २५. अमच्यो पासादम्हा सुवं आहरति ।

#### **५. पालीत भाषांतर करा**

१. घोडे गावाकडून डोंगराकडे धावतात.
२. व्यापारी उपासकांसह द्वीपाकडून विहाराकडे येतात.
३. चोर बाणांनी डुकरांना मारतात.
४. उपासक समणास धर्माविषयी प्रश्न विचारतो.
५. मूल मित्रासह खडकावरून पडते.
६. कुत्रा मुलास चावतो.
७. मंत्री राजासह प्रासादातून निघतात.
८. मनुष्य द्वीपाहून हरिण आणतो.
९. शेतकरी झाडावरून उतरतो.
१०. कुत्रे घोड्यांवरोबर रस्त्यावरून धावतात.
११. मुले व्यापाच्यांकडून दिवे नेतात.
१२. चोर जिन्यावरून उतरतो.
१३. व्यापारी डोंगरावरून पोपट आणतात.
१४. घोडा पायाने सापास मारतो.
१५. मामा मित्रांसह डोंगरांवरून श्रमणांना बघतो.
१६. व्यापारी द्वीपाहून प्रासादाकडे घोडे आणतात.

- 
१७. मंत्री चोराला (प्रश्न) विचारतो.
  १८. शेतकरी धोब्याबरोबर भात खातो.
  १९. मूळ जिन्यावरून पडते.
  २०. मच्छीमार मामासह पर्वत चढतो.
  २१. याचक कुञ्चासोबत झोपतो.
  २२. राजे मंत्र्यांसह द्वीपांना रक्षितात.
  २३. राजा प्रासादातून बुद्धांना वंदन करतो.\*
  २४. माणूस तलवारिने सर्प मारतो.
  २५. मच्छीमार गाड्यांमधून गावाकडे मासे आणतात.
  २६. डुकरे गावाकडून डोंगराकडे पळतात.
  २७. उपासक विद्वानाला प्रश्न विचारतात.
  २८. पुत्र झाडावरून पोपट आणतो.
  २९. विद्वान विहाराकडे जातात.
  ३०. श्रावक रस्त्यावरून गावाकडे जातात.

## पाठ - ६

### १. अकारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे (क्रमशः)

#### छट्टी विभक्ति (संबंध):-

छट्टी विभक्तिचे प्रत्यय हे बरेचसे चतुर्थीच्या प्रत्ययांसारखे असतात. नामाच्या शेवटी 'स्स' हे प्रत्यय लावून छट्टी विभक्तिचे एकवचन होते. तसेच 'आनं' हे प्रत्यय लावून अनेकवचन होते.

#### एकवचन

- |                |                         |
|----------------|-------------------------|
| १. नर + स्स    | = नरस्स (मनुष्याचा)     |
| २. मातुल + स्स | = मातुलस्स (मामाचा)     |
| ३. कस्सक + स्स | = कस्सकस्स (शेतकर्याचा) |

#### अनेकवचन

- |                |                          |
|----------------|--------------------------|
| १. नर + आनं    | = नरानं (मनुष्यांचा)     |
| २. मातुल + आनं | = मातुलानं (मामांचा)     |
| ३. कस्सक + आनं | = कस्सकानं (शेतकर्यांचा) |

### २. वाक्य प्रयोगाची उदाहरणे:-

#### एकवचन

१. नरस्स पुत्तो भत्तं याचति ।  
मनुष्याचा पुत्र भात मागतो.  
२. मातुलस्स सहायको रथं आहरति ।  
मामाचा मित्र रथ आणतो.  
३. कस्सकस्स सूकरो दीपं धावति ।  
शेतकर्याचे डुककर द्वीपाकडे धावते.

#### अनेकवचन

१. नरानं पुत्ता भत्तं याचन्ति ।  
मनुष्यांचे पुत्र भात मागतात.  
२. मातुलानं सहायका रथे आहरन्ति ।  
मामांचे मित्र रथांना आणतात.  
३. कस्सकानं सूकरा दीपे धावन्ति ।  
शेतकर्यांची डुकरे द्वीपांकडे धावतात.

## सराव - ६

## २. मराठीत भाषांतर करा

१. कस्सकस्स पुत्तो वेज्जस्स सहायेन सद्धिं आगच्छति ।
२. ब्राह्मणस्स कुद्दालो हत्थम्हा पतति ।
३. मिगा आवटेहि निक्खमन्ति ।
४. वाणिजानं अस्सा कस्सकस्स गामं धावन्ति ।
५. मातुलस्स मित्तो तथागतस्स सावके वन्दति ।
६. अमच्चो भूपालस्स खगेन सप्पं पहरति ।
७. वाणिजा गामे मनुस्सानं पिटकेहि मच्छे आहरन्ति ।
८. चोरो वेज्जस्स सकटेन मित्तेन सह गामम्हा निक्खमति ।
९. उपासकस्स पुत्ता समणेहि सह विहारं गच्छन्ति ।
१०. याचको अमच्चस्स साटकं इच्छति ।
११. मित्तानं मातुला तापसानं ओदनं ददन्ति ।
१२. धीवरस्स कक्खेन चोरो कुकुरं पहरति ।
१३. भूपालस्स पुत्तो अमच्चस्स अस्सं आरुहति ।
१४. पण्डितस्स पुत्ता बुद्धस्स सावकेन सह विहारं पविसन्ति ।
१५. सुरियो मनुस्से रक्खति ।
१६. वेज्जस्स सुनखो आचरियस्स सोपानम्हा पतति ।
१७. रजका रुक्खेहि ओरुहन्ति ।
१८. याचकस्स दारका रोदन्ति ।
१९. लुद्कस्स पुत्ता चोरस्स दारकेहि सद्धिं कीळन्ति ।
२०. तापसो तथागतस्स सावकानं ओदनं ददाति ।
२१. समणा आचरियस्स हत्थेन साटके लभन्ति ।
२२. चोरो वाणिजस्स सहायकस्मा अस्सं याचति ।
२३. उपासका तथागतस्स सावकेहि पञ्जे पुच्छन्ति ।
२४. पासाणम्हा मिगो पतति, लुद्को हसति, सुनखा धावन्ति ।
२५. वेज्जस्स पत्तो पुत्तस्स हत्थम्हा पतति ।
२६. कुमारो मातुलानं पुत्तानं हत्थेन ओदनं ददाति ।
२७. सरा लुद्कस्स हत्थेहि पतन्ति, मिगा पब्बतं धावन्ति ।
२८. भूपालस्स पुत्तो अमच्चेहि सद्धिं पासादस्मा ओरुहति ।
२९. वेज्जस्स सोणो कस्सकस्स सूकरं डसति ।

३०. धीवरो मनुस्सानं मच्छे आहरति, लाभं लभति ।

#### ४. पालीत भाषांतर करा

१. ब्राह्मणाचे पुत्र मंत्र्याच्या मुलासह आंघोळ करतात.
२. मामाचा मित्र शेतकऱ्याच्या मुलासह भात शिजवतो.
३. मच्छीमार राजाच्या प्रासादाकडे मासे आणतो.
४. राजा मंत्र्यांच्या पुत्रांना प्रासादातून बोलावतो.
५. वाण्याचा रथ डोंगरावरून पडतो.
६. राजाचे मंत्री घोड्यांसह प्रासादातून निघतात.
७. ब्राह्मणाचा वैद्य तपस्व्यांना वस्त्रे देतो.
८. शिकाऱ्याचे कुत्रे डोंगराकडून गावाकडे धावतात.
९. व्यापारी वैद्याच्या मुलासाठी पलंग आणतो.
१०. हरणे डोंगराकडून गावाकडे धावतात.
११. आचार्याचा मुलगा शेतकऱ्याच्या झाडावरून पडतो.
१२. कुत्रा मच्छीमाराच्या टोपलीतून मासे खातो.
१३. बुद्धांचे श्रावक विहारातून डोंगराकडे जातात.\*
१४. शिकारी मंत्र्याच्या मित्रांसाठी बाणाने डुक्कर मारतो.
१५. मुलगा आचार्याच्या हातांतून दिवा मिळवतो.
१६. वैद्यांचा शिक्षक मुलाच्या मामास बोलावतो.
१७. मुलगा श्रमणासाठी पात्राने भात आणतो.
१८. माणसे उपासकांच्या गावाला जातात.
१९. डुकरे कोल्ह्यांपासून पळतात.
२०. माकडे हरणांसह खेळतात.
२१. विद्वान व्यापाऱ्यांसह राजाच्या बेटास येतो.
२२. शेतकऱ्याची मुले मामांच्या रथांनी डोंगराकडे जातात.
२३. व्यापाऱ्यांच्या गाड्यांमधून वस्त्रे पडतात.
२४. श्रमण राजाच्या हस्ते पात्र मिळवतो.
२५. धोबी मनुष्याच्या मामासाठी वस्त्रे आणतो.
२६. राजाचे मंत्री आचार्याच्या मित्रांसह भात खातात.
२७. राजांची बेटे चोरांपासून विद्वान रक्षितात.
२८. मुले शेतकऱ्यांकडून मच्छीमारांसाठी टोपल्या आणतात.
२९. शेतकऱ्याचा घोडा वैद्याचे वाहन रस्त्यापासून खेचतो.
३०. श्रमण आचार्याच्या गावी प्रवेश करतात.

## पाठ - ७

### १. शब्द संग्रह:-

| अकारान्त पुलिंगी नामे:- |                           |
|-------------------------|---------------------------|
| नाविक                   | - नाविक, नावाड            |
| आकास                    | - आकाश                    |
| समुद्र                  | - समुद्र, सागर            |
| देव/सुर                 | - देव/देवता/सुर           |
| लोक                     | - जग                      |
| आलोक                    | - प्रकाश                  |
| सकुण                    | - पक्षी                   |
| काक                     | - कावळा                   |
| निवास                   | - निवास, घर               |
| सप्पुरिस                | - सत्पुरुष, सदाचारी       |
| अस्सप्पुरिस             | - दुष्टपुरुष,<br>दुराचारी |
| काय                     | - काया, शरीर              |
| दूत                     | - दूत, संदेशवाहक          |
| गोण                     | - बैल                     |

| क्रियापदे:- |                                |
|-------------|--------------------------------|
| आहिणति      | - हिंडतो                       |
| चरति        | - चालतो, फिरतो                 |
| निसीदति     | - बसतो                         |
| सन्निपत्ति  | - एकत्र होतो, जमा होतो         |
| विहरति      | - राहतो, विहार करतो            |
| वसति        | - वसतो, राहतो                  |
| जीवति       | - जगतो                         |
| तिढुति      | - उभा राहतो                    |
| उप्पत्ति    | - उडतो, उडी मारतो              |
| तरति        | - ओलांडतो,<br>पार करतो (पाणी)  |
| उत्तराति    | - बाहेर येतो (पाण्यातून)       |
| पसीदति      | - अनंदित होतो, प्रसन्न<br>होतो |

### २. अकारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति स्पे (क्रमशः)

#### सत्तमी विभक्ति (अधिकरण):-

नामाच्या शेवटी 'ए', 'म्हि', 'स्मि' हे प्रत्यय लावून नामाची सत्तमी विभक्ति एकवचन होते. नामाच्या शेवटी 'एसु' हा प्रत्यय लावून नामाची सप्तमी विभक्ति अनेकवचन होते.

#### एकवचन

- १. नर + ए / म्हि / स्मि = नरे, नरम्हि, नरस्मि (माणसात, माणसावर)
- २. मातुल + ए / म्हि / स्मि = मातुले, मातुलम्हि, मातुलस्मि (मामात, मामावर)
- ३. कस्सक + ए / म्हि / स्मि = कस्सके, कस्सकम्हि, कस्सकस्मि  
(शेतकऱ्यावर, शेतकऱ्यामधे )

**अनेकवचन**

१. नर + एसु = नरेसु (नरांच्या आत / वर )  
 २. मातुल + एसु = मातुलेसु (मामांच्या / आत / वर )  
 ३. कस्सक + एसु = कस्सकेसु (शेतकर्यांच्या आत / वर )

**३. वाक्य प्रयोगाची उदाहरणे:-****एकवचन**

१. सप्पो नरस्मि पतति | - साप माणसावर पडतो.  
 २. पुतो मातुलम्हि पसीदति | - पुत्र मामावर प्रसन्न होतो.  
 ३. वाणिजो कस्सकस्मिं पसीदति | - व्यापारी शेतकर्यावर खूप होतो.

**अनेकवचन**

१. सप्पा नरेसु पतन्ति | - साप माणसांवर पडतात.  
 २. पुता मातुलेसु पसीदन्ति | - पुत्र मामांवर प्रसन्न होतात.  
 ३. वाणिजा कस्सकेसु पसीदन्ति | - व्यापारी शेतकर्यांवर खूप होतात.

**सराव - ७****४. मराठीत भाषांतर करा**

१. ब्राह्मणो सहायकेन सद्दिं रथम्हि निसीदति |  
 २. असप्पुरिसा चोरेहि सह गामेसु चरन्ति |  
 ३. वाणिजो कस्सकस्स निवासे भतं पचति |  
 ४. भूपालस्स अमच्चा दीपेसु मनुस्से रक्खन्ति |  
 ५. सुगतस्स सावका विहारस्मिं वसन्ति |  
 ६. मक्कटो रुक्खम्हा आवटस्मिं पतति |  
 ७. सुरियस्स आलोको समुद्रम्हि पतति |  
 ८. कस्सकानं गोणा गामे आहिण्डन्ति |  
 ९. वेजजस्स दारको मञ्चस्मिं सयति |  
 १०. धीवरा समुद्रम्हा पिटकेसु मच्छे आहरन्ति |  
 ११. सीहो पासाणस्मि तिडुति, मक्कटा रुक्खेसु चरन्ति |  
 १२. भूपालस्स दूतो अमच्येन सद्दिं समुद्रं तरति |  
 १३. मनुस्सा लोके जीवन्ति, देवा सग्गे वसन्ति |  
 १४. मिगा पब्बतेसु धावन्ति, सकुणा आकासे उपतन्ति |

१५. अमच्चो खगं भूपालस्स हत्थम्हा आददाति ।  
 १६. आचरियो मातुलस्स निवासे मञ्चम्हि पुत्तेन सह निसीदन्ति ।  
 १७. तापसा पब्बतम्हि विहरन्ति ।  
 १८. उपासका समणेहि सद्धिं विहारे सन्निपतन्ति ।  
 १९. काका रुक्खेहि उप्पतन्ति ।  
 २०. बुद्धो धम्मं भासति, सप्पुरिसा बुद्धम्हि पसीदन्ति ।  
 २१. असप्पुरिसो खगेन नाविकस्स दूतं पहरति ।  
 २२. पुरिसो सरेन सकुणं विज्ञाति, सकुणो रुक्खम्हा आवाटस्मि पतति ।  
 २३. मनुस्सा सुरियस्स आलोकेन लोकं पस्सन्ति ।  
 २४. कस्सकस्स गोणा मग्गे सयन्ति ।  
 २५. गोणस्स कायस्मि काको तिङ्गुति ।  
 २६. मिगा दीपस्मिं पासाणेसु निसीदन्ति ।  
 २७. सकुणो नाविकस्स हत्थम्हा आवाटस्मि पतति ।  
 २८. सप्पुरिसो नाविकेन सह समुद्धम्हा उत्तरति ।  
 २९. कुद्धालो लुद्धकस्स हत्थम्हा आवाटस्मिं पतति ।  
 ३०. सुरियस्स आलोकेन चन्दो भासति (प्रकाशतो) ।

#### ५. पालीत भाषांतर करा

१. सिंह डोंगरातील खडकावर उभा राहतो.
२. चोर शिक्षकाच्या घरी प्रवेश करतात.
३. मुले मित्रांसह रस्त्यावरून समुद्राकडे धावतात.
४. मामाचे बैल रस्त्यावर फिरतात.
५. पक्षी झाडावर बसतात.
६. बैल पायाने बकच्याला मारतो.
७. कोल्हे डोंगरावर राहतात.
८. राजा मंत्र्यांसह बुद्धांच्या चरणांना वंदन करतो.\*
९. मामा पुत्रासह पलंगावर झोपतो.
१०. मच्छीमार शेतकच्याच्या घरात भात खातो.
११. राजाचे घोडे बेटावर राहतात.
१२. सत्पुरुष तपस्त्वासाठी दिवा आणतो.
१३. वैद्य आचार्याच्या घरी वस्त्र आणतो.

१४. माकड कुन्याबरोबर खडकावर खेळते.
१५. वस्त्र शेतकयाच्या अंगावर पडते.
१६. शिकारी टोपलीत (अनेक)बाण नेतो.
१७. बुद्धांचे श्रावक विहारामधे जमतात.\*
१८. धोबी मंच्यांचे कपडे धुतो.
१९. पक्षी आकाशात उडतात.
२०. सत्पुरुष नाविकाबरोबर समुद्रातून बाहेर येतो.
२१. देवता बुद्धांच्या शिष्यांवर प्रसन्न होतात.\*
२२. व्यापारी नाविकांसह समुद्र पार करतात.
२३. सत्पुरुष सापापासून कुन्यास रक्षितो.
२४. कावळे पर्वतावरील झाडांवरून उडतात.
२५. डुक्कर मच्छीमाराच्या टोपलीतून मासा ओढते.
२६. सूर्याचा प्रकाश जगातील माणसांवर पडतो.
२७. देवता आकाशातून (त.वि.) जातात.
२८. मुळे रस्त्यावर कुन्यासोबत खेळतात.
२९. दुराचारी माणूस माकडाला झाडावरून ओढतो.
३०. राजाचा दूत घोड्यावरून उतरतो.

## पाठ - ८

### १. अकारान्त पुलिंगी नामाची रूपे (क्रमशः)

**आलपन (संबोधन):-**

एकवचनामध्ये प्रत्यय लागत नाही. ‘आ’ हा प्रत्यय शेवटी लावून अनेकवचन आलपन होते.

| एकवचन                    | अनेकवचन                             |
|--------------------------|-------------------------------------|
| १. नर - (हे माणस)        | नर + आ = नरा (हे माणसांनो)          |
| २. मातुल - (हे मामा)     | मातुल + आ = मातुला (हे मामांनो)     |
| ३. कस्सक - (हे शेतकऱ्या) | कस्सक + आ = कस्सका (हे शेतकऱ्यांनो) |

### २. अकारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे

**नर - पुरुष, माणूस**

| विभक्ति | एकवचन                | अनेकवचन      |
|---------|----------------------|--------------|
| पठमा    | नरो                  | नरा          |
| दुतिया  | नरं                  | नरे          |
| ततिया   | नरेन                 | नरेहि, नरेभि |
| चतुर्थी | नराय, नरस्स          | नरानं        |
| पञ्चमी  | नरा, नरम्हा, नरस्मा  | नरेहि, नरेभि |
| छट्टी   | नरस्स                | नरानं        |
| सप्तमी  | नरे, नरम्हि, नरस्मिं | नरेसु        |
| आलपन    | नर, नरा              | नरा          |

### ३. अकारान्त नपुंसकलिंगी नामाची विभक्ति रूपे

**फल - फळ**

| विभक्ति | एकवचन | अनेकवचन    |
|---------|-------|------------|
| पठमा    | फलं   | फला, फलानि |
| दुतिया  | फलं   | फले, फलानि |
| आलपन    | फल    | फलानि      |

ततिया ते सप्तमी विभक्तिची रूपे अकारान्त पुलिंगी नामासारखीच होतात.

## ४. शब्द संग्रह:-

**अकारान्त नुपुंसकलिंगी नामे :-**

|             |                |
|-------------|----------------|
| नयन/लो चन   | - डोळा         |
| उदक/जल      | - पाणी         |
| अरञ्ज/वन    | - जंगल         |
| पुष्फ/कुसुम | - फूल, पुष्प   |
| गेह/घर      | - घर           |
| आसन         | - आसन          |
| पण्ण        | - पान          |
| तिण         | - तृण, गवत     |
| खीर         | - दूध          |
| नगर         | - नगर          |
| उद्यान      | - उद्यान, बाग  |
| खेत्त       | - शेत          |
| भण्ड        | - सामान, भांडी |
| सील         | - शील          |
| दान         | - दान          |
| रूप         | - वस्तू        |

**क्रियापदे :-**

|             |                            |
|-------------|----------------------------|
| विवरति      | - उघडतो                    |
| नच्यति      | - नाचतो                    |
| निक्षिपति   | - ठेवतो                    |
| उढुहति      | - उठतो                     |
| फुसति       | - स्पर्श करतो              |
| अनुसासति    | - शिकवतो                   |
| ओवदति       | - सल्ला देतो,<br>उपदेश करत |
| संहरति      | - जमा करतो                 |
| आसिज्यति    | - शिंपडतो                  |
| अक्कोसति    | - रागवतो                   |
| भिन्दति     | - तोडतो, फौडतो             |
| पिवति/पिबति | - पितो                     |
| द्वार       | - दार, दरवाजा              |
| वथ्य        | - वस्त्र, कपडे             |

## सराव - ८

## ५. मराठीत भाषांतर करा

१. उपासको पुफ्फानि आहरति |
२. अरञ्जे मिगा वसन्ति, रुक्खेसु मक्कटा चरन्ति |
३. गोणा तिणं खादन्ति |
४. मनुस्सा नयनेहि पस्सन्ति |
५. समणो विहारस्मिं आसने निसीदति |
६. रुक्खम्हा पण्णानि पतन्ति |
७. वाणिजा गामम्हा खीरं नगरं हरन्ति |
८. भूपालो कुमारेन सद्धिं उद्याने चरति |

९. कस्सको खेतम्हि कुद्दालेन आवाटे खणति ।  
 १०. मातुलो पुत्तस्स भण्डानि ददाति ।  
 ११. उपासका समणानं दानं ददन्ति, सीलानि रक्खन्ति ।  
 १२. दारका मितेहि सद्बिं उदकस्मिं कीळन्ति ।  
 १३. कस्सका वाणिजेहि वथानि लभन्ति ।  
 १४. कुमारो उव्यानम्हा मातुलस्स कुसुमानि आहरति ।  
 १५. ब्राह्मणस्स अजा गोणेहि सह वने आहिणडन्ति, तिणानि खादन्ति ।  
 १६. सीहो वनस्मिं रुक्खमूळे निसीदति ।  
 १७. रजका उदकेन आसनानि धोवन्ति ।  
 १८. अमच्चो दूतेन सद्बिं रथेन अरञ्जं पविसति ।  
 १९. याचकस्स पुत्तो उदकेन पण्णानि धोवति ।  
 २०. वाणिजा भण्डानि नगरम्हा गामं आहरन्ति ।  
 २१. तथागतस्स सावका असप्पुरिसानं पुते अनुसासन्ति ।  
 २२. उपासका उदकेन पुफ्फानि आसिञ्चन्ति ।  
 २३. कुमारो पतं भिन्दति, मातुलो अक्कोसति ।  
 २४. लुद्धकस्स पुत्तो मिगस्स कायं हत्थेन फुसति ।  
 २५. गोणो खेते पासाणम्हा उड्हहति ।  
 २६. रजकस्स पुत्तो साटके मञ्चस्मिं निक्रिपति ।  
 २७. सुगतस्स सावको विहारस्स द्वारं विवरति ।  
 २८. वेज्जस्स दारका गेहे नच्चन्ति ।  
 २९. पण्डितो असप्पुरिसं ओवदति ।  
 ३०. चोरो आचरियस्स सकटं पब्बतस्मिं पजहति ।

#### ६. पालीत भाषांतर करा

१. मुले कुञ्चाबरोबर पाण्यात खेळतात.
२. दुराचारी पुरुष झाडावरून पाने तोडतो.
३. राजे मंच्चाबरोबर रथांनी उद्यानाकडे जातात.
४. व्यापारी सामानासोबत शहरातून निघतात.
५. सत्युरुष श्रमणांना दान देतात.
६. बुद्धांचे श्रावक उपासकांसोबत उद्यानात जमतात.\*
७. चोर जंगलातील झाडावरून उतरतो.

८. दुष्ट माणसे झाडावरील माकडांना दगडांनी मारतात.
९. वैद्याचा घोडा बैलाबरोबर रस्त्यावर गवत खातो.
१०. कोल्हे जंगलांमधे राहतात, कुत्रे गावांमधे राहतात.
११. ब्राह्मण विद्वानाच्या घरी आसनांवर बसतात.
१२. नाविक घराची दारे उघडतो.
१३. मच्छीमारांची मुळे मित्रांसह वागेत नाचतात.
१४. व्यापारी टोपल्यांमध्ये मासे ठेवतो.
१५. जगाला सूर्यापासून प्रकाश मिळतो.
१६. नाविक आसनांवरून उठतात.
१७. वैद्याचा मित्र पायाने कुत्र्याच्या अंगाला स्पर्श करतो.
१८. बुद्ध शिष्यांना विहारात सूचना देतात.\*
१९. मुळे उद्यानातून फुले गोळा करतात, उपासक पाण्याने शिंपडतात.
२०. पोपट नाविकाच्या घरातून आकाशात उडतो.
२१. चोर करवतीने झाड कापतो, शेतकरी ओरडतो.
२२. विद्वान मनुष्य व्यापाच्याला सूचना देतो, व्यापारी विद्वानावर प्रसन्न होतो.
२३. राजाचा दूत नाविकाबरोबर समुद्रातून बाहेर येतो.
२४. व्यापारी नगरातून शेतकर्यांसाठी कपडे आणतात.
२५. देव सत्पुरुषांना रक्षितात, सत्पुरुष शीलांचे रक्षण करतात.
२६. सूर्याच्या प्रकाशाने माणसे डोळ्यांनी वस्तू पाहतात.
२७. झाडांवरून पाने रस्त्यावर पडतात.
२८. उपासक पुण्यासनांवर फुले ठेवतात.
२९. बकरे शेतातील खड्यांतून पाणी पितात.
३०. सिंह झाडाखालील खडकावरून उठतात.

## पाठ - ९

### क्रियापदः-

#### १. पूर्वकालिक अव्यय रूपे:-

क्रियापदाच्या मूळ धातूला किंवा विकरण चिन्ह लावून तयार झालेल्या त्याच्या धातुसाधित रूपाला ‘त्वा’ हा प्रत्यय लावून क्रियापदाचे पूर्वकालिक अव्यय रूप तयार होते. कधीकधी ‘इ’ हा स्वर ‘त्वा’ प्रत्ययापूर्वी जोडलेला असतो.

मागे पुढे प्रत्यय नसलेल्या क्रियापदाच्या मूळ रूपाला ‘धातू’ म्हणतात. धातूच्या शेवटी प्रत्यय जोडून धातुसाधित रूप तयार होते.

उदा. पच् हा धातू                    - पच हे धातुसाधित रूप,

खाद् हा धातू                    - खाद हे धातुसाधित रूप,

भुज् हा धातू                    - भुज हे धातुसाधित रूप,

गम् हा धातू                    - गच्छ हे धातुसाधित रूप

‘त्वा’ हा प्रत्यय लावून क्रियापदाचे पूर्वकालिक अव्यय रूप तयार होते.

पच् + इ + त्वा = पचित्वा                    - शिजवून (शिजवल्यानंतर)

खाद् + इ + त्वा = खादित्वा                    - खाऊन (खाल्यानंतर)

गम् + त्वा = गन्त्वा                    - जाऊन (गेल्यानंतर)

हन् + त्वा = हन्त्वा                    - मारून (मारल्यानंतर)

क्रियापदाच्या मूळ धातूला कधीकधी ‘आ’/ ‘अव’ हा उपसर्ग आणि ‘य’ हा प्रत्यय लागतो.

आ + गम् + य = आगम्म (एकरूपता)                    - येऊन (आल्यानंतर)

आ + दा + य = आदाय                    - घेऊन (घेतल्यानंतर)

आ + रुह् + य = आरुह (अदलाबदल)                    - चढून (चढल्यानंतर)

अव + रुह् + य = ओरुह (अदलाबदल)                    - उतरून (उतरल्यानंतर)

#### २. खालील विशेष रूपे लक्षात घ्यावीतः-

भुजिति                    - भुजित्वा, भुत्वा

आगच्छति                    - आगच्छ्वा, आगम्म

हनिति                    - हनित्वा, हन्त्वा

ददाति                    - ददित्वा, दत्वा

|          |   |
|----------|---|
| नहायति   | - नहायित्वा, नहात्वा  |
| तिष्ठति  | - ठत्वा   |
| निक्खमति | - निक्खमित्वा, निक्खम्म   |
| पजहति    | - पजहित्वा, पहाय  |
| पस्सति   | - पस्सित्वा(परंतु पस्सित्वा ऐवजी दृश्य या धातू<br>पासून तयार झालेले 'दिस्वा' हे रूप सामान्यतः वापरले जाते.) |
| उट्ठहति  | - उट्ठहित्वा, उट्टाय  |

### ३. वाक्य प्रयोगाची उदाहरणे:-

१. कस्सको खेतम्हा आगन्त्वा भत्तं भुञ्जति ।  
शेतकरी शेतातून येऊन भात खातो.
२. वानरा रूक्खं आरुङ्घ फलानि खादन्ति ।  
वानरे झाडावर (दु. विभ.) चढून फले खातात.
३. दारको भत्तं याचित्वा रोदति ।  
मुळगा भात मागून रडतो.
४. समणो बुद्धं पस्सित्वा वन्दति ।  
थ्रमण बुद्धांना पाहून वंदन करतो.\*

### सराव - ९

#### ४. मराठीत भाषांतर करा

१. उपासको विहारं गन्त्वा समणानं दानं ददाति ।
२. सावको आसनम्हि निसीदित्वा पादे धोवति ।
३. दारका पुष्फानि संहरित्वा मातुलस्स दत्वा हसन्ति।
४. याचका उत्थानम्हा आगम्म कस्सकस्मा ओदनं याचन्ति ।
५. लुद्धको हत्येन सरे आदाय अरञ्जं पविसति ।
६. कुमारा कुक्कुरेन सद्धिं कीछित्वा समुद्रं गन्त्वा नहायन्ति ।
७. वाणिजो पासाणस्मि ठत्वा कुद्धालेन सप्पं पहरति ।
८. सपुरिसो याचकस्स पुत्ते पक्कोसित्वा वथानि ददाति ।
९. दारको आवाटम्हि पतित्वा रोदति ।
१०. भूपालो पासादम्हा निक्खमित्वा अमच्येन सद्धिं भासति ।
११. सुनखो उदकं पिवित्वा गेहम्हा निक्खम्म मरगे सयति ।

१२. समणा भूपालस्स उद्याने सन्निपतित्वा धम्मं भासन्ति ।  
 १३. पुत्तो नहात्वा भत्तं भुत्वा मज्जं आरुह्य सयति ।  
 १४. वाणिजा दीपम्हा नगरं आगम्म आचरियस्स गेहे वसन्ति ।  
 १५. रजको वथानि धोवित्वा पुत्तं पक्कोसति ।  
 १६. वानरा रुक्खेहि ओरुह्य उद्याने आहिण्डन्ति ।  
 १७. मिगा वनम्हि आहिण्डित्वा पण्णानि खादन्ति ।  
 १८. कुमारो नयनानि धोवित्वा सुरियं पस्सति ।  
 १९. नाविकस्स मिता नगरस्मा भण्डानि आदाय गामं आगच्छन्ति ।  
 २०. दारको खीरं पिवित्वा गेहम्हा निकखम्म हसति ।  
 २१. सप्पुरिसा दानानि दत्वा सीलानि रक्खित्वा सगगं गच्छन्ति ।  
 २२. सूकरो उदकम्हा उत्तरित्वा आवाटं ओरुह्य सयति ।  
 २३. तापसो तथागतस्स सावकं दिस्वा वन्दित्वा पञ्चं पुच्छति ।  
 २४. असप्पुरिसो याचकस्स पत्तं भिन्दित्वा अक्कोसित्वा गेहं गच्छति ।  
 २५. सकुणा गामे रुक्खेहि उप्पतित्वा अरञ्जं ओतरन्ति ।  
 २६. पण्डितो आसनम्हा उद्धुहित्वा तापसेन सङ्घं भासति ।  
 २७. दारको गेहा निकखम्म मातुलं पक्कोसित्वा गेहं पविसति ।  
 २८. देवा सप्पुरिसेसु पसीदित्वा ते रक्खन्ति ।  
 २९. कुमारस्स सहायका पासादं आरुह्य आसनेसु निसीदन्ति ।  
 ३०. गोणा खेतम्हि आहिण्डित्वा तिणं खादित्वा सयन्ति ।

#### ५. पालीत भाषांतर करा

१. शेतकरी घरातून निघून शेतात प्रवेश करतो.
२. बुद्ध धम्मप्रवचन देऊन विहारात प्रवेश करतात.
३. राजा बुद्धांवर प्रसन्न होऊन राजवाडा त्यागून विहाराकडे जातो.\*
४. मुलगा जिन्यावरून उतरून हसतो.
५. सापाला दगडाने मारून मुलगा घरात पळतो.
६. मनुष्य जंगलात जाऊन झाड चढून फळे खातो.
७. पाण्यात कपडे धुवून धोबी ते घरी आणतो.
८. सिंह बकरा मारून खडकावर बसून खातो.
९. वैद्य व्यापाच्यांच्या वस्तू पाहून नगरातून निघतो.
१०. घर फोडून चोर जंगलाकडे पळतात.

११. शेतात हिंडून डुक्कर खड्हयात पडते.
१२. मच्छीमार शेतकऱ्यांसाठी समुद्रातून मासे आणतो.
१३. शिक्षक नगराहून वस्तू घेऊन घरी येतो.
१४. शिकारी डोंगरावर उभा राहून बाणांनी पक्ष्यांना मारतो.
१५. बैल बागेत गवत खाऊन रस्त्यावर झोपतात.
१६. राजा रथातून उतरून शेतकऱ्यांबरोबर बोलतो.
१७. मनुष्य घर त्यागून विहारात प्रवेश करतो.
१८. मच्छीमार व्यापाच्यांना मासे देवून लाभ मिळवितात.
१९. उपासक श्रमणास प्रश्न विचारून आसनावर बसतो.
२०. बुद्धांचे शिष्य दुष्ट पुरुषांना पाहून अनुशासित करतात.\*
२१. ब्राह्मण मुलास रागावून मारतो.
२२. देवता बुद्धांना प्रश्न विचारून आनंदीत होतात.\*
२३. कुत्रा शिक्षकाच्या पायास चावून घराकडे पळतो.
२४. माकड बकऱ्यासोबत रस्त्यावर खेळून झाडावर चढते.
२५. तपस्वी वनातून येऊन सत्पुरुषाकडून वस्त्र मिळवितो.
२६. पाणी पिऊन मुलगा पात्र फोडतो.
२७. शेतकऱ्यांच्या मुलांना उपदेश देवून, आसनांवरून उठून श्रमण विहाराकडे जातात.
२८. नाविक समुद्र ओलांडून बेटावर जातो.
२९. मुलगा मामांना बोलावून घरात नाचतो.
३०. शेतकरी कपडे धुवून, आंघोळ करून पाण्याबाहेर येतो.

## पाठ - १०

### १. क्रियापदः-

#### निमित्तार्थक अव्यय रूपेः-

‘तुं’ हा प्रत्यय क्रियापदाच्या मूळ धातूस किंवा धातुसाधित रूपास (कधी कधी ‘इ’ स्वरासह) लावून क्रियापदाचे निमित्तार्थक अव्यय रूप बनते.

|                |                   |                   |
|----------------|-------------------|-------------------|
| पच् + इ + तुं  | = पचितुं          | - शिजवण्यासाठी    |
| खाद् + इ + तुं | = खादितुं         | - खाण्यासाठी      |
| गम् + तुं      | = गन्तुं          | - जाण्यासाठी      |
| दा + तुं       | = दातुं           | - देण्यासाठी      |
| ठा + तुं       | = ठातुं           | - उभे राहण्यासाठी |
| पा + तुं       | = पातुं / पिवितुं | - पिण्यासाठी      |

### २. वाक्य प्रयोगाची उदाहरणे:-

१. कस्सको खेतं कसितुं इच्छति ।  
शेतकरी शेत नांगरण्याची इच्छा करतो.
२. दारको फलानि खादितुं रुक्खं आरुहति ।  
मुलगा फले खाण्यासाठी झाडावर चढतो.
३. मनुस्सा समणेहि पञ्चे पुच्छितुं विहारं गच्छन्ति ।  
माणसे श्रमणांना प्रश्न विचारण्यासाठी विहाराकडे जातात.
४. कुमारा कीळितुं मित्रेहि सह समुद्रं गच्छन्ति ।  
मुले खेळण्यासाठी मित्रांसह समुद्राकडे जातात.

## सराव - १०

### ३. मराठीत भाषांतर करा

१. कुमारा वनम्हि मित्रेहि सह कीळित्वा भतं भुजितुं गेहं धावन्ति ।
२. मिगा तिं खादित्वा उदकं पातुं पब्बतम्हा उय्यानं आगच्छन्ति ।
३. वाणिजस्स पुतो भण्डानि आहरितुं रथेन नगरं गच्छति ।
४. याचको मातुलस्स कुद्दालेन आवाटं खणितुं इच्छति ।
५. अमच्चा भूपालं पस्सितुं पासादम्हि सन्निपतन्ति ।

६. गोणा उद्याने आहिण्डत्वा कस्सकस्स खेतं आगच्छन्ति ।  
 ७. उपासका समणानं दानं दातुं विहारं पविसन्ति ।  
 ८. रथेन नगरं गन्तुं पुरिसो गेहस्मा निक्खमति ।  
 ९. ब्राह्मणो वेजजेन सद्भिं नहायितुं उदकं ओतरति ।  
 १०. चोरो अमच्चस्स गेहं पविसितुं उद्याने आहिण्डति ।  
 ११. सीहो पब्बतम्हि सयित्वा उद्वाय मिंगं हन्तुं ओरुहति ।  
 १२. उदकं ओतरित्वा वथानि धोवितुं रजको पुत्तं पक्कोसति ।  
 १३. तथागतं पस्सित्वा वन्दितुं उपासको विहारं पविसति ।  
 १४. खेतं कसितुं कस्सको कुदालं आदाय गेहा निक्खमति ।  
 १५. सरेहि मिगे विज्ञितुं लुद्धका सुनखेहि सह अरञ्जं पविसन्ति ।  
 १६. नरा गामम्हा निक्खमित्वा नगरे वसितुं इच्छन्ति ।  
 १७. सकुणे पस्सितुं अमच्चा कुमारेहि सह पब्बतं आरुहन्ति ।  
 १८. पब्बतस्मा रुक्खं आकहितुं वाणिजेन सह कस्सको गच्छति ।  
 १९. फलानि खादितुं मक्कटा रुक्खेसु चरन्ति ।  
 २०. पण्डितो सुगतस्स सावकेहि सद्भिं भासितुं इच्छति ।  
 २१. समुदं तरित्वा दीपं गन्त्वा वथानि आहरितुं वाणिजा इच्छन्ति ।  
 २२. पुफ्फानि संहरित्वा उदकेन आसिज्जितुं उपासको कुमारे ओवदति ।  
 २३. अजस्स कायं हथेहि फुसितुं दारको इच्छति ।  
 २४. ब्राह्मणस्स गेहे आसनेसु निसीदितुं रजकस्स पुत्ता इच्छन्ति ।  
 २५. पातुं उदकं याचित्वा दारको रोदति ।

#### ४. पालीत भाषांतर करा

१. बकरे पाने खावून पाणी पिण्यासाठी बागेत हिंडतात.  
 बकरे पाने खाण्यासाठी आणि पाणी पिण्यासाठी बागेत हिंडतात.
२. दुष्ट माणूस कुच्यास पायाने मारण्याची इच्छा करतो.
३. मित्र कुच्यांबरोबर खेळण्यासाठी बागेत जातात.
४. उपासक घरी येऊन मुलांना सूचना देण्याची इच्छा करतो.
५. देव विहारास जाऊन बुद्धांबरोबर बोलू इच्छितो.\*
६. सद्गुणी माणूस शील सांभाळून दान देण्यासाठी इच्छा करतो.
७. डुकरे जंगलात प्रवेश करण्यासाठी गावातून धावतात.
८. शेतकरी शेतात खड्डे खणण्यासाठी वाण्याकडून कुदळ मागतो.

९. बुद्धांना वंदन करण्यासाठी उपासक विहारात एकत्र जमतात.\*
१०. मामा कोळ्यास बोलवण्यासाठी घरातून बाहेर येतो.
११. शेतकरी बैल मिळवण्याची इच्छा करतात, वाणी घोडे मिळवण्याची इच्छा करतात.
१२. राजा प्रासाद सोडण्याची इच्छा करतो.
१३. माणसे टोपल्या घेऊन मुलांसाठी फळे गोळा करण्यासाठी वनाकडे जातात.
१४. शेतकरी बैलांसाठी गवत कापण्यासाठी वनात हिंडतात.
१५. माणसे मुलांसह शहरातील घरांत राहण्याची इच्छा करतात.
१६. खडकावर उभे राहून, मुलगा झाडांवरील फुले पाहतो.
१७. आचार्यांकिंवृन वस्त्र प्राप्त करून वैद्य आनंदित होतो.
१८. शिकारी जंगलातून बकरा ओढण्यासाठी मित्राला बोलवितो.
१९. नाविक व्यापाच्यांना समुद्र ओलांडण्यासाठी बोलवितो.
२०. आसनावरून उठून सत्पुरुष श्रमणासोबत बोलण्याची इच्छा करतो
२१. मुळे पाण्यात उतरून आंघोळ करण्याची इच्छा करतात.
२२. जंगलात जावून हरणे वेधण्यासाठी मंत्री घोडचावर स्वार होतो.
२३. कुमार मामाच्या मित्रांसाठी भात शिजवण्याची इच्छा करतो.
२४. कोळ्हे शेतकर्यांच्या शेतात शिरण्याकरिता जंगलातून निघतात.
२५. सूर्यप्रकाशाद्वारे माणसे डोळ्यांनी वस्तू पाहण्याची इच्छा करतात.

## पाठ - ११

### १. शब्द संग्रह:-

#### अकारान्त नपुंसकलिंगी नामे:-

|                |                      |
|----------------|----------------------|
| आपण            | - दुकान, बाजार       |
| पुऱ्ज          | - पुण्य              |
| पाप            | - पाप, दुष्कृत्य     |
| कर्म           | - कर्म, कृत्य        |
| कुसल           | - कुशल, चांगले       |
| अकुसल          | - वाईट               |
| धन             | - धन, संपत्ती        |
| धर्ज           | - धान्य              |
| बीज            | - बी, बियाणे         |
| दुस्स          | - कपडा               |
| चीवर           | - चीवर               |
| मूळ            | - धन                 |
| रुक्खमूळ       | - वृक्षमूळ, झाडाखाली |
| तुण्ड          | - चौच                |
| वेतन           | - पगार               |
| पदुम           | - कमळ                |
| गीत            | - गीत, गाणे          |
| सुवर्णा/हिरऱ्ज | - सोने               |
| सच्च           | - सत्य               |
| पानीय          | - पिण्याचे पाणी      |
| चित्त          | - चित्त, मन          |

#### क्रियापदे:-

|           |                                |
|-----------|--------------------------------|
| परियेसति  | - शोधतो                        |
| आरभति     | - सुरुवात करतो                 |
| उस्सहति   | - प्रयत्न करतो                 |
| उपसङ्घमति | - जवळ जातो                     |
| अधिगच्छति | - समजतो, प्राप्त करतो, मिळवितो |
| गायति     | - गातो                         |
| आमसति     | - थोपटतो, स्पर्श करतो          |
| भायति     | - भितो, घावरतो                 |
| चवति      | - मरतो                         |
| उप्पज्जति | - जन्मतो, उत्पन्न होतो         |
| खिपति     | - फेकतो                        |
| वपति      | - पेरतो                        |
| आकङ्क्षति | - आशा करतो                     |
| सिब्बति   | - (कपडा इ.) शिवतो              |

### २. वर्तमान काळवाचक धातुविशेषण रूप:-

क्रियापदास ‘न्त’/‘मान’ हे प्रत्यय लावून क्रियापदाचे वर्तमान काळवाचक धातुविशेषण रूप होते. असे रूप हे नामाच्या विशेषणासारखे काम करते आणि त्याचे लिंग, वचन व विभक्ति प्रत्यय हे नामाच्या लिंग, वचन आणि विभक्ति प्रत्ययांप्रमाणे असतात. पुल्लिंग व नपुंसकलिंगामध्ये त्यांची विभक्ति रूपे अकारान्ती नामांप्रमाणे तयार होतात.

(या पाठापर्यन्त स्त्रीलिंगी नामांचा परिचय आलेला नाही, वर्तमान काळवाचक धातुविशेषणाची स्त्रीलिंगी रूपे पाठ २१ मध्ये सांगितली जातील.)

|                   |                       |                         |
|-------------------|-----------------------|-------------------------|
| पच + न्त / मान    | = पचन्त / पचमान       | - शिजवत असलेला/शिजवणारा |
| गच्छ + न्त / मान  | = गच्छन्त / गच्छमान   | - जात असलेला/जाणारा     |
| भुज + न्त / मान   | = भुजन्त / भुजमान     | - खात असलेला/खाणारा     |
| तिट्ठ + न्त / मान | = तिट्ठन्त / तिट्ठमान | - उभे असलेला            |
| विहर + न्त / मान  | = विहरन्त / विहरमान   | - राहत असलेला/राहणारा   |

### ३. वाक्य प्रयोगाची उदाहरणे:-

#### एकवचन

१. भत्तं पचन्तो/पचमानो पुरिसो हसति | (पठमा)  
भात शिजवत असलेला माणूस हसतो.
२. वेज्जो भत्तं पचन्तं/पचमानं पुरिसं पक्कोसति | (दुतिया)  
भात शिजवित असलेल्या माणसाला वैद्य बोलावतो.
३. वेज्जो भत्तं पचन्तेन/पचमानेन पुरिसेन सह भासति |(ततिया)  
भात शिजवणाऱ्या माणसासोबत वैद्य बोलतो.

#### अनेकवचन

१. भत्तं पचन्ता/पचमाना पुरिसा हसन्ति | (पठमा)  
भात शिजवत असलेली माणसे हसतात.
  २. वेज्जो भत्तं पचन्ते/पचमाने पुरिसे पक्कोसति | (दुतिया)  
भात शिजवित असलेल्या माणसांना वैद्य बोलावतात.
  ३. वेज्जो भत्तं पचन्तेहि/पचमानेहि पुरिसेहि सह भासति|(ततिया)  
भात शिजवणाऱ्या माणसांसोबत वैद्य बोलतो.
- वरील प्रमाणे, वर्तमान काळवाचक धातुविशेषण रूप नेहमी आपल्या विशेषणाच्या विभक्तीतच असते.

### सराव - ११

#### ४. मराठीत भाषांतर करा

१. पानीयं याचित्वा रोदन्तो दारको मञ्चम्हा पतति |
२. वथ्यानि लभितुं इच्छन्तो वाणिजो आपणं गच्छति |

३. उपासको पदुमानि आदाय विहारं गच्छमानो बुद्धं दिस्वा पसीदति ।  
 ४. सकुणो तुण्डेन फलं हरन्तो रुक्खस्मा उप्पतति ।  
 ५. चीवरं परियेसन्तस्स समणस्स आचरियो चीवरं ददाति ।  
 ६. अरञ्जे आहिण्डन्तो लुद्को धावन्तं मिंगं पस्सित्वा सरेन विज्ञति ।  
 ७. उय्याने आहिण्डमानम्हा कुमारम्हा ब्राह्मणो पदुमानि याचति ।  
 ८. रथेन गच्छमानेहि अमच्चेहि सह आचरियो हसति ।  
 ९. दानं ददमाना सीलानि रक्खमाना मनुस्सा सग्गे उप्पजन्ति ।  
 १०. धञ्जं आकङ्क्षन्तस्स पुरिसस्स धनं दातुं वाणिजो इच्छति ।  
 ११. गोणे हनन्ता रुक्खे छिन्दता असप्पुरिसा धनं संहरितुं उस्सहन्ति ।  
 १२. विहारं उपसङ्घमानो बुद्धो धम्मं भासमाने सावके पस्सति ।  
 १३. रुक्खमूले निसीदित्वा गीतानि गायन्ता कुमारा नच्चितुं आरभन्ति ।  
 १४. सुवण्णं लभितुं उस्सहन्ता मनुस्सा पब्बतस्मिं आवाटे खणन्ति ।  
 १५. उदकं पातुं इच्छन्तो सीहो उदकं परियेसमानो वनम्हि चरति ।  
 १६. वेतनं लभितुं आकङ्क्षमानो नरो रजकाय दुस्सानि धोवति ।  
 १७. समणेहि भासन्ता उपासका सच्चं अधिगन्तुं उस्सहन्ति ।  
 १८. मग्गे सयन्तं सुनखं उदकेन सिज्जित्वा दारको हसति ।  
 १९. सीलं रक्खन्ता सप्पुरिसा मनुस्सलोका चवित्वा देवलोके उप्पज्जन्ति ।  
 २०. धनं संहरितुं उस्सहन्तो वाणिजो समुदं तरित्वा दीपं गन्तुं आरभति ।  
 २१. गोणे परियेसमानो वने आहिण्डन्तो कस्सको सीहं दिस्वा भायति ।  
 २२. रुक्खेसु निसीदित्वा फलानि भुज्जमाना कुमारा गीतं गायन्ति ।  
 २३. चितं पसीदित्वा धम्मं अधिगन्तुं उस्सहन्ता नरा सग्गे उप्पज्जन्ति ।  
 २४. तुण्डेन पिटकम्हा मच्छं आकङ्क्षितुं इच्छन्तो काको सुनखम्हा भायति ।  
 २५. खेतं कसित्वा बीजानि वपन्तो कस्सको धञ्जं लभितुं आकङ्क्षति ।  
 २६. सुरियस्स आलोकेन लोचनेहि रूपानि पस्सन्ता मनुस्सा लोके जीवन्ति ।  
 २७. रुक्खमूले निसीदित्वा चीवरं सिब्बन्तेन समणेन सद्धिं उपासको भासति ।  
 २८. रुक्खमूले सयन्तस्स याचकस्स काये पण्णानि पतन्ति ।  
 २९. वाणिजस्स मूलं दत्वा अस्से लभितुं अमच्चो उस्सहति ।  
 ३०. खीरं पिवित्वा हसमानो दारको पत्तं मज्जस्मि खिपति ।
- ५. पालीत भाषांतर करा**
१. कपडे धुवत असणारा मनुष्य रस्त्यावर जात असणाऱ्या मुलासोबत बोलतो.

२. ब्राह्मण पाणी पिण्यासाठी जंगलातून येत असणाऱ्या हरणाला पाहतो.
३. बागेत बकरे झाडावरून पडत असणारी पाने खातात.
४. दुष्ट माणसे हरणे मारत असलेले शिकारी पाहण्यासाठी इच्छितात.
५. शेतकरी शेतात बिया खात असणाऱ्या पक्ष्यांना पाहतो.
६. शहरात प्रवेश करत असणारे थ्रमण विहारात राहत असणाऱ्या बुद्धांना वंदन करण्यासाठी इच्छितात.\*
७. जिन्यावर उभा असलेला मुळगा झाडावर बसलेली माकडे पाहतो.
८. मुळे पाण्यात फिरत असणाऱ्या माशांना भात देतात.
९. समुद्र ओलांडण्याची इच्छ करत असणारा नाविक राजाकडून पैसे मागतो.
१०. माणसे डोळ्यांनी समुद्रावर पडत असलेल्या चंद्राच्या प्रकाशाला पाहतात.
११. उपासक विहारात राहत असलेल्या थ्रमणांना चीवर देण्यासाठी प्रयत्न करतात.
१२. पुण्याची इच्छा करत असणारे सत्पुरुष थ्रमणांना दान देतात, शील पाळतात.
१३. माणूस जंगलात झाडांवरून पडत असणाऱ्या पानांवर चालतो.
१४. मामा फुले शोधत असलेल्या मुलासाठी कमळ देतो.
१५. भिकाच्यास थोडेसे धान्य देऊन मच्छिमार घरात प्रवेश करतो.
१६. मंत्री शेत नांगरत असलेल्या शेतकर्यांना बियाणे देतो.
१७. कुत्रा (त्याच्या) शरीरास स्पर्श करत असणाऱ्या माणसाच्या हाताला चावण्याचा प्रयत्न करतो.
१८. बुद्धांचे शिष्य रस्त्यावर रडत असलेल्या मुलाला विचारतात.\*
१९. मामाचा मित्र झाडाखाली बसून गाणी गाणाऱ्या मुलांना बोलावतो.
२०. सत्पुरुष घरांकडे येत असणाऱ्या थ्रमणांना भात देतात.
२१. स्वर्गात जन्म घेण्याची इच्छा करत असणारे सज्जन लोक शील पाळतात.
२२. गावाकडे येत असलेल्या कोळ्याला पाहून शेतकरी त्याला दगडाने मारण्यासाठी प्रयत्न करतो.
२३. सत्य बोलत असणारे उपासक धर्म समजण्याचा प्रयत्न करतात.
२४. पाण्याने पात्र धुवून, तपस्वी पिण्याचे पाणी शोधतो.
२५. शील पालन करणारे विद्वान सत्य प्राप्त करण्यासाठी सुरुवात करतात.

## पाठ - १२

### १. क्रियापदाची रूपेः-

#### वर्तमानकाळ कर्तरी प्रयोग

आतापर्यंत वर्तमानकाळ कर्तरी प्रयोग, तृतीय पुरुषी एकवचन व अनेकवचन यांचा परिचय करून देण्यात आला. या पाठामध्ये क्रियापदाची सर्व रूपे देत आहोत.

| एकवचन        | अनेकवचन                  |
|--------------|--------------------------|
| पठम पुरिस    | (सो) पचति = तो शिजवतो    |
| मङ्गीम पुरिस | (त्वं) पचसि = तू शिजवतोस |
| उत्तम पुरिस  | (अहं) पचामि = मी शिजवतो  |

### २. वाक्य प्रयोग

#### एकवचन

- |                    |                          |
|--------------------|--------------------------|
| १. सो भत्तं पचति   | = तो भात शिजवतो          |
| २. त्वं भत्तं पचसि | = तू भात शिजवतोस/शिजवतेस |
| ३. अहं भत्तं पचामि | = मी भात शिजवतो/शिजवते   |

#### अनेकवचन

- |                     |                     |
|---------------------|---------------------|
| १. ते भत्तं पचन्ति  | = ते भात शिजवतात    |
| २. तुम्हे भत्तं पचथ | = तुम्ही भात शिजवता |
| ३. मयं भत्तं पचाम   | = आम्ही भात शिजवतो  |

## सराव - १२

### ३. मराठीत भाषांतर करा

१. त्वं मित्तेहि सद्दिं रथेन आपणम्हा भण्डानि आहरसि |
२. अहं उदकम्हा पदुमानि आहरित्वा वाणिजस्स ददामि |
३. तुम्हे समणानं दातुं चीवरानि परियेसथ |
४. मयं सग्गे उप्पजितुं आकङ्क्षमाना सीलानि रक्खाम |
५. ते धम्मं अधिगन्तुं उस्सहन्तानं समणानं दानं ददन्ति |
६. सो अरञ्जम्हि उप्पतन्ते सकुणे पस्सितुं पब्बतं आरुहति |

७. मयं सुगतस्स सावके वन्दितुं विहारस्मि सन्निपताम् ।  
 ८. आगच्छन्तं तापसं दिस्वा सो भत्तं आहरितुं गेहं पविसति ।  
 ९. अहं उदकं ओरुह ब्राह्मणस्स दुस्सानि धोवामि ।  
 १०. त्वं गेहस्स द्वारं विवरित्वा पानीयं पत्तम्हा आदाय पिवसि ।  
 ११. अहं हिरञ्जं परियेसन्तो दीपस्मि आवाटे खणामि ।  
 १२. फलानि खादन्ता तुम्हे रुक्खेहि ओरुहथ ।  
 १३. पासाणस्मि ठत्वा त्वं चन्दं पस्सितुं उस्सहसि ।  
 १४. मयं मनुस्स लोकम्हा चवित्वा सग्गे उप्पज्जितुं आकङ्घाम् ।  
 १५. तुम्हे अरञ्जे वसन्ते मिगे सरेहि विज्ञितुं इच्छथ ।  
 १६. मयं उद्याने चरन्ता सुनखेहि सद्विं कीलन्ते दारके पस्साम् ।  
 १७. त्वं रुक्खमूले निसीदित्वा आचरियस्स दातुं वथं सिब्बसि ।  
 १८. मयं पुञ्जं इच्छन्ता समणानं दानं ददाम ।  
 १९. तुम्हे सच्चं अधिगन्तुं आरभथ ।  
 २०. त्वं गीतं गायन्तो रोदन्तं दारकं रक्खसि ।  
 २१. मयं हसन्तेहि कुमारेहि सह उद्याने नच्चाम ।  
 २२. सो पानीयं पिवित्वा पत्तं भिन्दित्वा मातुलम्हा भायति ।  
 २३. पासादं उपसङ्कमन्तं समणं दिस्वा भूपालस्स चित्तं पसीदति ।  
 २४. मयं अरञ्जं पविसित्वा अजानं पण्णानि संहराम ।  
 २५. खेतं रक्खन्तो सो आवाटे खणन्ते वराहे दिस्वा पासाणेहि पहरति ।

#### ४. पालीत भाषांतर करा

१. कुत्र्याच्या शरीराला स्पर्श करत असलेल्या मुलाला मी बोलावतो.
२. विहारात जमलेल्या श्रमणांसह बोलत असणारे आम्ही, सत्य शिकण्याचा प्रयत्न करतो.
३. बागेत बसलेले तुम्ही, मित्रांसह फळे खाता.
४. तू आसनावर बसून दूध पितोस.
५. आम्ही वनात जाऊन, फिरत असलेली हरणे पाहण्यासाठी घरातून निघतो.
६. मी धर्म जाणण्याची इच्छा करतो.
७. डोंगरावर उभे राहून, आम्ही समुद्रावर पडत असलेला चंद्राचा प्रकाश पाहतो.
८. मी शेतकऱ्याची गाडी रस्त्यापासून खेचतो.
९. तुम्ही आसनांवर बसता, मी घरून पिण्याचे पाणी आणतो.

१०. बिया खात असणाऱ्या पक्ष्यांना पाहत असलेले आम्ही शेतांमधे फिरतो.
११. मी डुकरे मारत असलेल्या दुष्ट पुरुषाला सल्ला देतो.
१२. घराजवळ येत असलेल्या सापाला पाहून तू घावरतोस.
१३. वनातून निघत असलेल्या माणसांना मी प्रश्न विचारतो.
१४. रडत असलेल्या मुलाला पाहून, आम्ही रस्त्यावरून जात असलेल्या वैद्यास बोलावतो.
१५. शीलांचे रक्षण करणारा, श्रमणांना दान देणारा मी मुलांसह घरी राहतो.
१६. पापकर्माना (करण्यासाठी) घावरत असणारे सत्युरुष स्वर्गात जन्म घेतात.
१७. लाभ मिळविण्याची इच्छा करत असणारे आम्ही, शहरातून वस्तू आणतो.
१८. झाडाखाली उभे राहून आम्ही फुले पाण्याने शिंपडतो.
१९. मी पाण्याने पात्रे धुवून वैद्याला देतो.
२०. सत्याला शोधात असणारा मी, घर सोडून विहारात प्रवेश करतो.
२१. श्रमणांना पाहण्याची इच्छा करत असणारे, तुम्ही बागेत जमा होता.
२२. मी कावळ्याच्या चोचीतून पडत असलेले फळ पाहतो.
२३. तू समुद्र ओलांडून बेटावरून घोडा आणतोस.
२४. मी बाजारातून दिवा आणण्यासाठी घरातून निघतो.
२५. मी टोपली घेऊन धान्य जमविण्यासाठी शेताकडे जातो.

## पाठ - १३

### १. क्रियापदाची रूपेः-

#### वर्तमानकाळ कर्तरी प्रयोग (भाग - दुसरा)

ज्या क्रियापदाच्या शेवटी 'ए' असतो ती क्रियापदे आतापर्यंत पाहिलेल्या क्रियापदांपेक्षा थोडे वेगळे रूप घेतात. त्यांची दोन धातुसाधित रूपे असू शकतात; एक शेवटी 'ए'कार असलेले तर दुसरे 'अय' हा प्रत्यय असलेले.

जसे 'चोरेति' आणि 'चोरयति'.

#### धातुसाधित - चोरे - चोरणे

|             | एकवचन         | अनेकवचन        |
|-------------|---------------|----------------|
| पठम पु.     | (सो) चोरेति   | (ते) चोरेन्ति  |
| माज्जिम पु. | (त्वं) चोरेसि | (तुम्हे) चोरेथ |
| उत्तम पु.   | (अहं) चोरेमि  | (मयं) चोरेम    |

#### धातुसाधित - चोरय - चोरणे

|             | एकवचन         | अनेकवचन        |
|-------------|---------------|----------------|
| पठम पु.     | (सो) चोरयति   | (ते) चोरयन्ति  |
| माज्जिम पु. | (त्वं) चोरयसि | (तुम्हे) चोरयथ |
| उत्तम पु.   | (अहं) चोरयामि | (मयं) चोरयाम   |

### २. वरील प्रमाणे चालणारी काही क्रियापदे येथे दिली आहेत.

|          |                               |             |                              |
|----------|-------------------------------|-------------|------------------------------|
| देसेति   | - उपदेश करतो                  | मन्त्रेति   | - चर्चितो, चर्चा करतो,       |
| चिन्तेति | - चिंतितो, विचार करतो         | आमन्त्रेति  | - (उद्देशून) बोलतो, संबोधतो  |
| पूजेति   | - पूजतो, अर्पितो,<br>आदर करतो | निमन्त्रेति | - निमंत्रण देतो              |
| पूरेति   | - भरतो                        | ओलेकेति     | - (च्या कडे) बघतो            |
| पीळेति   | - दमन करतो, त्रास देतो        | जालेति      | - पेटवतो, जाळतो              |
| कथेति    | - सांगतो                      | छादेति      | - आच्छादितो, लपवतो,<br>झाकतो |
| उड्डेति  | - उडतो                        | मारेति      | - मारतो                      |
| उदेति    | - (सूर्य किंवा चंद्र) उगवतो   | नेति        | - नेतो, घेऊन जातो            |
| रोपेति   | - रोपण करतो                   | परिवर्जेति  | - परिवर्जित करतो, टाळतो      |

|        |                                      |              |                 |
|--------|--------------------------------------|--------------|-----------------|
| आनेति  | - आणतो                               | ओभासेति      | - प्रकाशित करतो |
| ठपेति  | - ठेवतो                              | देति (ददाति) | - देतो          |
| पातेति | - पाडतो मंत्रणा करतो                 |              |                 |
| पालेति | - राज्य करतो,<br>प्रशासतो, पालन करतो |              |                 |

३. टीप: वरील क्रियापदांची पूर्वकालिक आणि निमित्तार्थक रूपे तयार करताना शेवटचा 'ए' तसाच राहतो.

पूर्वकालिक रूपे - देसेत्वा, चिन्तेत्वा, पूजेत्वा, पूरेत्वा इ. निमित्तार्थक रूपे - देसेतुं, चिन्तेतुं, पूजेतुं, पूरेतुं इत्यादी.

४. ज्या क्रियापदांचा शेवट 'ना' किंवा 'णा' ने होतो त्यांची रूपे खालील प्रमाणे होतात.

### धातुसाधित - किणा - विकत घेणे

| एकवचन      | अनेकवचन       |
|------------|---------------|
| पठम पु.    | (सो) किणाति   |
| मङ्गिम पु. | (त्वं) किणासि |
| उत्तम पु.  | (अहं) किणामि  |

५. वरील प्रमाणे चालणारी काही क्रियापदे खाली दिली आहेत.

|            |                    |                  |                    |
|------------|--------------------|------------------|--------------------|
| विविक्णाति | - विकतो            | जानाति           | - जाणतो            |
| सुणाति     | - ऐकतो             | जिनाति           | - जिंकतो           |
| मिनाति     | - मोजतो            | पापुणाति/पण्णोति | - पोहचतो           |
| गण्हाति    | - घेतो, ग्रहण करतो | ओचिनाति          | - वेचतो, गोळा करतो |
| उगगण्हाति  | - शिकतो            | पहिणाति          | - पाठवतो           |

टीप: कृपया येथे लक्षात घ्यावे, की क्रियापदाचे वर्तमानकाळाच्या शेवटी लागणारे प्रत्यय तसेच राहतात. फक्त मूळ धातू आणि प्रत्यय यांच्यामध्ये लागलेले विकरण चिन्ह बदल दाखवते.

#### ६. खालील रूपांकडे विशेष लक्ष द्यावे.

| वर्तमानकाळ       | पूर्वकालिक        | निमित्तार्थक       |
|------------------|-------------------|--------------------|
| जानाति           | जत्वा/जानित्वा    | जातुं              |
| सुणाति           | सुत्वा/सुणित्वा   | सोतुं/सुणितुं      |
| पापुणाति/पप्पोति | पत्वा/पापुणित्वा  | पापुणितुं/पप्पोतुं |
| गण्हाति          | गहेत्वा/गण्हित्वा | गहेतुं/गण्हितुं    |

७. ‘भवति’/‘होति’ (होणे) आणि करोति (करणे) ही दोन क्रियापदे भाषेमध्ये नेहमी वापरली जातात. त्यांची पूर्वकालिक आणि निमित्तार्थक रूपे येथे दिली आहेत.

पूर्वकालिक : - भवित्वा/हुत्वा, कत्वा

निमित्तार्थक : - भवितुं/होतुं, कातुं

‘अस्’ धातूपासून झालेला ‘अथि’ (आहे) आणि ‘कृ’ धातूपासून झालेला ‘करोति’ (करतो) ही नेहमी येणारी विशेष क्रियापदे आहेत. त्यांची रूपे खालीलप्रमाणे असतात.

| एकवचन      | अनेकवचन     |
|------------|-------------|
| पठम पु.    | अथि         |
| मञ्जिम पु. | असि         |
| उत्तम पु.  | अस्मि/अम्हि |
| पठम पु.    | करोति       |
| मञ्जिम पु. | करोसि       |
| उत्तम पु.  | करोमि       |

#### सराव - १३

#### ८. मराठीत भाषांतर करा

१. बुद्धो विहारस्मि सन्निपतन्तानं मनुसानं धर्मं देसेति ।
२. बुद्धं पूजेतुं चिन्तेन्तो उपासको पुष्टानि ओचिनाति ।
३. ते पते पूरेन्ता गीतं गायन्ति ।
४. तुम्हे अरज्जे वसन्ते मिगे पीळेत्वा असप्पुरिसा होथ ।
५. मयं आपणं गन्त्वा वाणिजेहि सद्विं कथेत्वा धर्जं विकिकणाम ।
६. त्वं उड्हेन्तं सुकं दिस्वा गण्हितुं इच्छसि ।
७. पब्बतम्हा उदेन्तं चन्दं पस्सितुं कुमारो घरम्हा धावति ।

८. अहं कस्सकेहि सह खेत्तस्मि रुक्खे रोपेमि ।  
 ९. मयं अमच्चेहि सह मन्तेन्ता पासादस्मि आसनेसु निसीदाम ।  
 १०. तुम्हे तथागतस्स सावके निमन्तेत्वा दानं देथ ।  
 ११. उपासका विहारं गन्त्वा दीपे जालेत्वा धर्मं सोतुं निसीदन्ति ।  
 १२. लुद्को सीसं दुस्सेन छादेत्वा निसीदित्वा सकुणे मारेतुं उस्सहति ।  
 १३. सो वने आहिण्डन्ते गोणे गामं आनेत्वा वाणिजानं विक्रिकणाति ।  
 १४. त्वं आपणेहि भण्डानि किणित्वा सकटेन आनेत्वा गेहे ठपेसि ।  
 १५. तुम्हे ककचेहि रुक्खे छिन्दित्वा पब्बतम्हा पातेथ ।  
 १६. धर्मेन मनुस्से पालेन्ता भूपाला अकुसलं परिवज्जेन्ति ।  
 १७. सच्चं जातुं इच्छन्तो अहं समणेहि पञ्चे पुच्छामि ।  
 १८. दानं दत्वा सीलं रक्खन्ता सप्पुरिसा सग्गलोकं पापुणन्ति ।  
 १९. धञ्जं मिनन्तो कस्सको आपणं नेत्वा धञ्जं विक्रिणितुं चिन्तेति ।  
 २०. अहं पत्तेन पानीयं पिवन्तो द्वारस्मि ठत्वा मग्गं ओलोकेमि ।  
 २१. सो आपणम्हा खीरं किणितुं पुतं पहिणाति ।  
 २२. मयं धर्मं उगण्हितुं उस्सहन्ता पण्डितेन सह मन्तेम ।  
 २३. चोरेहि सद्धिं गेहे भिन्दित्वा मनुस्से पीळेन्ता तुम्हे असप्पुरिसा होथ ।  
 २४. अहं सुवण्णं परियेसमाने दीपम्हा आगच्छन्ते वाणिजे जानामि ।  
 २५. अहं आचरियो होमि, त्वं वेज्जो होसि ।  
 २६. त्वं असप्पुरिस, बुद्धेन देसेन्तं धर्मं सुत्वा सप्पुरिसो भवितुं उस्सहसि ।  
 २७. अहं पण्डितेहि सद्धिं मन्तेतो धर्मेन दीपं पालेन्तो भूपालो अस्मि ।  
 २८. वराहे मारेन्ता चोरा कस्सके पीळेन्ता पापकम्मानि करोन्ति ।  
 २९. सीलं रक्खन्ता पुञ्जकम्मानि करोन्ता मनुस्सा सग्गं पप्पोतुं आकङ्घन्ति ।  
 ३०. अकुसलं पहाय पापं परिवज्जेत्वा विहरन्ता नरा सप्पुरिसा भवन्ति ।

### ९. पालीत भाषांतर करा

१. तू झाडांवरून फळे गोळा करून बाजारास पाठवतो.
२. धर्म देत असलेल्या बुद्धांना ऐकून मी आनंदित होतो.\*
३. धान्य जमवण्यासाठी विचार करत असलेला मी, शेतकऱ्यासह शेताकडे जातो.
४. गाणी गात असणारे तुम्ही, आकाशात उडत असणारे पक्षी पाहता.
५. गावात शेतकऱ्यांना पीडत असलेल्या दुष्ट मनुष्याला मी उपदेश करतो.
६. आम्ही बागेत झाडे लावण्यासाठी खड्हे खणतो.

७. आम्ही विहारात दिवे लावत असणाऱ्या माणसाला ओळखतो.
८. नाविकांसह बेटावर पोहचण्यासाठी तुम्ही समुद्र पार करतात.
९. द्वीपावर शासन करत असणारा राजा जिंकतो.
१०. आम्ही गावात राहत असलेल्या श्रमणांकडून धर्म शिकण्यासाठी आरंभ करतो.
११. सत्याला शोधात असणारा विद्वान् नगराकडून नगराकडे जातो.
१२. झोपत असलेल्या कुव्याला पायाने टाळून मुलगा घरी धावतो.
१३. स्वर्गात जन्मण्यासाठी अपेक्षा करत असणारे विद्वान्, दुष्कृत्य करण्यासाठी घावरतात.
१४. मनुष्यलोक सोडून दुष्ट माणसे नरकात जन्मतात.
१५. डोंगरातून तपस्व्याला आमंत्रित करून राजा चीवर देतो.
१६. सत्य जाणण्यासाठी प्रयत्न करत असणारे उपासक श्रमण होतात.
१७. धर्म देत असलेल्या श्रमणाला ऐकण्यासाठी इच्छा करत असणारे उपासक विहारात जमतात.
१८. आम्ही डोळ्यांनी पाहतो, कानांनी ऐकतो, कायेने स्पर्श करतो.
१९. मी द्वीपांचे पालन करत असणारा राजा आहे.
२०. चोरांशी चर्चा करत असणारे तुम्ही, दुष्ट माणसे आहात.
२१. चांगली माणसे जगाचे रक्षण करण्यासाठी, झाडे लावण्यासाठी आरंभ करतात.
२२. धर्म ऐकल्यानंतर चोर दुष्कृत्य टाळण्याची इच्छा करतो.
२३. गावांकडून येत असणाऱ्या शेतकऱ्यांना विकण्यासाठी व्यापारी दुकानांत कपडे ठेवतात.
२४. आजारी माणूस मनुष्यलोकात देवांचा दूत आहे.
२५. दुष्ट माणसांना अनुशासन करत असलेली सद्गुणी माणसे जगात आहेत.
२६. पाण्यातून कमळे गोळा करून वैद्य धर्म ऐकण्यासाठी विहाराकडे जातो.
२७. चोर बुद्धांना पाहून, आनंदी होऊन, बाण फेकून देतो.\*
२८. दुष्कृत्य टाळण्यासाठी इच्छा करत असलेला मी, शील पाळतो.
२९. विहारातून येत असणाऱ्या श्रमणांना दान देण्यासाठी आम्ही भात शिजवतो.
३०. व्यापाच्यांबरोबर सोने शोधत असणारे तुम्ही, बेटावरून बेटाकडे जाता.

## पाठ - १४

### १. भविष्यकाळः-

भविष्यकाळात क्रियापदाच्या मूळ धातूस किंवा धातुसाधितास ‘इ’ स्वर जोडून किंवा न जोडता, ‘स्स’ हा प्रत्यय लावून त्यापुढे वर्तमानकाळाप्रमाणेच प्रत्यय जोडले जातात.

### धातुसाधित - पच - शिजवणे

#### एकवचन

|            |                 |               |
|------------|-----------------|---------------|
| पठम पु.    | (सो) पचिस्सति   | - तो शिजवेल.  |
| मज्जिम पु. | (त्वं) पचिस्ससि | - तू शिजवशील. |
| उत्तम पु.  | (अहं) पचिस्सामि | - मी शिजवेन.  |

#### अनेकवचन

|            |                  |                 |
|------------|------------------|-----------------|
| पठम पु.    | (ते) पचिस्सन्ति  | - ते शिजवतील.   |
| मज्जिम पु. | (तुम्हे) पचिस्सथ | - तुम्ही शिजवाल |
| उत्तम पु.  | (मयं) पचिस्साम   | - आम्ही शिजवू.  |

### धातुसाधित - चोरे - चोरणे

#### एकवचन

#### अनेकवचन

|            |                  |                   |
|------------|------------------|-------------------|
| पठम पु.    | (सो) चोरेस्सति   | (ते) चोरेस्सन्ति  |
| मज्जिम पु. | (त्वं) चोरेस्ससि | (तुम्हे) चोरेस्सथ |
| उत्तम पु.  | (अहं) चोरेस्सामि | (मयं) चोरेस्साम   |

### धातूसाधित - किणा - खरेदी करणे, विकत घेणे

#### एकवचन

#### अनेकवचन

|            |                  |                   |
|------------|------------------|-------------------|
| पठम पु.    | (सो) किणिस्सति   | (ते) किणिस्सन्ति  |
| मज्जिम पु. | (त्वं) किणिस्ससि | (तुम्हे) किणिस्सथ |
| उत्तम पु.  | (अहं) किणिस्सामि | (मयं) किणिस्साम   |

## २. खालील रूपांकडे विशेष लक्ष द्यावे.

|          |                   |                   |
|----------|-------------------|-------------------|
| गच्छति   | - गमिस्सति        | = (तो) जाईल.      |
| आगच्छति  | - आगमिस्सति       | = (तो) येईल.      |
| ददाति    | - ददिस्सति/दस्सति | = (तो) देईल.      |
| तिद्वृति | - ठस्सति          | = (तो) उभा राहील. |
| करोति    | - करिस्सति        | = (तो) करेल.      |

## सराव - १४

### ३. मराठीत भाषांतर करा

१. सो पब्बतम्हा उदेन्तं चन्दं पस्सितुं पासादं आरुहिस्सति ।
२. भूपाले चोरेहि दीपं रक्खितुं अमच्येहि सह मन्तेस्सति ।
३. अहं समुद्रं तरित्वा दीपं पापुणित्वा भण्डानि विक्रिणिस्सामि ।
४. तुम्हे विहारं उपसङ्घमन्ता मग्गे पुफ्फानि विक्रिकणन्ते मनुस्से पस्सिस्सथ ।
५. उदकं ओतरित्वा वथानि धोवन्तो कस्सको नहायित्वा गेहं आगमिस्सति
६. गामे विहरन्तो त्वं नगरं गन्त्वा रथं आनेस्ससि ।
७. पुञ्जं कातुं इच्छन्ता तुम्हे सप्पुरिसा पापमिते ओवदिस्सथ ।
८. धम्मं सोतुं उद्याने निसीदन्तानं उपासकानं अहं पानीयं दस्सामि ।
९. मयं भूपाला धम्मेन दीपे पालेस्साम ।
१०. रुक्खं पातेत्वा फलानि खादितुं इच्छन्तं असप्पुरिसं अहं अक्कोसामि ।
११. दानं ददमाना सीलं रक्खन्ता मयं समणेहि धम्मं उगगणिहस्साम ।
१२. धावन्तम्हा सकटम्हा पतन्तं दारकं दिस्वा त्वं वेज्जं आनेसि ।
१३. सच्चं अधिगन्तुं उस्सहन्तो तापसो तथागतं पस्सितुं आकङ्क्षति ।
१४. बुद्धे पसीदित्वा उपासको देवपुत्तो हुत्वा सगगलोके उप्पज्जति ।
१५. उदेन्तं सुरियं दिस्वा ब्राह्मणो गेहा निक्खम्म वन्दति ।
१६. दीपं पप्पोतुं आकङ्क्षमाना मयं समुद्रं तरितुं नाविकं परियेसाम ।
१७. अमच्यस्स दूतं पहिणितुं इच्छन्तो भूपाले अहं अस्मि ।
१८. पुञ्जकम्मानि करोन्तानं वाणिजानं धनं अथि ।
१९. मयं गीतानि गायन्ते नच्यन्ते कुमारे ओलोकेस्साम ।
२०. पापं परिवज्जेत्वा कुसलं करोन्ते सप्पुरिसे देवा पुजेस्सन्ति ।
२१. सच्चं भासन्ता असप्पुरिसे अनुसासन्ता पण्डिता उपासका भविस्सन्ति ।
२२. त्वं धञ्जेन पतं पूरेत्वा आचरियस्स दस्ससि ।
२३. रुक्खमूले निसीदित्वा चीवरं सिब्बन्तं समणानं अहं उपसङ्घमिस्सामि ।
२४. अहं सयन्तस्स पुत्तस्स कायं आमसन्तो मञ्चस्मि निसीदामि ।

२५. उच्यानेसु रुक्खे गोपेतुं समणा मनुसे अनुसासन्ति ।

#### ४. पालीत भाषांतर करा

१. मी बुद्धांकइून धर्म शिकून धर्मनि जगात जगेन.\*
२. मी मंत्र्यांसह धर्मनि द्वीपाचे पालन करण्यासाठी राजाला सल्ला देईन.
३. आसनावर वस्त्र ठेवून मुलगा आंघोळीसाठी पाण्यात उतरेल.
४. तुम्ही धर्म ऐकून तथागतांवर प्रसन्न व्हाल.
५. फळे गोळा करत असणारे, वनात फिरत असणारे ते, पाणी पिण्याची इच्छा करतील.
६. शहराजवळ जात असणारे शेतकरी रस्त्यावर धावणाऱ्या रथांना पाहतील.
७. उगवत असणारा सूर्य जगाला प्रकाशित करेल.
८. बागेत झाडे चंद्राच्या प्रकाशात न्हातील.
९. विद्वानाला प्रश्न विचारत असणाऱ्या (तुझ्या) मुलांना पाहून, तू आनंदित होशील.
१०. मुले झाडांवर फळे खात असणारे पोपट पाहण्यासाठी इच्छा करतील.
११. आम्ही बेटावरून येत असणारे वैद्य आहेत, तुम्ही बेटाकडे जात असणारे शिक्षक आहात.
१२. तो पैसे घेऊन वस्तू खरेदी करण्यासाठी दुकानाकडे जाईल.
१३. मुलगा पाण्याने पात्र भरून भात खात असलेल्या याचकास देईल.
१४. पुण्य प्राप्त करण्याची इच्छा करत असणारी माणसे, जगात लोकांसाठी झाडे लावतील.
१५. धन शोधत असणारी दुष्ट माणसे गावांत धर्मनि राहणाऱ्या शेतकऱ्यांना त्रास देतील.
१६. डोंगरातील झाडांवर फळे आहेत.
१७. कुशल कर्म करत असणारी चांगली माणसे श्रमणांकइून धर्म शिकतील.
१८. विद्वान द्वीपांवर शासन करीत असलेल्या राजांना सल्ला देतात.
१९. समुद्राकडून येत असणाऱ्या मच्छिमारांकइून तुम्ही मासे खरेदी कराल.
२०. धर्म शिकण्याची इच्छा करत असणारे आम्ही बुद्धांजवळ जाऊ.\*
२१. बागेकडे येत असणाऱ्या कोल्हाला पाहून मुले घाबरतील.
२२. मंत्र्यांसह गावाकडे येत असणाऱ्या राजाला बघण्यासाठी ते जातील.
२३. तू धर्मनि जगत असणारा चांगला माणूस आहेस.
२४. चोरीने फळ उचलत असणाऱ्या पोपटाला मी पाहतो.
२५. शील पालन करत असणारे आम्ही, चांगली माणसे बनू.

## पाठ - १५

### १. क्रियापदाची हेतू - फल (संभावना) किंवा संकेतार्थी रूपे:-

हेतू - फल रूप मुख्यत्वे करून संभाव्यता आणि सल्ला दर्शविते. ‘जर – तर’, ‘असे होऊ शकते’ इत्यादी शब्दांद्वारा ही संकल्पना दर्शविली जाते. क्रियापदाच्या मूळ धातूस किंवा पायाभूत रूपाला ‘एच्य’ प्रत्यय जोडून हे रूप साधले जाते.

### पायाभूत रूप - पच - शिजवणे

#### एकवचन

|            |                  |                   |
|------------|------------------|-------------------|
| पठम पु.    | (सो) पचेय्य      | = (जर) तो शिजवेल. |
| मज्जिम पु. | (त्वं) पचेय्यासि | = (जर) तू शिजवशील |
| उत्तम पु.  | (अहं) पचेय्यामि  | = (जर) मी शिजवल   |

#### अनेकवचन

|            |                   |                      |
|------------|-------------------|----------------------|
| पठम पु.    | (ते) पचेय्युं     | = (जर) ते शिजवतील.   |
| मज्जिम पु. | (तुम्हे) पचेय्याथ | = (जर) तुम्ही शिजवाल |
| उत्तम पु.  | (मयं) पचेय्याम    | = (जर) आम्ही शिजवले  |

मज्जिम पुरुष आणि उत्तम पुरुषाची रूपे वर्तमानकाळासारखीच आहेत, हे लक्षात व्यायला हवे.

### २. खालील संयोजकादि (जोडणारी) अव्यये वाक्यरचनेत उपयोगी होतात.

सचे/यदि = जर

च = आणि

पि = सुख्दा, देखील

न = न, नाही

विय = (त्या) सारखा

### ३. वाक्य प्रयोगाची उदाहरणे:-

#### एकवचन

१. सचे सो भतं पचेय्य, अहं भुञ्जेय्यामि |

जर तो भात शिजवेल तर मी खाईन.

२. सचे त्वं इच्छेय्यासि अहं चोरं पुच्छेय्यामि |

- जर तू इच्छिलेस तर मी चोरास विचारेन.  
 ३. यदि अहं नगरे विहरेय्यामि, सो पि नगरं आगच्छेय्य |  
 जर मी नगरात राहीन तर तो सुद्धा नगरास येर्इल.

### अनेकवचन

१. सचे ते भत्तं पचेय्युं, मयं भुज्जेय्यामि।  
 जर ते भात शिजवतील तर आम्ही खाऊ.  
 २. सचे तुम्हे इच्छेय्याथ, मयं चोरे पुच्छेय्यामि।  
 जर तुम्ही इच्छिले तर आम्ही चोरांना विचारू.  
 ३. यदि मयं नगरे विहरेय्यामि, ते पि नगरं आगच्छेय्युं।  
 जर आम्ही नगरात राहिलो तर ते सुद्धा नगरास येतील.

### सराव - १५

#### ४. मराठीत भाषांतर करा

१. सचे त्वं धम्मं सुणेय्यासि, अद्धा त्वं बुद्धस्स सावको भवेय्यासि |  
 २. यदि ते गीतानि गायितुं उगण्हेय्युं, अहं पि उगण्हेय्यामि |  
 ३. सचे त्वं बीजानि पहिणेय्यासि, कस्सको तानि खेते वपेय्य |  
 ४. सचे तुम्हे पदुमानि ओचिनेय्याथ, कुमारा तानि बुद्धस्स पुजेय्युं |  
 ५. सचे त्वं मूलं गण्हेय्यासि, अहं दुस्सं आददेय्यामि |  
 ६. यदि मयं भूपालेन सह मन्तेय्याम, अमच्चा न आगच्छेय्य |  
 ७. सचे तुम्हे रुक्खे रोपेय्याथ, दारका फलानि भुज्जेय्युं |  
 ८. सचे मयं सप्पुरिसा भवेय्याम, पुत्ता पि सप्पुरिसा भवेय्युं |  
 ९. सचे भूपाला धम्मेन दीपे पालेय्युं, मयं भूपालेसु पसीदेय्याम |  
 १०. सचे कस्सको गोणं विक्रिणेय्य, वाणिजो तं किणेय्य |  
 ११. सचे मनुस्से पीछेन्ता असप्पुरिसा गामं आगच्छेय्युं, अहं ते ओवदेय्यामि |  
 १२. यदि अमच्चा पापं परिवज्जेय्युं, मनुस्सा पापं न करेय्युं।  
 १३. सचे तुम्हे पब्बतं आरुहेय्याथ, आहिणन्ते मिगे च रुक्खेसु चरन्ते मक्कटे च  
     उडेन्ते सकुणे च पसेय्याथ |  
 १४. सचे त्वं पत्तेन पानीयं आनेय्यासि, पिपासितो (तहानलेला) सो पिवेय्य |  
 १५. कुसलकम्मानि कत्वा तुम्हे मनुस्सलोके उप्पजितुं उस्सहेय्याथ |  
 १६. सचे सो वेज्जो भवेय्य, अहं तं (त्याला) रोदन्तं दारकं पसितुं आनेय्यामि |

१७. यदि पुत्तो पापं करेय्य, अहं तं ओवदेय्यामि ।  
 १८. सचे अमच्चो पण्डितं आचरियं आनेय, मयं धम्मं उगगणहेय्याम ।  
 १९. सचे अहं हत्थेन सुवं फुसितुं उस्सहेय्यामि, सो गेहा उप्पतेय्य ।  
 २०. यदि सो वेजं पक्कोसितुं इच्छेय्य, अहं तं आनेय्यामि ।

#### ५. पालीत भाषांतर करा

१. जर तू मुलांची दुष्कर्मे लपवशील तर ते चोर होतील./जर तू मुलांद्वारा केली जाणारी पापकर्मे लपवशील तर ते चोर होतील.  
 २. जर तुम्ही सद्गुणी मनुष्य बनण्यासाठी इच्छिता तर दुष्कर्म त्यागा.  
 ३. जर आपण डोळ्यांनी पाहू तर जगातील वस्तू पाहू.  
 जर आपण मनानी पाहू तर चांगले आणि वाईट पाहू.  
 ४. जर तू गाणे गाण्यासाठी सुरुवात करशील तर मुले नाचण्यासाठी सुरुवात करतील.  
 ५. जर आम्ही मनुष्य लोकातून निघालो तर मनुष्य लोकात जन्मण्यासाठी भिणार नाही.  
 ६. जर देव मनुष्य लोकात जन्मतील तर ते पुण्यकर्म करतील.  
 ७. जर तुम्ही सत्य शोधाल तर विहारात राहत असलेल्या बुद्धांकडे जाल.\*  
 ८. जर तुम्ही व्यापाच्याला समजवाल तर तो सद्गुणी पुरुष होईल.  
 ९. जर मी श्रमणाला बोलावले तर तो धर्म शिकवण्यासाठी घरी येईल.  
 १०. जर तू सत्पुरुष असशील तर वनात हिंडत असणाऱ्या बैलांना मारणार नाहीस.  
 ११. जर तुम्ही शेतात काम कराल तर तुम्ही धान्य व संपत्ती प्राप्त कराल.  
 १२. जर राजाबेटावर धर्मनिराज्यकरण्यासाठी इच्छा करेल तर तो विद्वान आणि मंत्र्यांबरोबर चर्चा करेल.  
 १३. जर तू शेतात काम करशील तर नांगरणाऱ्या शेतकऱ्यांना पाहशील.  
 १४. मी माकडांसह बागेत खेळत असणारी मुले पाहतो.  
 १५. जर ते गाणी गात असणाऱ्या पक्ष्यांना पाहण्यासाठी इच्छा करतील तर ते बागेत जातील.  
 १६. जर तुम्ही धर्म ऐकाल तर तुम्ही नीतीने जगू शकाल.  
 १७. जर तू पापी मित्रांना सोडशील तर तू चांगला माणूस होशील.  
 १८. जर मंत्री चांगला माणूस नसेल तर आम्ही त्याच्याकडे जाणार नाही.  
 १९. जर झाडावर फळे असतील तर मी ती काढण्यासाठी झाडावर चढेन.  
 २०. जर मी फळे गोळा करेन तर तू मित्रांसह खाशील.

## पाठ - १६

### १. क्रियापदाची आज्ञार्थी रूपेः-

क्रियापदाचे आज्ञार्थी रूप आज्ञा, आदेश, प्रार्थना, आशीर्वाद, मंगलकामना, इच्छा इ. व्यक्त करतात.

### पायाभूत रूप - पच - शिजवणे

#### एकवचन

|            |                  |                    |
|------------|------------------|--------------------|
| पठम पु.    | (सो) पचतु        | - (त्याने) शिजवावे |
| मञ्जिम पु. | (त्वं) पच, पचाहि | - (तू) शिजव        |
| उत्तम पु.  | (अहं) पचामि      | - (मी) शिजवावे     |

#### अनेकवचन

|            |              |                          |
|------------|--------------|--------------------------|
| पठम पु.    | (ते) पचन्तु  | - (त्यांनी) शिजवावे      |
| मञ्जिम पु. | (तुम्हे) पचथ | - (तुम्ही) शिजवा         |
| उत्तम पु.  | (मयं) पचाम   | - (आम्ही) शिजवू, शिजवावे |

मञ्जिम पुरुष अनेकवचन व उत्तम पुरुष एक आणि अनेक वचनी रूपे वर्तमानकाळांतील रूपासारखीच आहेत.

‘मा’ हा नकारार्थी संयोजक शब्द अनुज्ञा रूपावरोबर वापरतात.

### २. वाक्य प्रयोगाची उदाहरणे:-

#### एकवचन

१. सो वाणिजानं भतं पचतु ।  
त्याने व्यापाचांसाठी भात शिजवावा.
२. त्वं रथेन नगरं गच्छ/गच्छाहि ।  
तू रथाने नगरास जावे/जा.
३. अहं धर्मं उगगण्हामि ।  
मी धर्म शिकावा.

#### अनेकवचन

१. ते वाणिजानं भतं पचन्तु ।  
त्यांनी व्यापाचांसाठी भात शिजवावा.

२. तुम्हे रथेन नगरं गच्छथ |  
तुम्ही नगरास रथाने जावे/जा.
३. मयं धम्मं उगणहाम |  
आम्ही धर्म शिकावा.  
'मा' ह्या नकारार्थी संयोजक शब्दाचा वापर:-
१. मा तुम्हे सच्चं परिवज्जेथ |  
तुम्ही सत्य सोडू नये.
२. मा ते उद्यानम्हि पुष्फानि ओचिनन्तु |  
त्यांनी बागेतून फुले तोडू नयेत.

### सराव - १६

#### ३. मराठीत भाषांतर करा

१. भूपाला धम्मेन दीपं पालेन्तु |  
२. मा मनुस्सो भायतु, सचे सो सच्चं जानाति, भासतु |  
३. तुम्हे पापं करोन्ते पुते ओवदथ |  
४. सुगतो धम्मं देसेतु, सावका च उपासका च विहारस्मि निसीदन्ति |  
५. मा ते पापकम्मानि कत्वा मनुस्सलोकम्हा चवित्वा नरके उप्पजन्तु |  
६. मा चोरा कस्सकानं गोणे मारेन्तु |  
७. मा त्वं सुनखं आमसाहि, सो तं डसेय्य |  
८. तुम्हे दीपे जालेत्वा विहारस्मि रूपानि ओलेकेथ |  
९. तुम्हे असपुरिसे आमन्तेत्वा धम्मेन जीवितुं अनुसासथ |  
१०. पुत्त, मा त्वं पापमिते उपसङ्घम |  
११. सचे तुम्हे सच्चं भासितुं उस्सहेय्याथ, तुम्हे सप्पुरिसा भवेय्याथ |  
१२. सचे त्वं पासाणे खिपेय्यासि, काका च सकुणा च आकासं उप्पतेय्युं |  
१३. मा दारक पानीयं पिवित्वा पतं भिन्द |  
१४. मा सुवण्णं चोरेत्वा गच्छन्ता चोरा समुदं तरन्तु |  
१५. उपासका, मा पुते अक्कोसाहि, समणेहि सद्बिं मन्तेत्वा पुते अनुसासाहि |  
४. पालीत भाषांतर करा
१. द्वीप पाळत असणारा राजा, धर्मनि लोकांचे संरक्षण करो.  
२. बागेत खेळत असणारी मुले, पडत असणारी पाने जमा करोत.

३. शेतकरी आणि व्यापारी राजाच्या बागेत जमा होवोत.
४. सिंह, हरणे आणि पक्षी पाहण्यासाठी मुले डोंगर चढोत.
५. जर तुम्ही हरणांचे रक्षण करू इच्छिता तर वनातली झाडे तोडू नका.
६. मुलगा जिन्यावरून उतरू नये, तो पडेल.
७. शेतकरी शेते नांगरून बी पेरो, त्याने बकरे मारू नयेत.
८. चोरीने फळे घेऊन पोपटांनी उडावे.
९. मुलांनो, तुम्ही पापे करू नका, धर्मनि रहा.
१०. बुद्धांच्या शिष्यांना दान आणि चीवर मिळावे.\*
११. मुले घरातून निघून पर्वतातून उगवत असणाऱ्या चंद्राला पाहोत.
१२. मुलांनो, शिकाऱ्याबरोबर जंगलात जाऊन हरणे मारू नका.
१३. तुम्ही घरी धावत जाऊन शेत नांगरणाऱ्या शेतकर्यांसाठी पाणी आणा.
१४. राजाच्या दूतास प्रश्न विचारू नका.
१५. उपासकांनो, तुम्ही अकुशलास टाळून कुशल कर्म करण्याचा प्रयत्न करा.

## पाठ - १७

१. भूतकाळः-

अकारान्त क्रियापदाची भूतकाळी रूपेः-

पायाभूत रूपः-

**पच - शिजवणे**

### एकवचन

|            |                   |                   |
|------------|-------------------|-------------------|
| पठम पु.    | (सो) अपचि, पचि    | - (त्याने) शिजवला |
| मञ्जिम पु. | (त्वं) अपचि, पचि  | - (तू) शिजवला     |
| उत्तम पु.  | (अहं) अपचिं, पचिं | - (मी) शिजवला     |

### अनेकवचन

|            |                          |                    |
|------------|--------------------------|--------------------|
| पठम पु.    | (ते) अपचिंसु, पचिंसु     | - (त्यांनी) शिजवला |
| मञ्जिम पु. | (तुम्हे) अपचित्थ, पचित्थ | - (तुम्ही) शिजवला  |
| उत्तम पु.  | (मयं) अपचिम्ह, पचिम्ह    | - (आम्ही) शिजवला   |

अपचि, अपचिंसु इ. मधला ‘अ’ हा नकारार्थी पूर्वप्रत्यय नाही. तो भूतकाल दर्शविणारा (ऐच्छिक) पूर्वप्रत्यय आहे याची नोंद घ्यावी.

ज्या क्रियापदांच्या शेवटी ‘ना’ असतो त्यांचीही भूतकाळी रूपे वरील प्रमाणेच होतात.

एकारान्त क्रियापदांची रूपेः-

**पायाभूत रूप - चोरे - चोरणे**

### एकवचन

|            |                       |                  |
|------------|-----------------------|------------------|
| पठम पु.    | (सो) चोरेसि, चोरयि    | - (त्याने) चोरले |
| मञ्जिम पु. | (त्वं) चोरेसि         | - (तू) चोरले     |
| उत्तम पु.  | (अहं) चोरेसिं, चोरयिं | - (मी) चोरले     |

**अनेकवचन**

|            |                        |                  |
|------------|------------------------|------------------|
| पठम पु.    | (ते) चोरेसुं, चोरयिंसु | - (त्यांनी) चोरल |
| मज्जिम पु. | (तुम्हे) चोरयित्थ      | - (तुम्ही) चोरल  |
| उत्तम पु.  | (मयं) चोरयिम्ह         | - (आम्ही) चोरले  |

२. वाक्य प्रयोगाची उदाहरणे:-

**एकवचन**

१. भूपाले दीपे चरि/अचरि | - राजा द्वीपावर फिरला.  
समणो धम्मं देसेसि | - श्रमणाने धर्मोपदेश दिला.
२. त्वं भण्डानि विकिकणि | - तू वस्तू विकल्या.  
त्वं पुफ्फानि पूजेसि | - तू फुलांनी पूजा केली.
३. अहं पब्बतं आरुहिं | - मी डोंगर चढलो.  
अहं दीपं जालेसिं/जालयिं | - मी दिवा लावला.

**अनेकवचन**

१. भूपाला दीपेसु चरिंसु/अचरिंसु | - राजे द्वीपावर फिरले.  
समणा धम्मं देसेसुं/देसयिंसु | - श्रमणांनी धर्मोपदेश दिला.
२. तुम्हे भण्डानि विकिकणित्थ | - तुम्ही वस्तू विकल्या.  
तुम्हे पुफ्फानि पूजयित्थ | - तुम्ही फुलांनी पूजा केली.
३. मयं पब्बते आरुहिम्ह | - आम्ही पर्वत चढलो.  
मयं दीपे जालयिम्ह | - आम्ही दिवे लावले.

**सराव - १७****३. मराठीत भाषांतर करा**

१. कस्सको खेतं कसित्वा नहायितुं उदकं ओतरि |
२. उगगण्हन्तानं दारकानं दातुं आचरिया कुसुमानि आहरिंसु |
३. उपासका आसनेहि उद्भवित्वा धम्मं देसेतुं उपसङ्घमन्तं समणं वन्दिसु |
४. नगरेसु कम्मानि कत्वा वेतने लभितुं आकङ्घमाना नरा गामेहि निकखमिंसु |
५. आचरियो आसनं दुस्सेन छादेत्वा समणं निसीदितुं निमन्तेसि |
६. कुमारो द्वारं विवरित्वा रुक्खम्हा ओरुहन्ते वानरे पस्समानो अद्भासि |
७. पण्डितो गोणे चोरेत्वा अकुसलं करोन्ते नरे पक्कोसित्वा ओवदि |
८. याचकस्स पुत्ता रुक्खेहि पतन्तानि फलानि संहरित्वा आपणस्मि विकिकणिंसु |

९. कस्सको धञ्जं मिनित्वा वाणिजस्स विकिकणितुं पहिणि ।
१०. धम्मं उगगणित्वा समणो भवितुं आकद्धमानो अमच्चो आचरियं परियेसमानो बुद्धं  
उपसङ्गमि ।
११. सचे तुम्हे गामं पापुणेय्याथ मित्ते ओलोकेय्याथ ।
१२. पण्डितम्हा पञ्चे पुच्छित्वा सच्चं जानितुं मातुलो उस्सहि ।
१३. पासाणम्हि ठत्वा अजं खादन्तं सीहं दिस्या वानरा भायिंसु ।
१४. रुक्खमूले निसीदित्वा गितानि गायन्तानं कुमारानं कायेसु पण्णानि च पुष्फानि च  
पतिंसु ।
१५. तुम्हे धनं संहरमाना मा समुदं तरित्वा दीपं गच्छथ ।
१६. आपणस्मि भण्डानि विकिकणन्तस्स वाणिजस्स रथो अथि ।
१७. अहं पुत्रस्स दातुं दुस्सं सिब्बन्तो गीतं गायिं ।
१८. सूकरा च सुनखा च खेते आवाटे खणिंसु ।
१९. पुरिसा रुक्खमूले निसीदित्वा तापसेन भासमानं सुणिंसु ।
२०. लुद्केन सद्धिं वने आहिणन्ते पुत्ते आमन्तेत्वा कस्सका अक्कोसिंसु ।
२१. मा त्वं सुवण्णपत्तं विकिकणित्वा खगे किणाहि ।
२२. सो भण्डानि च खेतं च गोणे च पुत्तानं दत्वा गेहं पहाय समणो भवितुं चिन्तेसि ।
२३. धम्मेन जीवन्ता सप्पुरिसा मिगे न मारेसुं ।
२४. अहं सोपानं आरुहिं, ते सोपानम्हा ओरुहिंसु ।
२५. सहायका उदकं ओतरित्वा नहायन्ता पदुमानि ओचिनिंसु ।

#### ४. पालीत भाषांतर करा

१. मुलाने कमळे पाण्याने शिंपडून त्यांनी बुद्धांना पूजिले.\*
२. वेतन प्राप्त करून, बाजाराकडे जाऊन, माणसांनी वस्तु खरेदी केल्या.
३. मच्छिमारांनी समुद्राहून मासे आणून शेतकऱ्यांना विकले.
४. जर तू आंघोळ करण्यासाठी जाशील तर मुलांचे कपडे धू.
५. पोपट व कावळे झाडांवरून आकाशात उडाले.
६. झाडाखाली कुत्र्याबरोबर खेळत असणाऱ्या मुलांना रागावू नका.
७. राजास पाहण्यासाठी जमा होऊन बागेत बसत असलेल्या लोकांशी मी बोललो.
८. घरात प्रवेश करत असणाऱ्या सापाला पाहून आम्ही घावरलो.
९. मित्रासह भात खात असलेल्या पुत्रास मी पाणी दिले
१०. पापकर्म करू नका, मनुष्य लोकातून निघून स्वर्गात प्रवेश मिळवण्यासाठी चांगले  
कर्म करा.

## पाठ - १८

१. आकारान्त स्त्रीलिंगी नामाची विभक्ति रूपे:-

**वनिता = महिला**

| एकवचन   | अनेकवचन          |
|---------|------------------|
| पठमा    | वनिता            |
| दुतिया  | वनितं            |
| ततिया   | वनिताय           |
| चतुर्थी | वनिताय           |
| पञ्चमी  | वनिताय           |
| छट्टी   | वनिताय           |
| सत्तमी  | वनिताय, वनितायं  |
| आलपन    | वनिते            |
|         | वनिता, वनितायो   |
|         | वनिता, वनितायो   |
|         | वनिताहि, वनिताभि |
|         | वनितानं          |
|         | वनिताहि, वनिताभि |
|         | वनितानं          |
|         | वनितासु          |
|         | वनिता, वनितायो   |

२. वरीलप्रमाणेच विभक्ति रूपे होणारी नामे:-

(बहुतेक आकारान्त नामे स्त्रीलिंगी असतात.)

|              |                     |         |               |
|--------------|---------------------|---------|---------------|
| कङ्गा/दारिका | - मुलगी             | वालुका  | - वाळू        |
| गङ्गा        | - गंगा नदी          | मज्जूसा | - पेटी, डबी   |
| नावा         | - जहाज, नाव         | माला    | - हार, माळ    |
| अम्मा        | - आई, माता          | सुरा    | - मद्य, दारू  |
| पङ्गा        | - प्रज्ञा, बुद्धी   | साखा    | - फांदी, शाखा |
| साला         | - सभागृह            | देवता   | - देवता       |
| भरिया        | - भार्या, पत्नी     | परिसा   | - लवाजमा      |
| सभा          | - सभा               | सद्धा   | - श्रद्धा     |
| कथा          | - संभाषण, व्याख्यान | गीवा    | - मान         |
| लता          | - वेल               | जिव्हा  | - जीभ         |
| गुहा         | - गुंफा             | पिपासा  | - तहान        |
| छाया         | - सावली             | खुदा    | - भूक, क्षुधा |

### ३. शब्दसंग्रह - क्रियापदे:-

|               |                           |           |                |
|---------------|---------------------------|-----------|----------------|
| सक्कोति       | - शक्तो, शक्य करतो        | परिवारेति | - सोबत करतो,   |
| निवारेति      | - निवारतो, रोखतो, थांववतो |           | घेरतो, वेढतो   |
| कुञ्जिति      | - रागवतो, क्रोधित होतो    | अनुबन्धति | - पाठलाग करतो  |
| पोसेति        | - वाढवतो, पोसतो           | नमस्सति   | - नमस्कार करतो |
| निलीयति       | - लपवितो                  | वायमति    | - प्रयल करतो   |
| मोदति         | - आनंद अनुभवतो            | सल्लपति   | - संभाषण करतो  |
| सुखं विन्दति  | - सुख अनुभवतो             | पटियादेति | - तयार करतो    |
| दुःखं विन्दति | - दुःख अनुभवतो            |           |                |
| पक्खिपति      | - ठेवतो, मांडतो           |           |                |

सराव - १८

### ४. मराठीत भाषांतर करा

१. सचे सभायं कञ्जायो कथेय्युं अहं पि कथेस्सामि ।
२. दारिकायो पुण्यानि ओचिनित्वा सालायं निसीदित्वा मालायो करिंसु ।
३. वनिता रुक्खस्स साखायो छिन्दित्वा आकहिं ।
४. भरिया मज्जूसासु वथानि च सुवण्णं च ठपेसि ।
५. दारिका पासादस्स छायायं निसीदित्वा वालुकाय कीळिंसु ।
६. भरियाय कथं सुत्वा पसीदित्वा कस्सको सप्पुरिसो अभवि ।
७. देवतायो पुञ्जानि करोन्ते धम्मेन जीवन्ते मनुस्से रक्खन्तु ।
८. पब्बतस्मिं गुहासु वसन्ता सीहा वालुकाय कीळन्ते मिगे मारेसुं ।
९. अम्मा दारिकाय कुञ्जित्वा हथ्येन पहरि ।
१०. वनितायो सद्वाय भत्तं पचित्वा विहारं नेत्वा समणानं पूजेसुं ।
११. तुम्हे मा सुरं पिवथ, मा गिलाना (रोगी) भवितुं उस्सहथ ।
१२. धम्मेन धनं संहरमाना पञ्जाय पुत्ते पोसेन्ता नरा मनुस्सलोके सुखं विन्दन्ति ।
१३. सचे तुम्हे नावाय गङ्गं तरेय्याथ दीपस्मि वसन्ते तापसे दिस्वा आगन्तुं सकिकस्सथ ।
१४. परिसं परिवारेत्वा पासादम्हा निक्खमन्तं भूपालं दिस्वा वनितायो मोदन्ति ।
१५. कञ्जायो सालायं सन्निपतित्वा कुमारेहि सन्धिं सल्लपिंसु ।
१६. खुदाय पीळेन्तं गिलानं याचकं दिस्वा अम्मा भत्तं अददि/अदासि ।
१७. गुहायं निलीयित्वा सुरं पिवन्ता चोरा सीहं पस्सित्वा भायिंसु ।

१८. वराहे मारेत्वा जीवन्तो नरो गिलानो हुत्वा दुक्खं विन्दति ।

१९. वाणिजस्स आपणे मञ्जूसायं मूलं (पैसे) अत्थि ।

२०. समणा मनुस्से पापा निवारेत्वा सप्मुरिसे कातुं वायमन्ति ।

#### ५. पालीत भाषांतर करा

१. विहारास जाण्यासाठी माझ्या आईला मार्ग विचारत असलेला मनुष्य रस्त्यात उभा होता.

२. महिलेने श्रद्धेने भात तयार करून थ्रमणांसाठी विहारास नेला.

३. धर्माने जगत असणारा तू, धन मिळवू शकतोस.

४. घराच्या सावलीत बसलेल्या मुलींनी वेलीच्या फांद्या तोडल्या.

५. दुराचारी माणसांनी त्यांच्या मद्य पिण्याच्या मुलंना उपदेश केला नाही

६. टोपली आणि पैसे घेऊन मुळगी धान्य खरेदी करण्यासाठी बाजारास गेली.

७. जर तुम्ही दिवे पेटवाल, तर उपासक विहारातल्या वस्तू बघतील.

८. हे भल्या पुरुषांनो, तुम्ही धर्म शिकून धर्माने जगण्याचा प्रयत्न करा.

९. जर तुम्ही प्रयत्न कराल तर पाप टाळून पुण्य करू शकाल.

१०. गुहेत झोपणाऱ्या सिंहाला पाहून महिला पळाली.

## पाठ - १९

### १. भूतकाळवाचक धातुसाधित विशेषण रूप (कृदन्त):-

भूतकाळवाचक धातुसाधित विशेषण रूप (कृदन्त) बहुधा क्रियापदाच्या मूळ धातूस 'इ' सह किंवा 'इ' शिवाय 'त' जोडून केले जाते.

|           |                |         |                      |
|-----------|----------------|---------|----------------------|
| पचति      | - पच् + इ + त  | = पचित  | - शिजवलेले           |
| भासति     | - भास् + इ + त | = भासित | - बोललेले            |
| याचति     | - याच् + इ + त | = याचित | - मागितलेले          |
| देसेति    | - दिस् + इ + त | = देसित | - उपदेश/देशना दिलेले |
| पूजेति    | - पूज् + इ + त | = पूजित | - पूजलेले            |
| गच्छति    | - गम् + त      | = गत    | - गेलेले             |
| हनति      | - हन् + त      | = हत    | - (ठार) मारलेले      |
| नयति/नेति | - नी + त       | = नीत   | - नेलेले             |

काही धातूना 'न' प्रत्यय जोडूनही भूतकाळवाचक धातुसाधित विशेषण रूप (कृदन्त) होते.

|         |                |           |                              |
|---------|----------------|-----------|------------------------------|
| छिन्दति | - छिद् + न     | = छिन्न   | - कापलेले                    |
| भिन्दति | - भिद् + न     | = भिन्न   | - तोडलेले                    |
| निसीदति | - नि + सद् + न | = निसिन्न | - बसलेले                     |
| तरति    | - तृ + न       | = तिण्ण   | - (पोहून) गेलेले, पार केलेले |

### २. भूतकाळवाचक धातुसाधित विशेषण रूप (कृदन्त):-

भूतकाळवाचक धातुसाधित विशेषण रूपे (कृदन्त) जेव्हा सकर्मक क्रियापदापासून बनतात, तेव्हा त्यांना कर्मणी अर्थ असतो, पण जेव्हा ती अकर्मक क्रियापदापासून बनतात तेव्हा त्यांना कर्तरी अर्थ असतो. त्यांची विभक्ति रूपे 'पुलिंग' व 'नपुंसकलिंग' मध्ये अकारान्त नामाप्रमाणे व 'स्त्रीलिंग' मध्ये आकारान्त नामाप्रमाणे होतात.

उदा.

पचति, छिन्दति, निमन्तेति ही सकर्मक क्रियापदे आहेत.

- पचितो ओदनो - शिजवलेला भात (कर्मणी अर्थ)  
 छिन्नं पण्णं - तुटलेले पान (कर्मणी अर्थ)  
 निमन्तिता कङ्गा - संबोधित केली गेलेली कन्या (कर्मणी अर्थ)

गच्छति, पतति, तिद्वृति ही अकर्मक क्रियापदे आहेत.

- मनुसो गतो (होति) - मनुष्य गेलेला आहे. (कर्तरी अर्थ)  
 पुण्यं पतितं (होति) - फूल पडलेले आहे. (कर्तरी अर्थ)  
 कङ्गा ठिता (होति) - कन्या उभी राहिलेली आहे. (कर्तरी अर्थ)

### ३. काही भूतकाळवाचक धातुसाधित विशेषण रूपे (कृदन्त) येथे दिली आहेत.

|           |                  |          |               |
|-----------|------------------|----------|---------------|
| कसति      | - कसित, कट्ट     | पिवति    | - पीत         |
| पुच्छति   | - पुच्छित, पुट्ट | चवति     | - चुत         |
| पचति      | - पचित, पक्क     | हनति     | - हत          |
| डसति      | - दट्ट           | निक्खमति | - निक्खन्त    |
| फुसति     | - फुट्ट          | जानाति   | - जात         |
| पविसति    | - पविट्ट         | सुणाति   | - सुत         |
| आमसति     | - आमसित, आमट्ट   | मिनाति   | - मित         |
| लभति      | - लट्ट, लभित     | गण्हाति  | - गहित        |
| आरभति     | - आरट्ट          | किणाति   | - कीत         |
| भवति      | - भूत            | पापुणाति | - पत्त        |
| भुञ्जति   | - भुञ्जित, भुत्त | करोति    | - कत          |
| वपति      | - वुत्त          | तिद्वृति | - ठित         |
| वसति      | - वुथ            | हरति     | - हट          |
| आसिञ्चयति | - आसित्त         | कुञ्जति  | - कुञ्च       |
| खिपति     | - खित्त          | ददाति    | - दिन्न       |
| धोवति     | - धोवित, धोत     | पसीदति   | - पसन्न       |
| पजहति     | - पहीन           | पस्सति   | - दिट्ट (दृश) |
| विवरति    | - विवट           | मुञ्चति  | - मुत्त       |

#### ४. वाक्य प्रयोगाची उदाहरणे:-

१. उपासकेहि विहारं पविष्टो बुद्धो दिष्टो होति ।  
उपासकांद्वारा विहारात (दु.वि.) प्रविष्ट बुद्ध पाहिले गेले.
२. ते बुद्धेन देसितं धम्मं सुणिंसु ।  
त्यांनी बुद्धांद्वारा उपदेशित केलेला धर्म ऐकला.\*
३. दारिकाय आहटानि भण्डानि अम्मा पिटकेसु पक्खिपि ।  
मुलीद्वारा आणल्या गेलेल्या वस्तू आईने टोपल्यांमधे ठेवल्या.
४. वाणिजो पतितस्स रुक्खस्स साखायो छिन्दि ।  
पडलेल्या झाडाच्या फांद्या व्यापान्याने तोडल्या.
५. मयं उदकेन आसित्तेहि पुष्फेहि बुद्धं पूजेम ।  
पाण्याने शिंपडलेल्या फुलांनी आम्ही बुद्धांची पूजा करू.\*
६. कस्सकेन कसिते खेते सूकरो सयति ।  
शेतकऱ्याने कसलेल्या शेतात डुक्कर झोपते.

**सराव - १९**

#### ५. मराठीत भाषांतर करा

१. अम्माय मज्जूसायं पक्खितं सुवण्णं दारिका न गण्हि ।
२. धोतानि वथानि गहेत्वा भरिया उदकम्हा उत्तरि ।
३. कस्सकेहि उद्याने रोपितेसु रुक्खेसु फलानि भविंसु ।
४. बुद्धा देवेहि च नरेहि च पूजिता होन्ति ।
५. उदकेन पूरितं पत्तं गहेत्वा वनिता गेहं आगता होति ।
६. अधम्मेन दीपं पालेन्तेन भूपालेन पीळिता मनुस्सा कुद्धा होन्ति ।
७. पक्कं (पिकलेले) फलं तुण्डेन गहेत्वा उड्हेन्तं सुवं अहं अपसिं ।
८. उदेन्तो सुरियो ब्राह्मणेन नमस्सितो होति ।
९. अम्माय जालितं दीपं आदाय पुत्तो विहारं पविष्टो होति ।
१०. वनिताय दुस्सेन छादिते आसने समणो निसीदित्वा सन्निपतिताय परिसाय धम्मं देसेसि ।
११. कस्सकेन खेतं आनीता गोणा तिणं खादन्ता आहिणिंसु ।
१२. वाणिजा मज्जूसासु ठपितानि दुस्सानि न विकिरणिंसु ।
१३. सचे त्वं सच्चं जानेय्यासि मा पुतं अक्कोस ।

१४. नावाय निक्खन्ता नरा समुद्रं तरित्वा दीपं पापुणित्वा भरियाहि सद्बिं कथेन्ता  
मोदन्ति ।
१५. मगे ठिते वाणिजस्स सकटे अहं कञ्जाय आनीतानि भण्डानि ठपेसिं ।
१६. धम्मेन लङ्घेन धनेन पुते पोसेत्वा जीवन्ता मनुस्सा देवताहि रक्खिता होन्ति ।
१७. सावकेहि च उपासकेहि च परिवारितो बुद्धो विहारस्स छायाय निसिन्नो होति ।
१८. अम्माय पापेहि निवारिता पुता सप्पुरिसा हुत्वा धम्मं सुणन्ति ।
१९. कस्सके पीछेन्ता चोरा पण्डितेन अनुसासिता सप्पुरिसा भवितुं वायमन्ता  
उपासकेही सद्बिं उद्याने रुक्खे रोपेन्ति ।
२०. वनिता पुताय पटियादितम्हा भत्तम्हा खुदाय पीछितस्स याचकस्स थोकं (थोडेसे)  
दत्वा पानीयं च ददि/अदासि ।
२१. सभायं निसीदित्वा दारिकाय गायितं गीतं सुत्वा कञ्जायो मोदिसु ।
२२. अमच्चेन निमन्तिता पुरिसा सालायं निसीदितुं असक्कोन्ता उद्याने सन्निपतिंसु ।
२३. कस्सकेहि खेतेसु वुत्तेहि बीजेहि थोकं सकुणा खादिसु ।
२४. कुमारेहि रुक्खमूले निलीयित्वा सयन्तो सप्पो दिष्टो होति ।
२५. वाणिजेन दीपम्हा आहटानि वथानि किणितुं वनितायो इच्छन्ति ।
२६. सचे भूपालो धम्मेन मनुस्से रक्खेय्य ते कम्मानि कत्वा दारके पोसेन्ता सुखं  
विन्देय्युं ।
२७. पुतेन याचिता अम्मा मित्तानं ओदनं पटियादेसि ।
२८. अमच्चेन पुदुं पञ्चं अधिगन्तुं असक्कोन्तो चोरानं दूतो चिन्तेतुं आरभि ।
२९. चोरेहि गुहायं निलीयितानि भण्डानि पासित्वा वानरा तानि (त्यांना) आदाय रुक्खे  
आरुहिसु ।
३०. अहं परियेसितं धम्मं अधिगन्त्वा मोदामि ।

#### ६. पालीत भाषांतर करा

१. सभेस आलेला माणूस मंच्यांबरोबर बोलण्यासाठी समर्थ झाला नाही.
२. आईद्वारा दिलेले पैसे घेऊन मुलगा दुकानाकडे धावला.
३. घोड्यांद्वारा ओढल्या गेलेल्या रथात राजा बसलेला आहे.
४. शेतकऱ्यांनी विद्वानाशी चर्चा करून दूताला राजाकडे पाठवले.
५. मुले उघड्या दारातून बाहेर निघाली.
६. महिलांनी पाण्यात उतरून, वस्त्रे धुवून, आंघोळ केली.
७. देव आणि मनुष्यांकडून बुद्ध आणि (त्यांचे) शिष्य वंदित असतात.
८. व्यापाच्याने महिलांद्वारा शिवलेले कपडे विकले.

९. मी मुलीद्वारा वनातून आणलेली फुले आणि फळे घेतली नाहीत.
१०. कुन्याद्वारा पाठलाग केलेल्या मुली वेगाने घरी धावल्या.
११. मुलीद्वारा केले गेलेले दुष्कर्म पाहून आचायनि तिला समज दिली.
१२. आम्ही महिलांद्वारा तयार केले गेलेले दिवे जाळले नाहीत.
१३. शेतकऱ्याद्वारा तोडलेल्या फांद्या तू डोंगरातून ओढू नकोस.
१४. केलेल्या कामाचे वेतन न मिळवणारी महिला रागावलेली आहे.
१५. फांदीवर बसलेल्या मुलाकडून फळे मागू नकोस.
१६. ब्राह्मणाद्वारा रागावली गेलेली, रडत असणारी महिला दारात बसलेली आहे.
१७. आईद्वारा बोलावली गेलेली मुलगी भात खाण्यासाठी घरी धावली.
१८. वेली तोडण्यासाठी प्रयत्न करणाऱ्या माणसांनी फांद्या ओढण्यासाठी आरंभ केला.
१९. धर्मनि उपर्जीविका करणारा, शेते नांगरणारा शेतकरी, बायको व मुलांसह सुख अनुभवतो.
२०. देवलोकातून निघून गेलेल्या देवता, मनुष्य लोकात जन्म घेऊन, बुद्धांद्वारा उपदेशित धर्म ऐकत असताना आनंदित होतात.\*
२१. भिक्षुद्वारा उपदेशित चोर सदाचारी झाले.
२२. शेतकऱ्याद्वारा लावल्या गेलेल्या झाडांवर फळे नव्हती.
२३. कुन्याने चावलेली मुलगी घराकडे पळून रडली.
२४. वैद्याद्वारा मंत्री झात नव्हता.
२५. झाडाखाली बसलेल्या मुली वाळूशी खेळल्या.
२६. हे पुत्रांनो, मद्य पिऊ नका.
२७. माता मुलांना दुष्कर्मपासून रोखतात.
२८. तहानेने पीडित कुन्यास मी पाणी दिले.
२९. येत असणाऱ्या शिकायाला पाहत असणारे आम्ही, झाडांमध्ये लपलो.
३०. श्रद्धेने भोजन तयार करून आम्ही भिक्षूंना दिले.

## पाठ - २०

१. इकारान्त स्त्रीलिंगी नामाची विभक्ति रूपेः-

**भूमि - पृथ्वी - जमीन**

|         | एकवचन          | अनेकवचन         |
|---------|----------------|-----------------|
| पठमा    | भूमि           | भूमी, भूमियो    |
| दुतिया  | भूमिं          | भूमी, भूमियो    |
| ततिया   | भूमिया         | भूमीहि (भूमीभि) |
| चतुर्थी | भूमिया         | भूमीनं          |
| पंचमी   | भूमिया         | भूमीहि (भूमीभि) |
| छट्टी   | भूमिया         | भूमीनं          |
| सत्तमी  | भूमिया, भूमियं | भूमीसु          |
| आलपन    | भूमि           | भूमी, भूमियो    |

ईकारान्त स्त्रीलिंगी नामेसुद्धा वरील प्रमाणेच बदलतात. अपवाद फक्त पठमा व आलपन एकवचनी रूपात होतो, ती ईकारान्तीच राहतात.

२. शब्द संग्रहः-

| इकारान्त स्त्रीलिंगी नामे:- |                 | ईकारान्त स्त्रीलिंगी नामे:- |                       |
|-----------------------------|-----------------|-----------------------------|-----------------------|
| अङ्गुलि                     | - बोट           | नदी                         | - नदी                 |
| अटवि                        | - जंगल          | नारी/इत्थी                  | - नारी/स्त्री         |
| रत्ति                       | - रात्र         | तरुणी                       | - तरुणी, युवती        |
| दोणि                        | - छोटी नाव      | भगिनी                       | - बहीण                |
| युवती                       | - युवती         | वापी                        | - टाकी, विहीर         |
| यद्धि                       | - काठी          | पोक्खरणी                    | - पुष्करणी, तळे, तलाव |
| असनि                        | - वीज           | कदली                        | - केळी                |
| नाळि                        | - माप           | ब्राह्मणी                   | - ब्राह्मणाची बायको   |
| रास्मि                      | - किरण          | गावी                        | - गाय                 |
| इळ्ड्हि                     | - ऋळ्ड्हि       | राजिनी/देवी                 | - राणी                |
| सम्मज्जनि                   | - केरसुणी, झाडू | कुमारी                      | - कुमारी              |

**३. क्रियापदे:-**

|             |   |
|-------------|---|
| व्याकरोति   | - स्पष्ट करतो                             |
| पथेति       | - आकांक्षा करतो, आशा करतो, प्रार्थना करतो |
| विस्सज्जेति | - खर्च करतो                               |
| आरोचेति     | - माहिती देतो                             |
| मुञ्चति     | - मुक्त करतो                              |
| नीहरेति     | - बाहर काढतो                              |
| पेसेति      | - पाठवतो                                  |
| पटिच्छादेति | - झाकतो, लपवतो                            |
| वेठेति      | - गुंडाळतो                                |
| विहेठेति    | - त्रास देतो                              |

**सराव - २०****४. मराठीत भाषांतर करा**

१. भूपालो राजिनिया सद्दिं नावाय नदिं तरन्तो उदके चरन्ते मच्छे ओलोकेन्तो अमच्चेहि सद्दिं कथेति ।
२. पानीयं पिवित्वा दारिकाय भूमियं निक्रिखत्तो पत्तो भिन्नो होति ।
३. कस्सकानं गावियो अटवियं आहिण्डित्वा खेतं आगमिंसु ।
४. रत्तिया समुद्रस्मि पतिता चन्दस्स रस्मियो ओलोकेत्वा तरुणियो मोदिंसु ।
५. उपासका इद्धिया आकासे गच्छन्तं तापसं दिस्वा पसन्ना होन्ति ।
६. भगिनिया सद्दिं पोक्खरणिया तीरे ठत्वा सो पदुमानि ओचिनितुं वायमि ।
७. नारियो वापीसु नहायितुं वा (किंवा) वथानि धोवितुं वा न इच्छिसु ।
८. युवतिया पुढुं पज्हं व्याकातुं असक्कोन्तो अहं ताय (तिच्या) सद्दिं सल्लपितुं आरभिं ।
९. असप्पुरिस्सेन पुत्तेन कतं पापकम्मं पटिच्छादेतुं अम्मा न उस्सहि ।
१०. भगिनिया दुस्सेन वेठेत्वा मज्चस्मि ठपितं भण्डं इत्थी मञ्जूसायं पक्रिखपि ।
११. मा तुम्हे मग्गे सयन्तं कुक्कुरं विहेठेथ ।
१२. सप्पुरिसो अमच्यो धनं विस्सज्जेत्वा याचकानं वसितुं सालायो गामेसु करित्वा भूपालं आरोचेसि ।
१३. कुमारो सुवं हृथम्हा मुञ्चित्वा तं उड्हेन्तं पस्समानो रोदन्तो रुक्खमूले अद्वासि ।

१४. सद्वाय दानं ददमाना कुसलं करोन्ता सप्पुरिसा पुन (पुन्हा) मनुस्सलोके उप्पजितुं पत्थेन्ति ।

१५. कुमारो मञ्जूसं विवरित्वा साटकं नीहरित्वा अम्माय पेसेसि ।

#### **५. पालीत भाषांतर करा**

१. राजाच्या उद्यानातील सरोवरांमधे कमळे आणि मासे आहेत.

२. युवर्तींनी तळ्यातून कमळे वेचून जमिनीवर ठेवली.

३. गाणी नावेने नदी पार करून आलेल्या भगिनींशी बोलली.

४. मी शेतामधे गायीचा पाठलाग करणाऱ्या कुव्याला पाहिले.

५. फळे व फुले तोडण्यासाठी स्त्रिया आणि मुली झाडे चढल्या नाहीत.

६. तुम्ही स्नान करण्यासाठी नदीकडे जाऊन, विजेचा कडकडाट ऐकून घावरलात.

७. तुम्ही मित्रांसह केलेले दुष्कर्म लपवू नका.

८. जर तुम्ही कपडे खरेदी करण्यासाठी पैसे खर्च केले तर आईला माहिती द्या.

९. कमळ-पत्रांत गुंडाळलेली कमळे, सभागृहात बसलेल्या युवर्तींसाठी पाठवा.

१०. महिलांनी सभेत विचारलेल्या प्रश्नांचे स्पष्टीकरण आम्ही करू शकतो.

## पाठ - २१

### १. वर्तमानकाळ वाचक धातुविशेषण रूप (चालू):-

हा पाठ अकराव्या पाठाचा पुढचा भाग आहे, म्हणून त्या पाठाबरोबर अभ्यास करावा.

अकराव्या पाठात आपण शिकले की वर्तमानकाळ वाचक धातुविशेषण रूप करताना पुलिंग आणि नपुंसकलिंगामध्ये अकारान्त क्रियापदांना ‘न्त’/‘मान’ लावतात.

उदा.

पच + न्त = पचन्त

पच + मान = पचमान

आणि त्यांची विभक्ति लावून बनवली गेलेली रूपे या दोन लिंगांमध्ये (पुलिंग, नपुंसकलिंग) अकारान्त नामांसारखी चालतात.

आणखी, हे पण लक्षात घेतले पाहिजे, की बहुधा ज्या क्रियापदांचा शेवट ‘ए’ आणि ‘अय’ ने होतो, त्यापैकी ज्याचा शेवट ‘ए’ असतो त्याल ‘न्त’ लागतो, तर ज्याच्या शेवटी ‘अय’ असतो त्याला ‘मान’ लागतो.

उदा.

चोरे + न्त = चोरेन्त

चोरय + मान = चोरयमान

ज्या क्रियापदाच्या शेवटी ‘ना’ असतो त्यांना सामान्यपणे ‘न्त’/‘मान’ दोन्ही लावतात, पण तसे करताना ‘ना’ चा ‘न’ होतो.

उदा.

किणा + न्त = किणन्त

किणा + मान = किणमान

सुणा + न्त = सुणन्त

सुणा + मान = सुणमान

शेवटी ‘न्त’ लावलेली वर्तमानकाळ वाचक धातुविशेषण रूपे ही, ‘मान’ शेवटी असलेल्या रूपांपेक्षा पाली वाढमयामध्ये अधिक सातत्याने आढळतात.

२. स्त्रीलिंगी वर्तमानकाळ वाचक धातुविशेषण रूपे क्रियापदास ‘न्ती’/ ‘माना’ लावून साधली जातात.

**उदा.**

|             |            |
|-------------|------------|
| पच + न्ती   | = पचन्ती   |
| पच + माना   | = पचमाना   |
| चोरे + न्ती | = चोरेन्ती |
| चोरय + माना | = चोरयमाना |
| किणा + न्ती | = किणन्ती  |
| किणा + माना | = किणमाना  |

जेव्हा ‘न्ती’ हा प्रत्यय लागतो तेव्हा स्त्रीलिंगी वर्तमानकाळवाचक धातुविशेषण रूप ईकारान्ती स्त्रीलिंगी नामाग्रमाणे चालते. आणि जेव्हा ‘माना’ लावला जातो तेव्हा ते आकारान्ती स्त्रीलिंगी नामाग्रमाणे चालते.

| एकवचन   | अनेकवचन              |
|---------|----------------------|
| पठमा    | - पचन्ती             |
| दुतिया  | - पचन्ति             |
| ततिया   | - पचन्तिया           |
| चतुर्थी | - पचन्तिया           |
| पंचमी   | - पचन्तिया           |
| छट्टी   | - पचन्तिया           |
| सत्तमी  | - पचन्तिया, पचन्तियं |
| आलपन    | - पचन्ती             |

३. वाक्य प्रयोगाची उदाहरणे:-

**एकवचन**

१. अम्मा भत्तं पचन्ती कऱ्बाय सद्दिं कथेति ।  
भात शिजवत असणारी आई मुलीशी बोलते.
२. कऱ्बा भत्तं पचन्ति अम्मं पस्सति ।  
भात शिजवत असणाऱ्या आईला कन्या पाहते.
३. कऱ्बा भत्तं पचन्तिया अम्माय उदकं देति ।

भात शिजवत असणाऱ्या आईला कन्या पाणी देते.

### अनेकवचन

१. भत्तं पचन्तियो अम्मायो कञ्जाहि सद्बिं कथेन्ति ।

भात शिजवत असणाऱ्या आई मुर्लीशी बोलतात.

२. कञ्जायो भत्तं पचन्तियो अम्मायो पस्सन्ति ।

भात शिजवत असणाऱ्या आईना कन्या पाहतात.

३. कञ्जायो भत्तं पचन्तीनं अम्मानं उदकं देन्ति ।

भात शिजवत असणाऱ्या आईना कन्या पाणी देतात.

वरील प्रमाणे वर्तमानकाळवाचक धातुविशेषण रूप सर्व विभक्त्यांमध्ये, ते ज्या नामाचे विशेषण असते त्या नामाच्या लिंग, वचन आणि विभक्तीप्रमाणे चालते.

### सराव - २१

#### ४. मराठी भाषांतर करा

१. खेते फलानि चोरेन्ती दारिका कस्सकं दिस्वा भायित्वा धावितुं आरभि ।

२. बुद्धस्स सावकेन देसितं धम्मं सुत्वा युवति सच्चं अधिगन्तुं इच्छन्ती अम्माय सद्बिं मन्तेसि ।

३. सयन्तं सुनखं आमसन्ती कुमारी गेहद्वारे निसिन्ना होति ।

४. राजिनी नारीहि पुढे पळ्हे व्याकरोन्ती सभायं निसिन्ना परिसं आमन्तेत्वा कथं कथेसि ।

५. अटविं गन्त्वा रुक्खं छिन्दित्वा साखायो आकहृन्तियो इथियो सिगाले दिस्वा भायिंसु ।

६. गेहद्वारे निसीदित्वा दुसं सिब्बन्ती भगिनी गीतं गायति ।

७. असप्पुरिसो पापकम्मानि पटिच्छादेत्वा उपासकेहि सद्बिं सल्लपन्तो विहारस्मि आसने निसिन्नो होति ।

८. साटकेन वेठेत्वा निलीयितं सुवण्णं पसितुं आकङ्घमाना युवति ओवरकस्स (खोली) द्वारं विवरि ।

९. सचे त्वं मूलं विस्सज्जेतुं इच्छेय्यासि, मा वर्थं किणाहि ।

१०. सचे तुम्हे भूपालस्स दूतं पेसेथ अमच्ये पि आरोचेथ ।

११. कस्सको छिन्ना साखायो खेत्तम्हा नीहरित्वा अटवियं पक्खियपि ।

१२. पोक्खरणिया तीरे ठत्वा कदलिफलं खादन्ती कञ्जा भगिनिया दिन्नं पदुमं गणिह ।

१३. अम्हाकं (आमचे) हत्थपादेसु वीसति (वीस) अङ्गुलियो सन्ति ।
१४. रत्तिया गेहा निक्खमितुं भायन्ती कञ्जा द्वारं न विवरि ।
१५. सच्चे त्वं यद्विया कुकुरं पहरेय्यासि सो डसेय्य ।
१६. मयं सप्पुरिसा भवितुं आकङ्घमाना समणे उपसङ्घम् धम्मं सुत्वा कुसलं कातुं आरभिष्ठ ।
१७. पापकम्मेहि अनुबन्धिता असप्पुरिसा चोरा निरये (नरक) उप्पजित्वा दुक्खं विन्दन्ति ।
१८. मा पुञ्जं परिवज्जेत्वा पापं करोथ, सचे करेय्याथ मनुस्सलोकम्हा चवित्वा दुक्खं विन्दिस्सथ ।
१९. सचे तुम्हे सग्गे उप्पजित्वा मोदितुं पत्थेथ पुञ्जानि करोथ ।
२०. सच्चं जातुं उस्सहन्ता ब्राह्मणा सठायकेहि सह मन्त्यिंसु ।
२१. नारिया पञ्जरे (पिंजरा) पक्खिता सुका कदलिफलं खादन्ता निसिन्ना होन्ति ।
२२. गोणं विहेठेतुं न इच्छन्तो वाणिजो सकटम्हा भण्डानि नीहरित्वा भूमियं निक्खिपित्वा कस्सकं आरोचेसि ।
२३. अटवियं विहरन्ता मिगा च गोणा च वराहा च सीहम्हा भायन्ति ।
२४. समणा सद्वाय उपासकेहि दिन्नं भुजित्वा सच्चं अधिगन्तुं वायमन्ता सीलानि रक्खन्ति ।
२५. रत्तिया निक्खन्ता दोणि नदिं तरित्वा पभाते (प्रभात) दीपं पापुणि ।
२६. गेहस्स छायाय ठत्वा दारिकाय भूमियं निक्खितं ओदनं सुनखो खादितुं आरभि ।
२७. भरियाय नालिया मितं धञ्जं आदाय कस्सको आपणं गतो होति ।
२८. उड्हेन्ते काके दिस्वा वालुकाय च उदकेन च कीळन्ती दारिका हसमाना धावि ।
२९. रथं पाजेतुं (चालविणे) उगगण्हन्तो पुरिसो दक्खिं (हुपार) रथाचरियो भवितुं वायमि ।
३०. विवटम्हा द्वारम्हा निक्खन्ता कुमारा पञ्जरेहि मुत्ता सकुणा विय (सारखा) उव्यानं धाविंसु ।

#### ५. पालीत भाषांतर करा

१. पलंगावर बसलेल्या मुलीने, आईद्वारा दिलेले दूध प्यायले.
२. पाणी आणण्यासाठी घागरी (घट) घेऊन बोलत असणाऱ्या स्त्रिया नदीवर गेल्या.
३. पक्ष्याला त्रास देण्यासाठी इच्छा न करणाऱ्या स्त्रीने त्याला पिंज्यातून सोडले.
४. झाडावरून फळे तोडू न शकणाऱ्या (असक्कोति) बालिकेने शेतकऱ्याला बोलावले.
५. रडत असणाऱ्या बालकाच्या पात्रात दूध नाही (नथ्य).

६. झाडाखाली गात असणाऱ्या मुर्लीनी नाचण्यासाठी सुरुवात केली.
७. शिकारी आणि त्याच्या कुव्यांद्वारा पाठलाग केली गेलेली हरणे वनाकडे पळाली.
८. नफा मिळविण्यासाठी इच्छा करत असणाऱ्या स्त्रियांनी दुकानांमधे कपडे विकले.
९. दिवे जाळण्यासाठी, तेल विकत घेण्यासाठी, मुलगा दुकानातून - दुकानाकडे गेला.
- १० मी झाडाच्या सावलीत बसलेल्या मुर्लीसाठी पेटी दिली.
११. झाडावरून वेल ओढत असणाऱ्या मुर्ली हसल्या.
१२. स्त्रिया आणि मुलांना त्रास देत असणारी ती दुष्ट माणसे आहेत.
१३. आम्ही डोळ्यांनी जमीनीवर पडत असणारी सूर्याची किरणे पाहतो.
१४. घरात शिरत असणाऱ्या सापाला महिलेने काठीने प्रहार करून मारले.
१५. फळे व फुले पेट्यांमधे टाकत असणाऱ्या बहिणी (घराच्या) उघड्या दारात बसल्या.
१६. जर तू पाण्याबाहेर येऊन मुलाला सांभाळशील तर मी तज्यात उतरून आंघोळ करेन.
१७. आम्ही पापकर्म करीत असलेल्या स्त्रियांना रागावून सभागृह सोडले.
१८. बागेत फिरत असणाऱ्या गायी व हरणांना तुम्ही वेधू नका, राजा व राणी रागावतील.
१९. राजा आणि मंत्र्यांनी वेटावर राहत असणाऱ्या लोकांना पीडू नये.
२०. रस्त्यावर फिरत असणाऱ्या, भुकेने पीडित असलेल्या कुव्यांसाठी मी भात दिला.

## **पाठ - २२**

### **१. भविष्यकाळ वाचक कर्मणि धातुसाधितः-**

भविष्यकाळ वाचक कर्मणि धातुसाधित किंवा ज्याल संभावित क्रियारूप असेही म्हणतात ते क्रियापदास ‘तब्ब’/ ‘अनीय’ जोडून तयार होते, बहुधा ‘तब्ब’ जोडताना ‘इ’ सह जोडला जातो. सदर रूपे पुलिंग आणि नपुंसकलिंगात अकारान्त नामाप्रमाणे तर स्त्रीलिंगात आकारान्त नामाप्रमाणे चालतात. ह्या रूपांनी जरूर/आवश्यक/करण्यायोग्य असा अर्थबोध होतो.

उदा.

- पचति - पचितब्ब/पचनीय
- भुज्जति - भुजितब्ब/भोजनीय
- करोति - कातब्ब/करणीय

### **२. वाव्य प्रयोगाची उदाहरणे:-**

१. अम्मा पचितब्बं/पचनीय तण्डुलं (तांदूल) पिटके ठपेसि |  
आईने शिजवण्यायोग्य तांदूल टोपल्यात ठेवले.
२. दारिकाय भुजितब्बं/भोजनीयं ओदनं अहं न भुजिस्सामि |  
मुळीद्वारा खाण्यायोग्य भात मी खाणार नाही.
३. कस्सकेन कातब्बं/करणीयं कमं कातुं त्वं इच्छसि |  
शेतकऱ्याद्वारा करण्यायोग्य काम करण्यासाठी तू इच्छितोस.

## **सराव - २२**

### **३. मराठीत भाषांतर करा**

१. उपासकेहि समणा वन्दितब्बा होन्ति |
२. मञ्जूसाय निकिखपितब्बं सुवण्णं मा मञ्चस्मिं ठपेहि |
३. सप्पुरिसा पूजनीये पूजेन्ति, असप्पुरिसा तथा (तसे) न करोन्ति |
४. भूपालेन रकिखतब्बं दीपं अमच्या न सम्मा (चांगले) पालेन्ति |
५. मनुस्सेहि धम्मो उगण्हितब्बो, सच्चं अधिगन्तब्बं होति |
६. कुमारीहि आहटानि पुष्फानि उदकेन आसिज्जितब्बानि होन्ति |
७. चोरेन गण्हितं भगिनिया धनं परियेसितब्बं होति |
८. उय्याने रोपिता रुक्खा न छिन्दितब्बा होन्ति |
९. धोतब्बानि दुस्सानि गहेत्वा युवतियो हसमाना पोक्खरणिं ओतरिंसु |

१०. समणेहि ओवदितब्बा कुमारा विहारं न गमिंसु ।  
 ११. कस्सकेन कसितब्बं खेतं विक्किणितुं वाणिजो उसहि ।  
 १२. आपणेसु ठपितानि विक्किणितब्बानि भण्डानि किणितुं ते न इच्छिसु ।  
 १३. अम्मा खादनीयानि च भोजनीयानि च पटियादेत्वा दारकानं देति ।  
 १४. मनुस्सेहि दानानि दातब्बानि, सीलानि रक्खितब्बानि, पुञ्जानि कातब्बानि ।  
 १५. गोणानं दातब्बानि तिणानि कस्सको खेतम्हा आहरि ।  
 १६. मिगा पानीयं उदकं परियेसन्ता अटवियं आहिण्डंसु ।  
 १७. दारिकायं दातुं फलानि आपणाय वा खेतम्हा वा आहरितब्बानि होन्ति ।  
 १८. कथेतब्बं वा अकथेतब्बं वा अजानन्तो असप्पुरिसो मा सभायं निसीदतु ।  
 १९. तुम्हे भूपाला, अमच्येहि च पण्डितेहि च समणेहि च अनुसासितब्बा होथ ।  
 २०. उपासकेन पुढो पज्जो पण्डितेन व्याकातब्बो होति ।  
 २१. भूपालस्स उच्याने वसन्ता मिगा च सकुणा च लुद्दकेहि न हन्तब्बा होन्ति ।  
 २२. कुसलं अजानित्वा पापं करोन्ता कुमारा न अक्कोसितब्बा, ते समणेहि च पण्डितेहि च सप्पुरिसेहि च अनुसासितब्बा ।  
 २३. अस्सपुरिसा परिवज्जेतब्बा, मा तुम्हे तेहि सद्धिं (त्यांच्या बरोबर) गामे आहिण्डथ ।  
 २४. सुरा न पातब्बा, सच्चे पिवेय्याथ तुम्हे गिलाना भविस्सथ ।  
 २५. धम्मेन जीवन्ता मनुस्सा देवेहि रक्खितब्बा होन्ति ।

#### ४. पालीत भाषांतर करा

१. रात्री लोकांद्वारा दिवे जाळले गेले पाहिजेत.
२. व्यापाच्याने शेतकच्यांसाठी विकण्यायोग्य घोडे आणले.
३. डोळ्यांद्वारा वस्तू पाहिल्या पाहिजेत, जिभेद्वारा रसाचा स्वाद घेतला पाहिजे.
४. कुत्र्याला काठयांनी व दगडांनी मारू नये.
५. द्वीपामधील माणसे राजा व त्याच्या मंत्र्यांद्वारा रक्षण्यायोग्य आहेत.
६. बागेत फिरत असणाऱ्या माणसांद्वारा फुले तोडण्यायोग्य नाहीत.
७. शेतकच्याद्वारा पल्नीसह धान्य मोजले गेले पाहिजे.
८. माणसांनी पाप करणे योग्य नाही.
९. बैलांना व बकच्यांना गवत व पाणी दिले गेले पाहिजे.
१०. आचार्याच्या भगिनीद्वारा सभा संबोधित केली गेली पाहिजे.
११. गुहांमधे झोपत असणाऱ्या सिंहांजवळ माणसांनी जाऊ नये.
१२. आईचे कपडे मुलीद्वारा धुतले गेले पाहिजेत.

## पाठ - २३

### प्रयोजक( प्रेरणाथक ) क्रियापदे:-

प्रयोजक क्रियापदे मूळ धातुस किंवा त्याच्या पायाभूत रूपास ‘ए’, ‘अय’, ‘आपे’ ‘आपय’ प्रत्यय जोडून केली जातात. काही बाबतीत मूळ धातुमधला स्वर असे प्रत्यय जोडताना दीर्घ होतो. ‘ए’ कारान्त व ‘अय’ कारान्त धातुंना निश्चितपणे ‘आपे’ व ‘आपय’ प्रत्यय लावून प्रयोजक क्रियापद तयार केले जाते. उदा.

|            |                                    |
|------------|------------------------------------|
| पचति       | - पाचेति/पाचयति/पाचापेति/ पाचापयति |
| भुजति      | - भोजेति/भोजापेति                  |
| चोरेति     | - चोरापेति/चोरापयति                |
| किणाति     | - किणापेति/किणापयति                |
| करेति      | - कारेति/कारापयति                  |
| ददाति/देति | - दापेति/दापयति                    |

प्रयोजक क्रियापद असलेल्या वाक्यांमध्ये जो प्रतिनिधी म्हणून कार्य करतो, तो दुतिया किंवा ततिया विभक्तिमध्ये दर्शविला जातो.

### २. वाक्य प्रयोगाची उदाहरणे:-

१. अम्मा भगिनि भत्तं पाचापेति ।  
आई बहिणीकडून भात शिजवून घेते.
२. भूपालो समणे च याचके च भोजापेसि ।  
राजाने श्रमणांना व याचकांना जेवू घातले.
३. चोरो मित्तेन ककचं चोरापेत्वा वनं धावि ।  
मित्राद्वारा करवत चोरी करवून चोर वनाकडे पळाला.
४. वैज्ञो पुतेन आपणम्हा खीरं किणापेसि ।  
वैद्याने पुत्राकडून बाजारातून दूध विकत आणविले.
५. उपासका अमच्येन समणानं विहारं कारापेसुं ।  
उपासकांनी श्रमणांसाठी मंत्र्याकडून विहार बांधवून घेतले.
६. युवती भगिनिया आचरियस्स मूळं दापेत्वा सिष्ण उगणिह ।  
तरुणी भगिनीकडून आचार्याला पैसे देववून शिल्प शिकली.
७. ब्राह्मणो चोरं/चोरेन सच्चं भासापेतुं वायमि ।

ब्राह्मणाने चोराकडून सत्य वदविष्ण्यासाठी प्रयत्न केला.

## सराव - २३

### ३. मराठीत भाषांतर करा

१. अम्मा समणेहि असप्पुरिसे पुत्ते अनुसासापेसि ।
२. तुम्हे मनुस्से पीळेन्ते चोरे आमन्तापेत्वा ओवदथ ।
३. वाणिजो कस्सकेन रुक्खे छिन्दापेत्वा/छेदापेत्वा सकटेन नगरं नेत्वा विकिकणि ।
४. समणो उपासके सन्निपातापेत्वा धर्मं देसेसि ।
५. मातुलो कुमारेहि पुफ्फानि च फलानि च ओचिनापेसि ।
६. दारिका सुनखं पोक्खरणं ओतरापेसि ।
७. अमच्चो वाणिजे च कस्सके च पक्कोसापेत्वा पुच्छिस्सति ।
८. कञ्जाहि आहटानि पुफ्फानि वनितायो आसिज्ज्ञापेसुं ।
९. भरियाय कातबं कम्मं अहं करोमि ।
१०. लुद्को मित्तेन मिंगं विज्ञित्वा मारापेसि ।
११. ब्राह्मणो आचरियेन कुमारिं धर्मं उगण्हापेसि ।
१२. अम्मा दारिकं खीरं पायेत्वा मज्चे सयापेसि ।
१३. वाणिजा असेहि भण्डानि गाहापेत्वा विकिकणितुं नगरं गमिंसु ।
१४. वनिता सहायकेन रुक्खरस्स साखायो आकड्हापेत्वा गेहं नेसि ।
१५. अम्मा पुत्तेन गेहं आगतं समणं वन्दापेसि ।
१६. उपासका समणे आसनेसु निसीदापेत्वा भोजापेसुं ।
१७. भगिनी भिन्नपत्तस्स खण्डानि आमसन्ती रोदन्ती गेहद्वारे अद्वासि ।
१८. उदकं आहरितुं गच्छन्तियो नारियो सल्लपन्तियो रुक्खमूलेसु पतितानि कुसुमानि ओलोकेत्वा मौदिंसु ।
१९. लुद्को तुण्डेन फलं ओचिनितुं वायमन्तं सुवं सरेन विज्ञ ।
२०. सप्पुरिसेन कारापितेसु विहारेसु समणा वसन्ति ।

### ४. पालीत भाषांतर करा

१. दुष्ट माणूस त्याच्या पुत्रांद्वारा पक्ष्यांना वेधवितो.
२. उपासक श्रमणाद्वारा धर्मोपदेश देववतील.
३. महिला त्यांच्या मुलांकडून बुद्धांच्या शिष्यांना वंदन करवून घेतात.\*
४. युवती तिच्या बहिणीद्वारा सभेत भाषण करवेल.

५. शेतकऱ्याने झाड खड्यात पाडवले.
६. तुम्ही फुलांना पाण्याने शिंपडवून घ्याल.
७. राजाने मंत्र्यांकडून विहार बांधवून घेतला.
८. राजाने बांधवून घेतलेल्या प्रासादात राणी राहील.
९. व्यापाऱ्याने त्याच्या पलीकडून वस्तू पेटीत ठेवविल्या.
१०. ब्राह्मणाने बुद्धांच्या शिष्यांकडून आपल्या लोकांना अनुशासित करविले.\*

## पाठ - २४

१. उकारान्त स्त्रीलिंगी नामांची विभक्ति रूपे:-

**धेनु - गाय**

|          | एकवचन          | अनेकवचन        |
|----------|----------------|----------------|
| पठमा     | धेनु           | धेनू, धेनुयो   |
| द्वितिया | धेनुं          | धेनू, धेनुयो   |
| ततिया    | धेनुया         | धेनूहि, धेनूभि |
| चतुर्थी  | धेनुया         | धेनूनं         |
| पञ्चमी   | धेनुया         | धेनूहि, धेनूभि |
| छट्टी    | धेनुया         | धेनूनं         |
| सत्तमी   | धेनुया, धेनुयं | धेनूसु         |
| आलपन     | धेनु           | धेनू, धेनुयो   |

२. वरील प्रमाणे प्रत्यय लागणारी आणखी काही नामे

|        |                  |       |                              |
|--------|------------------|-------|------------------------------|
| यागु   | - (भाताची) पेज   | कणेरु | - हत्तीण                     |
| कासु   | - खड्डा          | धातु  | - मूलद्रव्य, देहावशेष, अस्थी |
| विज्जु | - वीज            | ससु   | - सासू                       |
| रज्जु  | - दोर, दोरखंड    | वधु   | - सून                        |
| ददु    | - खरूज (चर्मरोग) |       |                              |

३. शब्द संग्रह - क्रियापदे

|           |                      |          |                       |
|-----------|----------------------|----------|-----------------------|
| थकेति     | - बंद करतो           | नासेति   | - नष्ट करतो           |
| भजति      | - सोबत करतो          | ओभासेति  | - प्रकाशित करतो       |
| सम्मज्जति | - झाडतो              | बन्धति   | - बांधतो              |
| विभजति    | - विभाजन करतो, वाटतो | भजति     | - तोडतो, फोडतो        |
| मापेति    | - बांधतो, निर्मितो   | विहिंसति | - ईजा करतो, पीडा देतो |
| छहेति     | - फेकतो              | पत्थरति  | - पसरवतो              |

## सराव - २४

## ४. मराठीत भाषांतर करा

१. वधू ससुया धेनुं रज्जुया बन्धित्वा खेतं नेसि ।
२. अम्मा यागुं पचित्वा दारकानं दत्वा मज्चे निसीदि ।
३. युवतिया हत्थेसु च अङ्गुलीसु च दहु अथि ।
४. मयं अटवियं चरन्तियो कणेरुयो अपस्सिम्ह ।
५. इत्थी युवतिया भतं पाचापेत्वा दारिकानं थोकं थोकं विभजि ।
६. तुम्हे विज्जुया आलोकेन गुहायं सयन्तं सीहं पस्सित्थ ।
७. युवतिया हत्थेसु कुमारेहि दिन्ना मालायो सन्ति ।
८. वधू खेते कासूसु पतितानि फलनि संहरि ।
९. ब्राह्मणो बुद्धस्स धातुयो विभजित्वा भूपालानं अददि/अदासि ।
१०. वधू ससुया पादे वन्दि ।
११. युवतिया गेहं सम्मज्जितब्बं होति ।
१२. देवतायो सकलं विहारं ओभासेन्तियो बुद्धं उपसङ्घमिंसु ।
१३. अटवीसु वसन्तियो कणेरुयो साखायो भज्जित्वा खादन्ति ।
१४. अहं रुक्खस्स छायायं निसिन्नानं धेनूनं च गोणानं च तिणानि अददिं/अदासिं ।
१५. इत्थी मरगे गच्छन्ति अम्मं पस्सित्वा रथम्हा ओरुह तं वन्दित्वा रथस्मि आरोपेत्वा गेहं नेसि ।
१६. वधू गेहस्स द्वारं थकेत्वा नहायितुं नदिं उपसङ्घमित्वा युवतीहि सद्बिं सल्लपन्ती नदिया तीरे अड्डासि ।
१७. भूपालो मनुस्से विहिंसन्ते चोरे नासेत्वा दीपं पालेसि ।
१८. अम्मा असप्पुरिसे भजमाने पुते समणेहि ओवादापेसि ।
१९. सप्पुरिसेन किणित्वा आहटेहि भण्डेहि छड्हेतब्बं नथि ।
२०. मा तुम्हे गामे वसन्ते कस्सके विहिंसथ ।

## ५. पालीत भाषांतर करा

१. आईने पेटीत ठेवलेले सोने घेवून मुलीला दिले.
२. सुनेने माळा आणि फळांद्वारे देवांना पूजले.
३. जर तू खड्हे खणशील, तर मी झाडे लावीन.
४. तुम्ही शेतास जाऊन धान्य घरी आणा.
५. हत्तिणी केळीची झाडे खात असताना वनात हिंडल्या.

- 
- ६. नावेने नदी पार करत असणाऱ्या मुर्लीना मी पाहिले.
  - ७. तरुणीनी खड्डयात पडलेल्या फांद्या खेचल्या.
  - ८. सूर्याचे किरण जगाला प्रकाशित करतात.
  - ९. गाणी गात असणाऱ्या बहिणी आंघोळीसाठी तज्याकडे गेल्या.
  - १०. स्त्रीने गायीला दोराने बांधून शेताकडे आणले.
  - ११. सून सासूसह बुद्धधातूस वंदन करण्यासाठी अनुराधपूरला गेली.
  - १२. शील आणि प्रज्ञा जगातल्या लोकांची मने प्रकाशमान करोत.

## पाठ - २५

**१. इकारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे:-**

**अग्नि - आग**

| एकवचन    | अनेकवचन                       |
|----------|-------------------------------|
| पठमा     | अग्नि                         |
| द्वितीया | अग्निं                        |
| तृतीया   | अग्निना                       |
| चतुर्थी  | अग्निनो, अग्निस्स             |
| पञ्चमी   | अग्निना, अग्निष्ठा, अग्निस्मा |
| छट्टी    | अग्निनो, अग्निस्स             |
| सत्तमी   | अग्निस्मि, अग्निष्मि          |
| आलपन     | अग्नि                         |

**२. काही इकारान्त पुलिंगी नामे:-**

|          |                 |        |                 |
|----------|-----------------|--------|-----------------|
| मुनि/इसि | - मुनि/ऋषि      | कपि    | - माकड          |
| कवि      | - कवी           | अहि    | - साप           |
| अरि      | - शत्रू         | दीपि   | - चिता          |
| भूपति    | - राजा          | रवि    | - सूर्य         |
| पति      | - पती, मालक     | गिरि   | - टेकडी         |
| गहपति    | - गृहस्थ        | मणि    | - रत्न          |
| अधिपति   | - सरदार, नेता   | असि    | - तलवार         |
| अतिथी    | - पाहुणा        | रासि   | - ढीग           |
| व्याधि   | - रोग           | पाणि   | - तळहात         |
| उदधि     | - सागर          | कुच्छि | - कूस, उदर, पोट |
| निधि     | - (गुप्त) खजिना | मुढ्डि | - मूठ, हातोडा   |
| वीहि     | - भात (पीक)     |        |                 |

## सराव - २५

## ३. मराठीत भाषांतर करा

१. मुनयो सीलं रक्खन्ता गिरिम्हि गुहासु वसिंसु ।
२. आचरियेन सद्धिं विहरन्तो कवि इसि होति ।
३. भूपति असिना अरि पहरित्वा मारेसि ।
४. पति भरियाय पटियादितं ओदनं भुञ्जित्वा खेतं अगमि ।
५. सप्पुरिसा गहपतयो भरियाहि च पुतेहि च गेहेसु वसन्ता सुखं विन्दन्ति ।
६. निथं परियेसन्तो अधिपति सहायकेहि सद्धिं दीपं अगच्छि ।
७. अतिथिनं ओदनं पचन्ती इत्थी अगिं जालेसि ।
८. व्याधिना पीळितो नरो मज्चे सयति ।
९. गहपति विहीनं रासिं मिनन्तो भरियाय सद्धिं कथेसि ।
१०. दारिका गिरिम्हा उदेन्तं रविं ओलोकेन्ती हसन्ति ।
११. भूपतिनो मुट्टिम्हि मणयो भवन्ति ।
१२. अरि कविनो सोणं यद्विया पहरित्वा धावि ।
१३. कवि पतिना दिन्नं मणिं पाणिना गण्हि ।
१४. नारियो पतीहि सद्धिं उदधिं गन्त्वा नहायितुं आरभिंसु ।
१५. अधिपति अतिथिं खादनीयेहि च भोजनीयेहि च भोजापेसि ।
१६. भूपतिना कातब्बानि कम्मानि अधिपतयो न करिसन्ति ।
१७. मुनीहि परियेसितब्बं धर्मं अहं पि उगण्हितुं इच्छामि ।
१८. अहं दीपं जालेत्वा उदकेन आसित्तानि पदुमानि बुद्धरस्स पूजेमि ।
१९. त्वं गिरिम्हि वसन्ते दीपयो ओलोकेतुं लुद्धकेन सह गिरि आरुहसि ।
२०. देवी परिसाय सह सभायं निसिन्ना होति ।
२१. गहपतयो पञ्चे पुच्छितुं आकङ्क्षमाना इसिं उपसङ्कमिंसु ।
२२. गहपतीहि पुट्टो इसि पञ्चे व्याकरि ।
२३. नारिया धोतानि वथानि गण्हन्ते कपयो दिस्वा कुमारा पासाणेहि ते पहरिंसु ।
२४. उय्याने आहिण्डित्वा तिणं खादन्तियो गावियो च गोणा च अजा च अटविं पविसित्वा दीपिं दिस्वा भायिंसु ।
२५. गहपतीहि मुनयो च अतिथयो च भोजेतब्बा होन्ति ।
२६. अम्मा मज्जूसाय पक्खिपित्वा रक्खिते मणयो दारिकाय च वधुया च अददि/ अदासि ।

२७. यदि तुम्हे भूपतिं उपसङ्कमेय्याथ मयं रथं पटियादेस्साम |  
 २८. गहपति चोरं गीवाय गहेत्वा पादेन कुच्छि पहरि |  
 २९. सकुणेहि कतानि कुलावकानि (घरटी) मा तुम्हे भिन्दथ |  
 ३०. गीतं गायन्ती युवति गाविं उपसङ्कम्म खीरं दुहितुं (धार काढणे) आरभि |  
 ३१. बुद्धस्स धातुयो वन्दितुं मयं विहारं गमिष्ठ |  
 ३२. मयं कञ्जायो धम्मसालं सम्भजित्वा किलज्जासु (गालिचा) निसीदित्वा धम्मं सुषिष्ठ |  
 ३३. मयं लोचनेहि रूपानि पस्साम, सोतेहि (कानानी) सदं सुणाम, जिव्हाय रसं सादियाम |  
 ३४. ते अटविया आहिण्डन्तियो गावियो रज्जूहि बन्धित्वा खेतं आनेसुं |  
 ३५. भरिया व्याधिना पीछितस्स पतिनो हथं आमसन्ती तं (त्याला) समस्सासेसि |  
 ३६. गहपति अतिथिना सद्ब्रिं सल्लपन्तो सालाय निसिन्नो होति |  
 ३७. मुनि सच्चं अधिगन्त्वा मनुस्सानं धम्मं देसेतुं पब्बतम्हा ओरुह गामे विहारे वसति |  
 ३८. रज्जुया बन्धिता गावी तत्थ तत्थ (इकडे तिकडे) आहिण्डितुं असक्कोन्ती रुक्खमूले तिणं खादति |  
 ३९. देवी भूपतिना सद्ब्रिं रथेन गच्छन्ती अन्तरामग्गे (वाटेवर) कसन्ते कस्सके पास्सि |  
 ४०. मा तुम्हे अकुसलं करोथ, सचे करेय्याथ सुखं विन्दितुं न लभिस्सथ |

#### ४. पालीत भाषांतर करा

१. पर्तीनी वेटाहून पर्लीसाठी रत्ने आणली.
२. व्याधी जगात राहत असणाऱ्या लोकांना पीडतात.
३. स्त्रीने जमीनीवर बसून मापाने भात मोजले.
४. दुष्कर्म करत असणारे गृहस्थ ऋषींना पूजत नाहीत.
५. जर तुम्ही खजिना खोदलात तर तुम्हाला रत्ने मिळतील.
६. पल्नीने धुण्यायोग्य कपडे मी धुतले.
७. आईने तयार केलेली पेज आम्ही प्यायलो.
८. तू नगराहून येत असणाऱ्या पाहुण्यांसाठी भात व पेज शिजवण्यासाठी आग पेटव.
९. गृहस्थाने घरात प्रवेश केलेल्या चोरावर तलवारीने प्रहार केला.
१०. युवतीने झाडाच्या सावलीत उभ्या असणाऱ्या गाईसाठी गवत दिले.

११. माकडे झाडांवर राहतात, सिंह गुहांमधे झोपतात, साप जमिनीवर फिरतात.
- १२.जर तू शहरातून वस्तू खरेदी करून आणशील तर मी त्या (तानि) शेतकऱ्यांना विकेन.
१३. हे दुष्ट माणसा, जर तू पुण्य करशील तर तू सुख भोगशील.
१४. माझ्या आईच्या घरी पेट्यांमधे रले आणि सोने आहे.
१५. मुनीने जमिनीवर बसलेल्या राजाच्या परिजनांसाठी धर्मोपदेश केला.
१६. श्रमण, ऋषी व कवी सद्गुणी लोकांद्वारा सन्मानित होतात.
१७. नेत्याद्वारा रक्षिलेला खजिना आम्हाला मिळेल.
१८. बागेत लावलेल्या झाडांच्या फांद्या तोडू नका.
१९. पिंजऱ्यातून सोडलेले पक्षी आकाशात उडाले.
- २०.सिद्धीने नदी ओलांडत असणाऱ्या ऋषींना आम्ही पाहिले नाही.

## पाठ - २६

१. ईकारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे:-

**पक्खी - पक्षी**

| एकवचन   | अनेकवचन                        |
|---------|--------------------------------|
| पठमा    | पक्खी                          |
| दुतिया  | पक्खिनं, पक्खिं                |
| ततिया   | पक्खिना                        |
| चतुर्थी | पक्खिनो, पक्खिस्स              |
| पञ्चमी  | पक्खिना, पक्खिम्हा, पक्खिस्मा  |
| छट्टी   | पक्खिनो, पक्खिस्स              |
| सत्तमी  | पक्खिनि, पक्खिम्हि, पक्खिस्मिं |
| आलपन    | पक्खी                          |

टीप: वरील विभक्ति रूपे अग्गि (ईकारान्त पुलिंगी नाम) च्या विभक्ति रूपापेक्षा फक्त पठमा, दुतिया व आलपनात वेगळी आहेत. इतर त्यासारखीच आहेत. अपवाद फक्त सत्तमी एक वचनातील ‘पक्खिनि’ आहे.

२. काही ईकारान्त पुलिंगी नामे:-

|           |                      |         |                     |
|-----------|----------------------|---------|---------------------|
| हत्थी/करी | - हत्ती              | दाठी    | - सुळे असलेला हत्ती |
| सामी      | - सरदार, पती, स्वामी | दीघजीवी | - दीर्घजीवी         |
| सेट्टी    | - शेठ, सावकार        | बली     | - बलवान             |
| सुखी      | - आनंदित             | वड्की   | - सुतार             |
| मन्ती     | - मंत्री             | सारथी   | - सारथी             |
| सिखी      | - मोर                | कुट्टी  | - कुष्ठी, कुष्ठरोगी |
| पाणी      | - प्राणी             | पापकारी | - पापी              |

## सराव - २६

## ३. मराठीत भाषांतर करा

१. पक्खी गायन्तो साखायं निसीदति ।
२. गाविं रज्जुया मुञ्चमाना अम्मा खेते ठिता होति ।
३. कञ्जायो सभायं नच्चन्तियो गायिंसु ।
४. सेढ्ही महन्तं (पुष्कळ) धनं विस्सज्जेत्वा समणानं विहारं कारापेसि ।
५. हस्तिनो च कणेरुयो च अटवियं आहिण्डन्ति ।
६. पापकारी पापानि पटिच्छादेत्वा सप्पुरिसो विय (सारखे) सभायं निसिन्नो सेढ्हिना सद्धिं कथेसि ।
७. सप्पुरिसा दीघजीविनो होन्तु, पुत्ता सुखिनो भवन्तु ।
८. वाणिजो नगरम्हा भण्डानि किणित्वा पिटकेसु पक्खिपित्वा रज्जुया बन्धित्वा आपणं पेसेसि ।
९. सारथिना आहटे रथे वड्हकी निसिन्नो होति ।
१०. सब्बे पाणिनो दीघजीविनो न भवन्ति/होन्ति ।
११. अम्मा वड्हकिना गेहं कारापेत्वा दारिकाहि सह तत्थ (तेथे) वसि ।
१२. मयं मणयो वथेन वेठेत्वा मञ्जूसायं निक्खिपित्वा भरियानं पेसयिम्ह ।
१३. मुनि पापकारिं पक्कोसापेत्वा धम्मं देसेत्वा ओवदि ।
१४. बलिना भूपतिनो दिन्नं करिं ओलोकेतुं तुम्हे सन्निपतित्थ ।
१५. अहं सेढ्ही कुड्हिं पक्कोसापेत्वा भोजनं दापेसिं ।
१६. सचे गिरिम्हि सिखिनो वसन्ति, ते (त्याना) पस्सितुं अहं गिरिं आरुहितुं उम्सहिस्सामि ।
१७. भूपति सप्पुरिसो अभवि/अहोसि; मन्तिनो पापकारिनो अभविंसु/अहेसुं ।
१८. बलिना कारापितेसु पासादेसु सेढ्हिनो पुत्ता न वसिंसु ।
१९. सब्बे पाणिनो सुखं परियेसमाना जीवन्ति, कम्मानि करोन्ति ।
२०. सामी मणयो च सुवण्णं च किणित्वा भरियाय अददि/अदासि ।
२१. असनिसद्दं (विजेचा आवाज) सुत्वा गिरिम्हि सिखिनो नच्यितुं आरभिंसु ।
२२. मा बलिनो पापकारी होन्तु/भवन्तु ।
२३. सप्पुरिसा कुसलं करोन्ता, मनुस्सेहि पुञ्जं कारेन्ता, सुखिनो भवन्ति ।
२४. कवि असिना अरिं पहरी कविं पहरितुं असक्कोन्तो अरि कुद्धो अहोसि ।
२५. कपयो रुक्खेसु चरन्ता पुफ्फानि च छिन्दिंसु ।

#### ४. पालीत भाषांतर करा

१. दुष्ट शिकायाद्वारा पाठलाग केलेले हत्ती वनात पळाले.
२. पतीद्वारा दिलेली वस्त्रे कुष्ठरोग्याने घेतली.
३. वनात राहत असणारे चित्ते, गुहांमध्ये राहत असणाऱ्या सिंहांना घावरत नाहीत.
४. गाणे गात असणारी मुळे सभागृहात मुर्लीबरोबर नाचली.
५. आईनी आपल्या मुर्लीसह पुष्पासनावर (पुफ्फासने) कमळे पसरविली.
६. जर मुळे मद्य पितील तर मुली रागावून गाणार नाहीत.
७. शेतात चरत असणाऱ्या गाईना त्रास देणाऱ्या दुष्टाला शेतकरी रागावला.
८. श्रेष्ठीने मुलांसाठी सुताराकडून महाल बांधविला.
९. धर्माने ढीपावर राज्य करत असणाऱ्या चांगल्या राजाचे देवता रक्षण करोत.
१०. सर्व प्राणी सुखी दीर्घायुषी होवोत.

## पाठ - २७

१. उकारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे:-

**गरु - शिक्षक, गुरु**

| एकवचन    | अनेकवचन          |
|----------|------------------|
| पठमा     | गरु              |
| द्वितिया | गरुं             |
| ततिया    | गरुना            |
| चतुर्थी  | गरुनो, गरुस्स    |
| पंचमी    | गरुना            |
| छट्टी    | गरुनो, गरुस्स    |
| सत्तमी   | गरुम्हि, गरुस्मि |
| आलपन     | गरु              |
|          | गरु, गरवो        |
|          | गरु, गरवो        |
|          | गरुहि, गरुभि     |
|          | गरुनं            |
|          | गरुहि, गरुभि     |
|          | गरुनं            |
|          | गरुसु            |
|          | गरु, गरवो        |

२. काही उकारान्त पुलिंगी नामे:-

|       |                    |        |                |
|-------|--------------------|--------|----------------|
| भक्खु | - भिक्षु           | आखु    | - उंदीर        |
| बंधु  | - भाऊबंध, नातेवाईक | उच्छु  | - ऊस           |
| तरु   | - झाड              | वेलु   | - वेलू, बांबू  |
| बाहु  | - बाहू, हात        | कटच्छु | - पळी, चमचा    |
| सिंधु | - समुद्र, सागर     | सत्तु  | - शत्रू, वैरी  |
| फिरसु | - कुन्हाड          | सेतु   | - पूल          |
| पसु   | - पशु              | केतु   | - पताका, झेंडा |
|       |                    | सुसु   | - पिल्लू, बाल  |

ऊकारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे:-

### विदू - विद्वान

| एकवचन  | अनेकवचन |
|--------|---------|
| पठमा   | विदू    |
| दुतिया | विदुं   |
| आलपन   | विदू    |

‘विदू’ ची इतर विभक्ति रूपे ‘गरु’ च्या विभक्ति रूपासारखी आहेत.

#### ४. काही ऊकारान्त पुलिंगी नामे:-

|          |                  |
|----------|------------------|
| पभू      | - प्रमुख व्यक्ती |
| सब्बञ्जू | - सर्वज्ञ        |
| विञ्जू   | - ज्ञाता, जाणकार |
| वदञ्जू   | - उदार, परोपकारी |
| अथञ्जू   | - दाता, दयाळू    |
| मत्तञ्जू | - संयमी          |

### सराव - २७

#### ५. मराठीत भाषांतर करा

१. भिक्खवो तथागतस्स सावका होन्ति ।
२. बन्धवो अम्मं पस्सितुं नगरम्हा गामं आगमिंसु ।
३. चोरो अरञ्जे तरवो छिन्दितुं फरसुं आदाय गच्छ/अगमि ।
४. सीहा च दीपयो च अटवियं वसन्ते पसवो मारेत्वा खादन्ति ।
५. सप्पुरिसा विज्ञुनो भवन्ति ।
६. भूपति मन्तीहि सद्धिं सन्धुं तरित्वा सत्तवो पहरित्वा जिनितुं उस्सहि ।
७. अम्मा कटच्छुना दारिकं ओदनं भोजापेसि ।
८. हस्थिनो च कणेरुयो च उच्छवो आकहित्वा खादिंसु ।
९. भूपतिस्स मन्तिनो सत्तूनं केतवो आहरिंसु ।
१०. सेतुम्हि निसिन्नो बन्धु तरुनो साखं हथेन आकहिं ।
११. उव्याने रोपितेसु वेळूसु पक्खिनो निसीदित्वा गायन्ति ।

१२. सचे पभुनो अत्थञ्जू होन्ति मनुस्सा सुखिनो गामे विहरितुं सक्कोन्ति ।  
 १३. सब्बञ्जू तथागतो धम्मेन मनुस्से अनुसासति ।  
 १४. मत्तञ्जू सप्पुरिसा दीघजीविनो च सुखिनो च भवेयुं ।  
 १५. विञ्जूहि अनुसासिता मयं कुमारा सप्पुरिसा भवितुं उस्सहिम्ह ।  
 १६. मयं रविनो आलोकेन आकासे उडेन्ते पक्खिनो पस्सितुं सक्कोम ।  
 १७. तुम्हे पभुनो हुत्वा धम्मेन जीवितुं वायमेय्याथ ।  
 १८. अहं धम्मं देसेन्तं भिक्खुं जानामि ।  
 १९. अहयो आख्वो खादन्ता अटविया वम्मिकेसु (वारूळ) वसन्ति ।  
 २०. वनिताय सस्सु भगिनिया उच्छवो च पदुमानि च अददि/अदासि ।

#### ७. पालीत भाषांतर करा

१. पूल ओलांडून शत्रुने द्वीपात प्रवेश केला.
२. तुम्ही कुहाडीनी बांबू तोडू नका, करवतीने कापा.
३. राजाच्या मंत्र्यांनी पुलावर व वृक्षांवर पताका बांधल्या.
४. पशुंनी पिल्लांना उंदीर खाऊ घातले.
५. जाणकार माणसे प्रमुख व्यक्ती झाल्या.
६. भिक्षू द्वीपावर राज्य करत असणाऱ्या राजाचा नातेवाईक होता.
७. शत्रुद्वारा तोडलेली झाडे समुद्रात पडली.
८. मुलीला चावण्याचा प्रयत्न करत असणाऱ्या कुव्याला आईने मुठीने मारले.
९. राजे द्वीपात राहत असणाऱ्या श्रमण, ब्राह्मण, मनुष्य व पशुंना सांभाळतात.
१०. आईच्या बहिणीने बांबूने उंदरास मारले.
११. शिक्षकाने हत्तीच्या पिलांसाठी ऊस पाठविले.
१२. घरात शिरण्यासाठी प्रयत्न करत असणाऱ्या वानराला पाहून पतीने दार बंद केले.

## पाठ - २८

### १. 'उ' / 'अर' -कारान्त पुलिंगी नामाची विभक्ति रूपे:-

काही नामांच्या धातूसाधितांचा शेवट 'उ' / 'अर' ह्या दोन प्रत्ययांनी होतो. अशी नामे कारक किंवा नाते दर्शवितात.

**सत्थु/सत्थर - शिक्षक (शाब्दिक अर्थ - शास्ता, जो उपदेश देतो तो)**

| एकवचन   | अनेकवचन                  |
|---------|--------------------------|
| पठमा    | सत्था                    |
| दुतिया  | सत्थारं                  |
| ततिया   | सत्थारा                  |
| चतुर्थी | सत्थु, सत्थुनो, सत्थुस्स |
| पंचमी   | सत्थारा                  |
| छट्टी   | सत्थु, सत्थुनो, सत्थुस्स |
| सत्तमी  | सत्थरि                   |
| आलपन    | सत्था, सत्थ              |
|         | सत्थारे                  |
|         | सत्थारे                  |
|         | सत्थारेहि, सत्थूहि       |
|         | सत्थारानं, सत्थूनं       |
|         | सत्थारेहि, सत्थूहि       |
|         | सत्थारानं, सत्थूनं       |
|         | सत्थारेसु, सत्थूसु       |
|         | सत्थारे                  |

### २. वरील प्रमाणेच चालणारे काही शब्द.

|       |                  |          |                                     |
|-------|------------------|----------|-------------------------------------|
| कतु   | - करणारा, कर्ता  | जेतु     | - जेता, विजेता                      |
| गन्तु | - जाणारा         | विनेतु   | - शिस्तीची शिकवण देणारा,<br>अनुशासक |
| सोतु  | - श्रोता, ऐकणारा | विज्ञातु | - जाणकार                            |
| दातु  | - दाता, देणारा   | भतु      | - पती                               |
| नेतु  | - नेता           | नतु      | - नातू                              |
| वतु   | - वक्ता          |          |                                     |

टीप :- 'भतु' व 'नतु' ही नाते दर्शविणारी नामे आहेत. तरी ती संस्कृत भाषेप्रमाणेच कारक म्हणून 'सत्था' या नामप्रमाणे चालतात.

## ३. नाते दर्शविणारी काही पुलिंगी नामे:-

उदा. 'पितु' (पिता) आणि 'भातु' (भाऊ) थोडे वेगळे चालतात.

## पितु/पितर - पिता, भातु/भातर - भाऊ

|          | एकवचन  | अनेकवचन                            |
|----------|--|------------------------------------|
| पठमा     | पिता भाता                                      | पितरो भातरो                        |
| द्वितीया | पितरं भातरं,                                   | पितरो भातरो                        |
| तृतीया   | पितरा भातरा,                                   | पितरेहि,पितूहि भातरेहि,भातूहि      |
| चतुर्थी  | पितु, पितुनो, पितुस्स<br>भातु, भातुनो, भातुस्स | पितरानं, पितूनं<br>भातरानं, भातूनं |
| पंचमी    | पितरा भातरा,                                   | पितरेहि, पितूहि भातरेहि, भातूहि    |
| छट्टी    | पितु, पितुनो, पितुस्स<br>भातु, भातुनो, भातुस्स | पितरानं, पितूनं<br>भातरानं, भातूनं |
| सत्तमी   | पितरि भातरि,                                   | पितरेसु, पितूसु भातरेसु, भातूसु    |
| आलपन     | पिता, पित, भाता, भात                           | पितरो, भातरो                       |

## ४. नाते दर्शविणाच्या स्त्रिलिंगी नामाची विभक्ति रूपे खालीप्रमाणे आहेत.

## मातु/मातर - माता, आई

|          | एकवचन                 | अनेकवचन                 |
|----------|-----------------------|-------------------------|
| पठमा     | माता                  | मातरो                   |
| द्वितीया | मातरं                 | मातरो                   |
| तृतीया   | मातरा, मातुया         | मातरेहि, मातूहि         |
| चतुर्थी  | मातु, मातुया, माताय   | मातरानं, मातूनं, मातानं |
| पंचमी    | मातरा, मातुया         | मातरेहि, मातूहि         |
| छट्टी    | मातु, मातुया, माताय   | मातरानं, मातूनं, मातानं |
| सत्तमी   | मातरि, मातुया, मातुयं | मातरेसु, मातूसु         |
| आलपन     | माता, मात, माते       | मातरो                   |

'धीतु' (मुलगी) आणि 'दुहितु' (मुलगी) सुद्धा वरील प्रमाणेच चालतात.

## सराव - २८

## ५. मराठीत भाषांतर करा

१. सत्था भिक्खूनं धम्मं देसेन्तो रुक्खस्स छायाय निसिन्नो होति ।
२. पुञ्जानि कत्तारो भिक्खूनं च तापसानं च दानं देन्ति ।
३. सचे सत्था धम्मं देसेच्य विज्ञातारो भविस्सन्ति ।
४. भूपति दीपस्मि जेता भवतु ।
५. पिता धीतरं आदाय विहारं गन्त्वा सत्थारं वन्दपेसि ।
६. विज्ञातारो लोके मनुस्सानं नेतारो होन्तु/भवन्तु ।
७. भाता पितरा सद्धिं मातुया पचितं यागुं भुञ्जि ।
८. भत्ता नत्तारेहि सह कीळन्तं कपिं दिस्वा हसन्तो अट्टासि (उभा राहिला) ।
९. सेतुं कत्तारो वेळवो बन्धित्वा नदिया तीरे ठपेसुं ।
१०. सिन्धुं तरित्वा दीपं गन्तारो सत्तूहि हता होन्ति ।
११. भरिया भत्तु साटके रजकेन धोवापेसि ।
१२. नेतुनो कथं सोतारो उय्याने निसिन्ना सुरियेन पीळिता होन्ति ।
१३. दातारेहि दिन्नानि वथानि याचकेहि न विक्रिणितब्बानि होन्ति ।
१४. रोदन्तस्स नत्तुस्स कुञ्जित्वा वनिता तं (त्याला) हत्थेन पहरि ।
१५. विनेतुनो ओवदं (सल्ला) सुत्वा बन्धवो सप्पुरिसा अभविंसु/अहेसुं ।
१६. गेहेसु च अटवीसु च वसन्ते आखवो आहयो खादन्ति ।
१७. नत्ता मातरं यागुं याचन्तो भूमियं पतित्वा रोदति ।
१८. तुम्हे भातरानं च भगिनीनं च मा कुञ्जाथ ।
१९. दीपं गन्तारेहि नावाय सिन्धुं तरितब्बो होति ।
२०. पुब्बका (प्राचीन) इसयोमन्तानं (मंत्र) कत्तारो च मन्तानं पवत्तारो (पठण) च अभविंसु/अहेसुं ।
२१. मत्तञ्जू दाता नत्तारानं थोकं थोकं मोदके (मिष्टान्न) ददिंसु/अदंसु ।
२२. अत्थञ्जू नेतारो मनुस्से सप्पुरिसे करोन्ता विनेतारो भवन्ति ।
२३. माता धीतरं ओवदन्ती सीसं (डोके) चुम्बित्वा बाहुं आमसित्वा समस्सासेसि ।
२४. वदञ्जू ब्राह्मणो खुदाय पीळिते याचके दिस्वा पहूतं (भरपुर, खुप) भोजनं दापेसि ।
२५. सारथिना आहटे वेळवो गहेत्वा वळूकी सालं मापेसि ।

**६. पालीत भाषांतर करा**

१. वडिल व आई भावाबरोबर वहिणीला पाहण्यासाठी गेले.
२. पापकारी, सुखी (व) दीर्घायुषी होणार नाहीत.
३. राजा त्याच्या दलासह विजयी होवो.
४. आईचा भाऊ मामा असतो.
५. माझ्या भावांच्या शत्रूंनी, झाडांवर व बाबूंवर पताका बांधल्या.
६. घर बांधणाऱ्याने नातवांना वेळू दिले.
७. भावाने मुलीला चमच्याने भात दिला.
८. बुद्ध देवांचा आणि मनुष्यांचा शास्ता आहे.
९. तुम्ही सत्यवादी व्हा.
१०. चांगले पती त्यांच्या पर्नीप्रति देवतांसारखे कारुणिक असतात.
११. द्वीपाचे शासन करण्यासाठी चांगली माणसे बलवान मंत्री होवोत.
१२. बलवान राजे विजयी झाले.

## पाठ - २९

१. 'इ'कारान्ती नपुंसकलिंगी नामाची विभक्ति रूपे:-

**अट्ठि - हाड, बी**

| एकवचन   |                               | अनेकवचन          |
|---------|-------------------------------|------------------|
| पठमा    | अट्ठि                         | अट्ठी, अट्ठीनि   |
| दुतिया  | अट्ठिं                        | अट्ठीं, अट्ठीनि  |
| ततिया   | अट्ठिना                       | अट्ठीहि, अट्ठीभि |
| चतुर्थी | अट्ठिनो, अट्ठिस्स             | अट्ठीनं          |
| पंचमी   | अट्ठिना                       | अट्ठीहि, अट्ठीभि |
| छट्टी   | अट्ठिनो, अट्ठिस्स             | अट्ठीनं          |
| सत्तमी  | अट्ठिनि, अट्ठिम्हि, अट्ठिस्मि | अट्ठीसु          |
| आलपन    | अट्ठि                         | अट्ठी, अट्ठीनि   |

टीप :- सदर विभक्ति रूपे पठमा, दुतिया व आलपन सोडता इकारान्त पुलिंगी नाम 'अगि' सारखीच आहेत.

२. काही इकारान्त नपुंसकलिंगी नामे:-

|        |        |       |         |
|--------|--------|-------|---------|
| वारि   | - पाणी | दधि   | - दहि   |
| अक्रिय | - डोळा | अच्चि | - ज्योत |
| सप्पि  | - तृप  | सत्थि | - मांडी |

३. उकारान्त नपुंसकलिंगी नामाची विभक्ति रूपे:-

**चक्रवु - डोळा**

| एकवचन  |         | अनेकवचन          |
|--------|---------|------------------|
| पठमा   | चक्रवु  | चक्रवू, चक्रवूनि |
| दुतिया | चक्रवुं | चक्रवू, चक्रवूनि |
| आलपन   | चक्रवु  | चक्रवू, चक्रवूनि |

इतर उकारान्त पुलिंगी नामे 'गरु' सारखीच आहेत.

## ४. काही उकारन्त नपुंसकलिंगी नामे:-

|            |          |       |                          |
|------------|----------|-------|--------------------------|
| धनु        | - धनुष्य | दारु  | - जळावण, लाकूड, सरपण     |
| मधु        | - मथ     | अम्बु | - पाणी                   |
| अस्सु      | - अश्रू  | वसु   | - संपत्ति                |
| जाणु/जण्णु | - गुडघा  | वथु   | - जमीन, तळ, जागा, वास्तु |

## ५. शब्द संग्रह – क्रियापदे:-

|                    |  |
|--------------------|--|
| अनुकम्पति          | - अनुकंपा अनुभवतो                                      |
| वाचेति             | - शिकवतो   |
| सम्मिसेति          | - मिसळतो, एकत्र करतो                                   |
| पब्बजति            | - प्रव्रज्या घेतो                                      |
| विष्पकिरिता        | - विखरतो, विस्कटतो (भूतकाळ वाचक धातूसाधित; विष्पकिण्ण) |
| पराजेति            | - पराभव करतो   |
| अनुगच्छति          | - अनुसरतो  |
| पत्थेति            | - आशा करतो, इच्छा करतो                                 |
| समिज्जति           | - पूर्ण करतो, यशस्वी होतो                              |
| पवत्तेति           | - प्रवर्तितो, चालना देतो, फिरवतो, चालवतो               |
| (अस्सूनि) पवत्तेति | - अश्रू ढाळतो, रडतो                                    |
| विभजति             | - विभागतो, विश्लेषण करतो                               |

## सराव – २९

## ६. मराठीत भाषांतर करा

१. गेहं पविसन्तं अहिं दिस्वा कञ्जा भायित्वा अस्सूनि पवत्तेन्ती रोदितुं आरभि ।
२. दीपिना हताय गाविया अट्टीनि भूमियं विष्पकिण्णानि होन्ति ।
३. नदिया वारिना वत्थानि धोवन्तो पिता नहापेतुं पुत्तं पक्कोसि ।
४. त्वं सपिना च मधुना च सम्मिसेत्वा ओदनं भुज्जिस्ससि ।
५. मयं खीरम्हा दर्थिं लभाम ।
६. भिक्खु दीपस्स अच्चिं ओलोकेन्तो अनिच्चसञ्जं (अनित्यबोध) वहेन्तो निसीदी ।
७. पापकारि लुद्धको धनुं च सरे च आदाय अटविं पविद्धो ।

८. सतु अमच्चरस सथिं असिना पहरित्वा अद्विं छिन्दि ।  
 ९. अहं सप्पिना पचितं ओदनं मधुना भुजितुं न इच्छामि ।  
 १०. नता हथेहि च जण्णौहि च गच्छन्तं याचकं दिस्वा अनुकम्पमानो भोजनं च वर्थं  
     च दापेसि ।  
 ११. दारुनि संहरन्तियो इत्थियो अटवियं आहिण्डन्ती गायिंसु ।  
 १२. अम्बौळि जातानि पदुमानि न अम्बुना उपलित्तानि (लिंपलेले) होन्ति ।  
 १३. मनुस्सा नानाकम्मानि कत्वा वसुं संहरित्वा पुतदारे पोसेतुं उस्सहन्ति ।  
 १४. भत्ता मातुया अकखीसु अस्सूनि दिस्वा भरियाय कुज्जि ।  
 १५. पिता खेतवथूनि पुतानं च नत्तारानं च विभजित्वा विहारं गन्त्वा पब्बजि ।  
 १६. पकखीहि खादितानं फलानं अद्वीनि रुक्खमूले पतितानि होन्ति ।  
 १७. आचरियो सिस्सानं (शिष्य) सिप्पं (शिल्प, कला) वाचेन्तो ते अनुकम्पमानो धम्मेन जिवितुं  
     अनुसासि ।  
 १८. बोधिसत्तो समणो मारं पराजेत्वा बुद्धो भवि/अहोसि ।  
 १९. बुद्धं पस्सित्वा धम्मं सोतुं पत्थेन्ता नरा धम्मं चरितुं वायमन्ति ।  
 २०. सचे सप्पुरिसानं सब्बा पत्थना (इच्छा) समिज्जेय्युं मनुस्सा लोके सुखं विन्देय्युं ।  
 २१. व्याधिना पीछिता माता अस्सूनि पवतेन्ती धीतुया गेहं आगन्त्वा मञ्चे सयित्वा यागुं  
     याचि ।  
 २२. मातरं अनुकम्पमाना धीता खिप्पं (लगेच) यागुं पटियादेत्वा मातुया मुखं धोवित्वा  
     यागुं पायेसि ।  
 २३. पितरा पुढं पज्हं भत्ता सम्मा (बरोबर, योग्य) विभजित्वा उपमाय (उपमा) अर्थं  
     व्याकरि/व्याकासि ।  
 २४. लुद्धको अटविया भूमियं धज्जं विप्पकिरित्वा मिगे पलोभेत्वा (प्रलोभन) मारेतुं  
     उस्सहि ।  
 २५. धज्जं खादन्ता मिगा आगच्छन्तं लुद्धकं दिस्वा वेगेन (वेगाने) धाविंसु ।

#### ७. पालीत भाषांतर करा

१. त्याने अरण्यामध्ये, चित्त्याने मारलेल्या प्राण्यांची हाडे पाहिली.
२. तुम्ही नदीच्या पाण्याने आंघोळ कराल.
३. तरुण कन्येच्या डोळ्यांत अशू आहेत.
४. शेतकरी तूप आणि दही व्यापाच्यांना विकतो.
५. दिव्यांच्या ज्योती वाच्याने (वातेन) नाचल्या.
६. शत्रुच्या पायांवर चर्मरोग आहे.
७. भ्रमर फुलांना न दुखावता त्यांच्यातून मध गोळा करतो.
८. जंगलातून सरपण आणत असताना स्त्री नदीत पडली.
९. शेतात व बागेत झाडे लावून माणसे संपत्ती जमविण्यासाठी प्रयत्न करतात.
१०. पतीने शहरातून पत्तीसाठी रत्न आणले.

## पाठ - ३०

### १. 'वन्तु' व 'मन्तु' अन्त विशेषणांची विभक्ति रूपे:-

'वन्तु' आणि 'मन्तु' प्रत्यय लावून बनवलेली गुणवाचक विशेषणांची रूपे तिन्ही लिंगामध्ये चालतात. ही रूपे ते ज्या नामाची विशेषता कथन करतात त्याच्या लिंग, वचन आणि विभक्ति प्रमाणे असतात.

#### पुलिंग:-

#### गुणवन्तु - गुणवान

|         | एकवचन                                       | अनेकवचन                |
|---------|---|------------------------|
| पठमा    | गुणवा, गुणवन्तो                             | गुणवन्तो, गुणवन्ता     |
| दुतिया  | गुणवन्तं                                    | गुणवन्तो, गुणवन्ते     |
| ततिया   | गुणवता, गुणवन्तेन                           | गुणवन्तेहि, गुणवन्तेभि |
| चतुर्थी | गुणवतो, गुणवन्तस्स                          | गुणवतं, गुणवन्तानं     |
| पञ्चमी  | गुणवता, गुणवन्तम्हा, गुणवन्तस्मा            | गुणवन्तेहि, गुणवन्तेभि |
| छट्टी   | गुणवतो, गुणवन्तस्स                          | गुणवतं, गुणवन्तानं     |
| सत्तमी  | गुणवति, गुणवन्ते, गुणवन्तम्हि, गुणवन्तस्मिं | गुणवन्तेसु             |
| आलफन    | गुणवा, गुणव, गुणवन्त                        | गुणवन्तो, गुणवन्ता     |

टीप :- सदर विभक्ति रूपे आणि 'न्त' ने अंत होणारी वर्तमानकाळातील धातू विशेषण रूपे (पाठ ११) यांच्यातील साम्य लक्षात घ्यावे. जी विशेषणे 'मन्तु' ने अंत होतात त्यांची विभक्ति रूपे चक्रवुमा, चक्रवुमन्तो अशी होतात.

#### २. नपुंसकलिंग:-

#### ओजवन्तु - पोषक

|        | एकवचन   | अनेकवचन   |
|--------|---------|-----------|
| पठमा   | ओजवन्तं | ओजवन्तानि |
| दुतिया | ओजवन्तं | ओजवन्तानि |

इतर रूपे, 'वन्तु' व 'मन्तु' प्रत्ययाने अंत होणाऱ्या पुलिंगी विशेषणाप्रमाणेच होतात.

**स्त्रीलिंगः-**

गुणवती/गुणवन्ती आणि चक्रबुमती/चक्रबुमन्ती ही 'वन्तु' व 'मन्तु' ने अंत होणाऱ्या विशेषणाची स्त्रीलिंगी रूपे आहेत. त्यांची विभक्ति रूपे 'कुमारी' प्रमाणे; अर्थात ईकारान्त स्त्रीलिंगी नामाप्रमाणे होतात.

**२. 'वन्तु' व 'मन्तु' नी अंत होणारी काही विशेषणे.**

|            |                            |             |                              |
|------------|----------------------------|-------------|------------------------------|
| धनवन्तु    | - धनवान                    | चक्रबुमन्तु | - डोळस                       |
| भगवन्तु    | - भाग्यवान, बुद्ध          | बलवन्तु     | - बलवान                      |
| यसवन्तु    | - प्रसिद्ध                 | पञ्जवन्तु   | - प्रज्ञावंत                 |
| कुलवन्तु   | - कुलवान                   | पुञ्जवन्तु  | - पुण्यवंत, सुदैवी           |
| सोतवन्तु   | - श्रोता, ऐकणारा           | फलवन्तु     | - फल प्राप्त, फळांनी बहरलेले |
| सीलवन्तु   | - शीलवान                   | हिमवन्तु    | - हिमालय                     |
| सद्धावन्तु | - श्रद्धावान               | वण्णवन्तु   | - रंगीत                      |
| सतिमन्तु   | - सजग, जागरूक              | भानुमन्तु   | - सूर्य, तेजस्वी             |
| बन्धुमन्तु | - भरपूर नातेवाईक<br>असलेला | बुद्धिमन्तु | - बुद्धिवान                  |

**सराव - ३०****३. मराठीत भाषांतर करा**

१. बलवन्तेहि भूपतीहि अरयो पराजिता होन्ति ।
२. मयं चक्रबूहि भानुमन्तस्स सुरियस्स रस्मियो ओलोकेतुं न सक्कोम ।
३. भिक्खवो भगवता देसितं धर्मं सुत्वा सतिमन्ता भवितुं वायमिंसु ।
४. सीलवन्ता उपासका भगवन्तं वन्दित्वा धर्मं सुत्वा सतिमन्ता भवितुं वायमिंसु ।
५. पञ्जवन्तेहि इच्छितं पथितं समिज्जिस्सति ।
६. कुलवतो भाता भगवता सह मन्तेतो भूमियं पथ्यरिताय किलज्जायं निसिन्हो अहोसि ।
७. फलवन्तेसु तरसु निसिन्हा पक्खिनो फलानि खादित्वा अट्टीनि भूमियं पातेसुं ।
८. हिमवति बहू पसवो च पक्खी च उरगा च वसन्ति ।
९. सीलवन्ता धर्मं सुत्वा चक्रबुमन्ता भवितुं उस्सहिस्सन्ति ।
१०. गुणवतो बन्धु सीलवति पज्जं पुच्छि ।
११. गुणवती युवति सीलं रक्खन्ती मातरं पोसेसि ।

१२. यसवतिया बन्धवो बलवन्तो पभुनो अभविंसु ।  
 १३. धनवन्तस्स सप्पुरिसस्स भरिया पुञ्जवती अहोसि ।  
 १४. सीलवन्तेसु वसन्ता असप्पुरिसा पि गुणवन्ता भवेयुं ।  
 १५. सीलवतियो मातरो पुते गुणवन्ते कातुं उस्सहन्ति ।  
 १६. बुद्धिमा पुरिसो पापं करोन्ते पुते अनुसासितुं पञ्जवन्तं भिक्खुं पक्कोसि ।  
 १७. कुलवतो नत्ता सीलवता भिक्खुना धम्मं सुत्वा पर्सीदित्वा गेहं पहाय भिक्खूसु पब्जि ।  
 १८. बलवन्ता पभुनो गुणवन्तो भवन्तु ।  
 १९. धनवन्ता बलवन्ता कदाचि करहचि (क्वचित) गुणवन्ता भवन्ति ।  
 २०. हिमवन्तस्मा आगतो पञ्जवा इसि सीलवतिया मातुया उव्याने अतिथि अहोसि ।  
 २१. दुब्बलं सीलवति इथिं दिस्वा अनुकम्पमाना धनवती तं (तिला) पोसेसि ।  
 २२. हिमवति फलवन्ता तरवो न छिन्दितब्बा होन्ति ।  
 २३. धम्मस्स विज्ञातारो यसवन्ता भवितुं न उस्सहन्ति ।  
 २४. बन्धुमा बलवा होति, धनवा बन्धुमा होति ।  
 २५. सीलवती राजिनी गुणवतीहि इत्थीहि सद्बिं सालायं निसीदित्वा यसवतिया कञ्जाय कथं सुणि ।  
 २६. गुणवा पुरिसो रुक्खम्हा ओजवन्तानि फलानि ओचिनित्वा विहारे वसन्तानं सीलवन्तानं भिक्खूनं विभजि ।  
 २७. बलवतिया राजिनिया अमच्चा धम्मेन दीपे मनुस्से पालेसुं ।  
 २८. यसवन्तीनं नारीनं धीतरो पि यसवन्तियो भविस्सन्ति ।  
 २९. पञ्जवन्तिया युवतिया पुट्ठो धनवा पञ्जं व्याकातुं असक्कोन्तो सभायं निसीदि ।  
 ३०. भानुमा सुरियो मनुस्सानं आलोकं देति ।

#### ४. पालीत भाषांतर करा

१. हिमालयात राहणारे ऋषी कथीकधी (कदाचि) शहरांकडे येतात.
२. जागरूक भिक्खूंनी प्रज्ञावान उपासकांना धर्मोपदेश दिला.
३. पुण्यवंत लोकांना गुणवंत मित्र व नातेवाईक असतात.
४. धनवान व्यापारी वस्तू विकत असताना गावाकडून गावाकडे जातात.
५. गुणवान युवती धनवान आचार्याची पली होती.
६. बुद्धिवान भिक्खूने बलवान प्रमुखाने विचारलेल्या प्रश्नाचे उत्तर दिले.
७. गुणवान कन्येच्या हाती माळा आहेत.
८. धनवान प्रसिद्ध असतात, प्रज्ञावंत गुणवान असतात.

९. तुम्ही गुणवंतांना आणि प्रज्ञावंतांना टाळू नका.
१०. बलवान राजा शासन करीत असलेल्या प्रसिद्ध द्वीपावर बुद्ध राहत आहेत.\*
११. जर शीलवान भिक्खू गावात राहत असेल तर लोक गुणवान होतील.
१२. कुलीन माणसे गुणवान व बुद्धिवान होवोत.
१३. लोक धनवानांना व बलवानांना अनुसरतील.
१४. ज्याचे खूप नातेवाईक आहेत अशा बलवान शत्रूचा प्रसिद्ध राजाने पराभव केला.
१५. डोळस लोक तेजस्वी सूर्य पाहतात.

## पाठ - ३१

१. पुरुषवाचक सर्वनामांची विभक्ति रूपे:-

**उत्तम पुरुष - अम्ह**

| एकवचन    |                  | अनेकवचन            |
|----------|------------------|--------------------|
| पठमा     | अहं              | मयं, अम्हे         |
| द्वितिया | मं, ममं          | अम्हे, अम्हाकं, नो |
| ततिया    | मया, मे          | अम्हेहि, नो        |
| चतुर्थी  | मम, मळं, ममं, मे | अम्हं, अम्हाकं, नो |
| पंचमी    | मया              | अम्हेहि            |
| छट्टी    | मम, मळं, ममं, मे | अम्हं, अम्हाकं, नो |
| सत्तमी   | मयि              | अम्हेसु            |

**माज्जिम पुरुष - तुम्ह**

| एकवचन    |                | अनेकवचन              |
|----------|----------------|----------------------|
| पठमा     | त्वं, तुवं     | तुम्हे               |
| द्वितिया | तं, तवं, तुवं  | तुम्हे, तुम्हाकं, वो |
| ततिया    | त्वया, तया, ते | तुम्हेहि, वो         |
| चतुर्थी  | तव, तुयं, ते   | तुम्हं, तुम्हाकं, वो |
| पंचमी    | त्वया, तया     | तुम्हेहि, वो         |
| छट्टी    | तव, तुयं, ते   | तुम्हं, तुम्हाकं, वो |
| सत्तमी   | त्वयि, तयि     | तुम्हेसु             |

सराव - ३१

३. मराठीत भाषांतर करा

१. मम आचरियो मं वाचेन्तो पोथकं लिखि ।
२. मयं भगिनी गिलानं (आजारी) पितरं पोसेसि ।
३. दातारो भिक्खूनं दानं देन्ता अम्हे पि भोजापेसुं ।

४. तुम्हाकं धीतरो कुहिं (कोठे) गमिस्सन्ति ?  
 ५. अम्हाकं धीतरो सत्थारं नमस्सितुं वेलुवनं गमिस्सन्ति ।  
 ६. अम्हं कम्मानि करोन्ता दासा (सेवक) पि सप्पुरिसा भवन्ति ।  
 ७. अम्हेहि कतानि पुञ्जानि च पापानि च अम्हे अनुबन्धन्ति ।  
 ८. तया कीतानि भण्डानि तव धीता मञ्जूसासु पक्रिखपित्वा ठपेसि ।  
 ९. कुलवन्ता च चण्डाला (जाती बहिष्कृत) च अम्हेसु भिक्खूसु पब्बजन्ति ।  
 १०. अम्हाकं उद्याने फलवन्तेसु तरुसु वण्णवन्ता पक्रिखनो चरन्ति ।  
 ११. उद्यानं आगन्त्वा तिणानि खादन्ता मिगा, अम्हे पसित्वा, भायित्वा अटविं धाविंसु ।  
 १२. अम्हाकं भत्तारो नावाय उदधिं तरित्वा दीपं पापुणिंसु ।  
 १३. अम्हं भूपतयो बलवन्ता जेतारो भवन्ति ।  
 १४. तुम्हाकं नत्तारो च मम भातरो च सहायका अभविंसु / अहेसुं ।  
 १५. तुम्हेहि आहटानि चीवरानि मम माता भिक्खूनं पूजेसि ।  
 १६. उद्याने निसिन्नो अहं नत्तारेहि कीळन्तं तवं अपस्सिं ।  
 १७. धञ्जं मिनन्तो अहं तया सद्धिं कथेतुं न सककोमि ।  
 १८. अहं तव न कुञ्जामि, त्वं मे कुञ्जसि ।  
 १९. मम धनवन्तो बन्धवो विज्ञू विदुनो भवन्ति ।  
 २०. दीपस्स अच्चिना अहं तव छायं पस्सितुं सककोमि ।  
 २१. अम्हाकं भूपतयो जेतारो हुत्वा पासादेसु केतवो उस्सापेसुं (उभारल्या) ।  
 २२. भातुनो पुत्ता मम गेहे विहरन्ता सिप्पं उगर्णिंहसु ।  
 २३. तव दुहिता भिक्खुनो ओवादे ठत्वा पतिनो कारुणिका सखी अहोसि ।  
 २४. कुसलं करोन्ता नेतारो सगं गन्तारो भविस्सन्ति ।  
 २५. सचे चोरो गेहं पविसति सीसं भिन्दित्वा नासेतब्बो होति ।  
 २६. अम्हाकं सत्तुनो हत्येसु च पादेसु च ददु अथि ।  
 २७. सीलवन्ता बुद्धिमन्तेहि सद्धिं लोके मनुस्सानं हितसुखाय नाना कम्मानि करोन्ति ।  
 २८. सचे सुसनूनं विनेता कारुणिको होति, ते सोतवन्ता सुसवो गुणवन्ता भविस्सन्ति ।  
 २९. मयं खीरम्हा दधि च दधिम्हा सप्पिं च लभाम ।  
 ३०. मयं सप्पिं च मधुं च सम्मिस्सेत्वा भोजनं पटियादेत्वा भुजिस्साम ।
- ४. पालीत भाषांतर करा**
१. आमचे पुत्र व नातू, सुखी दीर्घायुषी होवोत.

२. झाडे आमच्याकडून किंवा तुमच्याकडून तोडली जाऊ नयेत.
३. तुमच्या राजाने मंत्र्यांसह द्वीपास जाऊन शत्रूंना हरविले.
४. तू जमिनीवर विखुरलेल्या बिया मी वेचल्या.
५. आमच्या जाणकार व प्रसिद्ध गुरुने आम्हास धर्म शिकवला.
६. चोरीने फळ उचलणारा पक्षी तुझ्याद्वारा पाहिला गेला.
७. माझा नातू वैद्य होऊ इच्छितो.
८. तुम्ही हिमालय पर्वतावर गुहांमधे राहणारे ऋषी पाहिले.
९. आमचे पुत्र व कन्या धनवान व गुणवान होवोत.
१०. माझा नातू तुझा शिष्य होईल.
११. तू धनवान व प्रसिद्ध हो.
१२. भुंगा पाण्यात जन्मलेल्या (जात) कमळावर उभा आहे.
१३. श्रद्धावंत उपासकाने कुलवंत युवतीस फूल दिले.
१४. प्रसिद्ध युवतीच्या हातात रंगीत रल आहे.
१५. तेजस्वी सूर्य जगाला प्रकाशित करतो.

## पाठ - ३२

### १. सर्वनामांची विभक्ति रूपे:-

‘संबंधी सर्वनामे’, ‘दर्शक सर्वनामे’ व ‘प्रश्नार्थक सर्वनामे’ तिन्ही लिंगांमधे असतात. यांची ‘आलपन’ वगळून इतर सर्व विभक्ति रूपे होतात. जेव्हा सर्वनामे नामाविषयी गुणविशेष दर्शवितात तेव्हा ती विशेषणे होतात.

### २. पुलिंगी - एकवचन:-

| संबंधी सर्वनाम |               | दर्शक सर्वनाम | प्रश्नार्थक सर्वनाम            |
|----------------|---------------|---------------|--------------------------------|
| पठमा           | यो            | सो            | को                             |
| दुतिया         | यं            | तं            | कं                             |
| ततिया          | येन           | तेन           | केन                            |
| चतुर्थी        | यस्स          | तस्स          | कस्स, किस्स                    |
| पंचमी          | यम्हा, यस्मा  | तम्हा, तस्मा  | कस्मा, किस्मा                  |
| छट्टी          | यस्स          | तस्स          | कस्स, किस्स                    |
| सत्तमी         | यम्हि, यस्मिं | तम्हि, तस्मिं | कम्हि, कस्मिं, किम्हि, किस्मिं |

### ३. नपुंसकलिंगी - एकवचन:-

| संबंधी सर्वनाम |    | दर्शक सर्वनाम | प्रश्नार्थक सर्वनाम |
|----------------|----|---------------|---------------------|
| पठमा           | यं | तं            | किं                 |
| दुतिया         | यं | तं            | किं                 |

इतर रूपे पुलिंगासारखीच होतात.

## ४. स्त्रीलिंगी - एकवचनः-

| संबंधी सर्वनाम |            | दर्शक सर्वनाम | प्रश्नार्थक सर्वनाम |
|----------------|------------|---------------|---------------------|
| पठमा           | या         | सा            | का                  |
| दुतिया         | यं         | तं            | कं                  |
| ततिया          | याय        | ताय           | काय                 |
| चतुर्थी        | यस्सा, याय | तस्सा, ताय    | कस्सा, काय          |
| पंचमी          | याय        | ताय           | काय                 |
| छट्टी          | यस्सा, याय | तस्सा, ताय    | कस्सा, काय          |
| सत्तमी         | यसं, यायं  | तसं, तायं     | कसं, कायं           |

## ५. पुलिंगी - अनेकवचनः-

| संबंधी सर्वनाम |              | दर्शक सर्वनाम | प्रश्नार्थक सर्वनाम |
|----------------|--------------|---------------|---------------------|
| पठमा           | ये           | ते            | के                  |
| दुतिया         | ये           | ते            | के                  |
| ततिया          | येहि         | तेहि          | केहि                |
| चतुर्थी        | येसं, येसानं | तेसं, तेसानं  | केसं, केसानं        |
| पंचमी          | येहि         | तेहि          | केहि                |
| छट्टी          | येसं, येसानं | तेसं, तेसानं  | केसं, केसानं        |
| सत्तमी         | येसु         | तेसु          | केसु                |

## ६. नपुंसकलिंगी - अनेकवचनः-

| संबंधी सर्वनाम |          | दर्शक सर्वनाम | प्रश्नार्थक सर्वनाम |
|----------------|----------|---------------|---------------------|
| पठमा           | यानि, ये | तानि, ते      | कानि, के            |
| दुतिया         | यानि, ये | तानि, ते      | कानि, के            |

इतर विभक्ति रूपे पुलिंगासारखीच होतात.

## ७. स्त्रीलिंगी - अनेकवचनः-

| संबंधी सर्वनाम |              | दर्शक सर्वनाम | प्रश्नार्थक सर्वनाम |
|----------------|--------------|---------------|---------------------|
| पठमा           | या, यायो     | ता, तायो      | का, कायो            |
| दुतिया         | या, यायो     | ता, तायो      | का, कायो            |
| ततिया          | याहि         | ताहि          | काहि                |
| चतुर्थी        | यासं, यासानं | तासं, तासानं  | कासं, कासानं        |
| पंचमी          | याहि         | ताहि          | काहि                |
| छट्टी          | यासं, यासानं | तासं, तासानं  | कासं, कासानं        |
| सत्तमी         | यासु         | तासु          | कासु                |

## ८. अनिश्चय वाचक प्रत्यय 'चि'

'चि' हे अव्यय प्रश्नार्थक सर्वनामाच्या विभक्ति रूपास जोडतात. त्याने काही एक, कोणतेहि एक, कोणीही एकजण असा बोध होतो.

उदा.

- पुलिंगः-** - कोचि पुरिसो - (कोणी) एक मनुष्य, पुरुष  
- केनचि - (कोणी) एखाद्या मनुष्याने

- नपुंसकलिंगः-** - किंचि फलं - (कोणते) एक फल

- केनचि - (कोणत्या) एका फलाने

- स्त्रीलिंगः-** - काचि इथि - (कोणती) एक स्त्री  
- कायचि इथिया - (कोणत्या) एखाद्या स्त्रीने

(कोणत्या) एखाद्या स्त्रील  
 (कोणत्या) एखाद्या स्त्रीचे  
 (कोणत्या) एखाद्या स्त्रीवर

### ९. क्रियाविशेषणात्मक सर्वनामे:-

| संबंधी क्रियाविशेषणे       | दर्शक क्रियाविशेषणे       | प्रश्नार्थक क्रियाविशेषणे |
|----------------------------|---------------------------|---------------------------|
| यथ - जेथे                  | तथ - तेथे                 | कथ - कोठे                 |
| यत्र - जेथे                | तत्र - तेथे               | कुत्र - कोठे              |
| यतो - जेथून, ज्यामुळे      | ततो - तेथून, त्यामुळे     | कुतो - कोठून              |
| यथा - जसे, जशा रीतीने      | तथा - तसे, तशा रीतीने     | कथं - कसे                 |
| यस्मा - कारण की            | तस्मा - म्हणून            | कस्मा - का                |
| यदा - जेक्हा               | तदा - तेक्हा              | कदा - केक्हा              |
| येन - जेथे                 | तेन - तेथे                |                           |
| याव - किंती वेळ, जो पर्यंत | ताव - इतका वेळ, तो पर्यंत |                           |

### १०. वाक्य प्रयोगाची उदाहरणे :-

१. यो अथव्या होति सो कुमारे अनुसासितुं आगच्छतु |  
     जो दयाळू आहे, तो कुमारांना शिकविण्यासाठी येवो.
२. यं अहं आकङ्गमानो अहोसिं सो आगतो होति |  
     ज्याची मी अपेक्षा करीत होतो, तो आला आहे.
३. येन मग्गेन सो आगतो तेन गन्तुं अहं इच्छामि |  
     ज्या मार्गाने तो आला, त्याने मी जाऊ इच्छितो.
४. यस्स सा भरिया होति सो भत्ता पुऱ्यवन्तो होति |  
     ज्याची ती पली आहे, तो पती पुण्यवान आहे.
५. यस्मिं हथ्ये ददु अथि तेन हथ्येन पत्तो न गण्हितब्बो होति |  
     ज्या हातावर चर्मरोग आहे, त्या हाताने पात्र घेणे योग्य नाही.
६. यानि कम्मानि सुखं आवहन्ति (आणतात) तानि पुऱ्यानि होन्ति |

- जी कर्म सुख आणतात, ती पुण्यकर्म होत.
७. या भरिया सीलवती होति सा भतुनो पियायति ।  
जी पल्नी शीलवती आहे, ती पतीस प्रिय आहे.
८. याय राजिनिया सा वापी कारापिता तं अहं न अनुस्सरामि ।  
ज्या राणीने ती विहीर बांधवली होती, ती मला आठवत नाही.
९. यस्सं सभायं सो कथं पवत्तेसि तथ्य बहू मनुस्सा सन्निपतिता अभविसु / अहेसुं ।  
ज्या सभेत त्याने भाषण केले, तेथे खूप माणसे जमली होती.
१०. यासं इत्थीनं मञ्जूसासु सुवर्णं अथिं तायो द्वारानि थकेत्वा गेहेहि निकखमन्ति ।  
ज्या स्त्रियांच्या पेट्यांमधे सोने आहे, त्या दारे बंद करून घरांबाहेर जातात.
११. यासु इत्थीसु कोधो नथि तायो विनीता भरियायो च मातरो च भवन्ति ।  
ज्या स्त्रियांमधे क्रोध नाही, त्या विनयी पल्नी व माता होतात.
१२. यथ्य भूपतयो धम्मिका होन्ति तथ्य मनुस्सा सुखं विन्दन्ति ।  
जेथे राजे धार्मिक असतात, तेथे माणसे सुख उपभोगतात.
१३. यतो भानुमा रवि लोकं ओभासेति ततो चकखुमन्ता रूपानि पस्सन्ति ।  
कारण तेजस्वी सूर्य जगाला प्रकाशित करतो, म्हणून डोळस लोक वस्तू पाहतात.
१४. यथा भगवा धम्मं देसेति, तथा तुम्हेहि पटिपज्जितब्बं ।  
भगवंत जसा धर्म शिकवितात, तुम्ही तसे वागणे योग्य आहे.\*
१५. यस्मा पितरो रुक्खे रोपेसुं, तस्मा मयं फलानि भुज्जाम ।  
कारण वडिलांनी झाडे लावली, म्हणून आम्ही फळे खातो.
१६. यदा अम्हे इच्छितं पथितं समिज्जति तदा अम्हे मोदाम ।  
जेव्हा आपली इच्छित आकांक्षा पूर्ण होतात, तेव्हा आपण आनंदीत होतो.
१७. को त्वं असि ? के तुम्हे होथ ?  
तू कोण आहेस ? तुम्ही कोण आहात ?
१८. केन धेनु अटविया आनीता ?  
गाय वनातून कोणी आणली ?
१९. कस्स भूपतिना पासादो कारापितो ?  
राजाने प्रासाद कोणासाठी बांधून घेतला ?
२०. कस्मा अम्हेहि सच्चं भासितब्बं ?  
आम्ही सत्य का बोलावे ?
२१. असप्पुरिसेहि पालिते दीपे क्रुतो मयं धम्मिकं विनेतारं लभिस्साम ?

- दुष्ट पुरुषांद्वारा शासित द्वीपावर आम्हाला धार्मिक मार्गदर्शक कुठे मिळेल ?
२२. केहि कतं कमं दिस्वा तुम्हे कुज्ञथ ?
- कोणी केलेले काम पाहून तुम्ही रागवता ?
२३. केसं नत्तारो तुऱ्हं ओवादे ठस्सन्ति ?
- कोणाचे नातू तुझ्या सल्ल्याने राहतील ?
२४. केहि रोपितासु लतासु पुफ्फानि च फलानि च भवन्ति ?
- कोणी लावलेल्या वेलीवर फळे व फुले आहेत ?
२५. काय इथिया पादेसु दहु अथि ?
- कोणत्या स्त्रीच्या पायावर चर्मरोग आहे ?

### सराव - ३२

#### मराठीत भाषांतर करा

१. यस्सा सो पुत्तो होति सा माता पुञ्जवति होति ।
२. यो तं दीपं पालेति सो धम्मिको भूपति होति ।
३. केन अज्ज (आज) नवं (नवीन) जीवितमगं न परियेसितब्बं ?
४. सचे तुम्हे असप्पुरिस्सा लोकं दूसेय्याथ (दूषित कराल) कथ्य पुत्तधीतरेहि संदिं  
तुम्हे वस्थ ?
५. यदा भिक्खवो सन्निपतिल्वा सालायं किलज्जासु निसीदिंसु तदा बुद्धो पविसि ।
६. यस्मिं पदेसे बुद्धो विहरति तथ्य गन्तुं अहं इच्छामि ।
७. यायं गुहायं सीहा वसन्ति तं पसवो न उपसङ्घमन्ति ।
८. यो धनवा होति, तेन सीलवता भवितब्बं ।
९. सचे तुम्हे मं पज्जं पुच्छिस्सथ अहं विस्सज्जेतुं (विवरण/स्पष्टीकरण करण्यासाठी)  
उस्रहिस्सामि ।
१०. यथ्य सीलवन्ता भिक्खवो वसन्ति तथ्य मनुस्सा सप्पुरिसा होन्ति ।
११. कदा त्वं मातरं पस्सितुं भरियाय संदिं गच्छसि ?
१२. याहि रुक्खा छिन्ना तायो पुच्छितुं कस्सको आगतो होति ।
१३. कथं तुम्हे उदधिं तरितुं आकङ्घ्वथ ?
१४. कुतो ता इथियो मणयो आहरिसु ?
१५. यासु मज्जूसासु अहं सुवण्णं निक्रियिं ता चोरा चोरेसुं ।
१६. यो अज्ज नगरं गच्छति सो तरुसु केतवो पसिस्सति ।
१७. यस्स मया यागु पूजिता सो भिक्खु तव पुत्तो होति ।

१८. कुतो अहं धम्मस विज्ञातारं पञ्चवन्तं भिक्खुं लभिस्सामि ?  
 १९. यस्मा सो भिक्खूसु पब्बजि, तस्मा सा पि पब्बजितुं इच्छति |  
 २०. यं अहं जानामि तुम्हे पि तं जानाथ |  
 २१. यासं इत्थीनं धनं सो इच्छति ताहि तं लभितुं सो न सक्कोति |  
 २२. यतो आम्हाकं भूपति अरयो पराजेसि तस्मा मयं तरसु केतवो बन्धिम्ह |  
 २३. कदा अम्हाकं पथना (आशा, इच्छा ) समिज्जन्ति ?  
 २४. सब्बे ते सप्पुरिसा तेसं पञ्हे विस्सज्जेतुं वायमन्ता सालाय निसिन्ना होन्ति |  
 २५. सचे त्वं द्वारं थकेसि अहं पविसितुं न सक्कोमि |  
 २६. अम्हेहि कतानि कम्मानि छायायो विय अम्हे अनुबन्धन्ति |  
 २७. सुसवो मातरं रक्खन्ति |  
 २८. अहं सामिना सद्धिं गेहे विहरन्ती मोदामि |  
 २९. तुम्हाकं पुत्ता च धीतरो च उदधिं तरित्वा भण्डानि विकिकणन्ता मूलं परियेसितुं इच्छन्ति |  
 ३०. त्वं सुरं पिवसि, तस्मा सा तव कुज्ञति |

### **पालीत भाषांतर करा**

१. जो शीलवान आहे, तो शत्रूस पराजित करेल.
२. जी कन्या सभेत बोलली, ती माझी नातेवाईक नाही.
३. जेव्हा आई घरी येईल, तेव्हा कन्या रले देईल.
४. ज्या कुच्याला मी भात दिला, तो माझ्या भावाचा आहे.
५. आज तुम्ही भिक्खुंना वंदन करण्यासाठी घरी का आला नाहीत ?
६. जी चीवरे तुम्ही भिक्खुंना अर्पिली, ती तुम्ही कोटून मिळवलीत ?
७. मी तुला दिलेले सोने तू कोणाला दिलेस ?
८. जे तुला आवडेल ते खा.
९. जोपर्यंत तू नदीत आंघोळ करशील, तोपर्यंत मी खडकावर बसेन.
१०. जेथे विद्वान राहतात, तेथे मी राहू इच्छितो.

## पाली शब्दार्थ (क्रियापदे)

(कंसात क्रियापदाचे संस्कृत पूर्वप्रत्यय व मूळ धातू दिले आहेत.)

|                                      |  |
|--------------------------------------|--|
| अक्कोसति (अ + कृश) . - रागावतो       | करतो                                     |
| अथि (असु) ..... - आहे                | उदेति (उद्+इ) ..... - उगवतो              |
| अधिगच्छति (अधिगम्) - समजूनघेतो       | उपसङ्गमति (उप+सं+क्रम) - जवळयेतो         |
| अनुकम्पति (अनुकम्प्) - करुणाकरतो     | उप्पज्जति (उद्+पद्) - उपजतो, जन्मतो      |
| अनुगच्छति (अनुगम्) .. - अनुसरतो      | उप्पतति (उद्+पद्) - उडतो, उडी घेतो       |
| अनुबन्धति (अनुबन्ध्) ... - पाठलाग    | उस्सहति (उद्+सह) . - प्रयत्न करतो        |
|                                      | उस्सापेति (उद्+थ्रि) ..... - उभारतो,     |
| अनुसासति (अनुशासु) - अनुशासित        | फडकावितो                                 |
|                                      | ओचिनाति (अव+चि) - वेचतो, जमवतो           |
| आकङ्क्षति (आ+कांक्षु) - अपेक्षा करतो | ओतरति (अव+तृ) - पाण्यात उतरतो            |
| आकङ्क्षति (आ+कृष्?) ..... - ओढतो     | ओभासेति (अव+भाषु) ... - प्रकाशित         |
| आगच्छति (आ+गम्) ..... - येतो         | करतो                                     |
| आददाति (आ+दा) ..... - घेतो           | ओरुहति (अव+रुह्) - खाली उतरतो            |
| आनेति (आ+नी) . - आणतो, नेतृत्व       | ओलोकेति (अव+लोकृ) ..... - बघतो           |
|                                      | ओवदति (अव+वद्) .... - सल्ला देतो         |
| आमन्तेति (आ+मंत्र) - उद्देशून बोलतो  | कथेति (कथ्) ..... - बोलतो                |
| आमसति (आ+मृश्) .. - स्पर्श करतो,     | करोति (कृ) ..... - करतो                  |
|                                      | कसति (कृष्) ..... - नांगरतो, कसतो        |
| आरभति (आ+रभ्) .. - आरंभ करतो         | किणाति (क्री) ..... - खरेदी करतो         |
| आरुहति (आ+रुह्) ..... - चढतो         | कीळति (क्रीड्) ..... - खेळतो             |
| आरोचेति (आ+रुच्) ..... - कळवितो      | कुञ्ज्ञति (क्रुध्) .. - रागवितो, क्रोधित |
| आवहति (आ+वह्) .. - पुढे आणतो,        | होतो                                     |
|                                      | खणति (खण्) ..... - खणतो                  |
| उघडकीस आणतो                          | खादति (खाद्) ..... - खातो                |
| आसिञ्चति (आ+सिच्) .. - शिंपडतो       | खिपति (क्षिप्) ..... - फेकतो             |
| आहरति (अ+ह) ..... - आणतो             | गच्छति (गम्) ..... - जातो                |
| आहिणडति (आ+हिण्ड) .... - हिंडतो      | गण्हाति (गृह्) ..... - घेतो              |
| इच्छति (इश्/आप्) ..... - इच्छितो     | गायति (गइ) ..... - गातो                  |
| उगगण्हाति (उद्+गृह्) ..... - शिकतो   | चरति (चर्) ..... - फिरतो, चालतो          |
| उद्भवति (उद्+स्था) ..... - उभे राहतो | चवति (च्यु) .. - मरतो, सोडून जातो        |
| उड्हेति (उद्+डी) ..... - उडतो        | चिन्तेति (चित्) ..... - विचार करतो,      |
| उत्तरति (उद्+तृ) - पोहून जातो, पार   |  |

|   |  |
|---|--|
| चिंता करतो  | निवारेति (नि+वृ) . - निवारण करतो, थांबवतो                  |
| चुम्बति (चुम्ब्) ..... - चुंबन घेतो                 | निसीदति (नि+सद्) ..... - बसतो                              |
| चोरेति (चुर्) ..... - चोरतो                         | नीहरेति (नि+ह) ..... - बाहेर काढतो                         |
| छहुति (छह्) - फेकून देतो, सोडून देतो                | नेति (नी) ..... - नेतृत्व करतो, नतो                        |
| छादेति (छद्) - लपवितो, आच्छादितो,                   | पक्कोसति (प्र+कृष्) ..... - बोलावणे पाठवतो, बोलावतो        |
| छिन्दति (छिद्) ..... - छेदतो, कापतो                 | पक्खिपति (प्र+क्षिप्) ..... - ठेवतो                        |
| जानाति (ज्ञा) ..... - जाणतो                         | पचति (पच्) ..... - शिजवतो                                  |
| जालेति (ज्वल्) ... - जाळतो, पेटवतो                  | पजहति (हा) .. - परित्याग/अस्वीकार करतो                     |
| जिनाति (जि) ..... - जिंकतो                          | पटिच्छादेति (प्रति+छद्) ... - झाकतो, लपवतो                 |
| जीवति (जीव्) ..... - जगतो                           | पटियादेति (प्रति+यत्) ..... - तयार करतो, बनवतो             |
| ठपेति (स्था) ..... - ठेवतो                          | पतति (पत्) ..... - पडतो                                    |
| डसति (डस्) ..... - डसतो, चावतो                      | पथरति (प्र+स्त्) - पसरवतो, अंथरतो                          |
| तराति (त्रृ) .. - ओलांडतो, पार करतो                 | पथ्येति (प्र+अर्थ्) ..... - आशा करतो                       |
| तिडुति (स्था) ... - उभे राहतो, राहतो                | पप्पोति (पापुणाति) .... - प्राप्त करतो                     |
| थकेति (स्थग्) ..... - बंद करतो                      | पब्जति (प्र+व्रज्) ... - प्रव्रज्या घेतो, प्रब्रज्जित होतो |
| ददाति/देति (दा) ..... - देतो                        | पराजेति (परा+जि) - पराजित करतो                             |
| दस्सति (दृश्) ..... - पाहतो                         | परियेसति (परि+इष्) - परिशोध घेतो                           |
| दुहति (दुह्) ..... - दूध काढतो                      | परिवज्जेति (परि+वृज) .... - टाळतो, नाकारतो                 |
| दूसेति (दूष्) - दूषित करतो, बिघडवतो                 | परिवारेति (परि+वृ) - बरोबर राहतो, संगत देतो                |
| देसेति (दिश्) . - प्रवचन देतो, देशना देतो           | पलोभेति (प्र+लुभ्) ... - प्रलोभन देतो                      |
| धावति (धाव्) ..... - धावतो                          | पवत्तेति (प्र+वृत्) .. - प्रवर्तित करतो, फिरवतो            |
| धोवति (धोव्) ..... - धुतो                           | पविसति (प्र+विश्) ... - प्रवेश करतो                        |
| नच्चति (नृत्) ..... - नाचतो                         | पसीदति (प्र+सद्) ..... - प्रसन्न होतो, आनंदतो              |
| नमस्सति (नमस्) . - नमस्कार करतो, पूजितो, वन्दितो    | पस्सति (स्पश्) ..... - पाहतो                               |
| नहायति (स्ना) ..... - स्नान करतो                    |  |
| नासेति (नश्) ..... - नाश करतो                       |  |
| निक्खमति (निस्+क्रम्) ... - त्यागतो, निष्क्रमण करतो |  |
| निक्खिपति (नि+क्षिप्) - फेकून देतो, खाली ठेवतो      |  |
| निमन्तेति (नि+मंत्र्) - निमंत्रित करतो              |  |
| निलीयति (नि+ली) ..... - लपतो                        |  |

|                              |                        |                            |                        |
|------------------------------|------------------------|----------------------------|------------------------|
| पहरति (प्र+हृ) .....         | - प्रहार करतो          | मोदति (मुद्) .....         | - आनंद घेतो            |
| पहिणाति (प्र+हि) - (पत्र इ.) | पाठवतो                 | याचति (यच्) -              | याचना करतो, मागतो      |
| पाजेति (प्र+अज्)             | - चालवतो, हाकतो        | रक्खति (रक्ष्) .....       | - रक्षण करतो           |
| पातेति (पत्) .....           | - पाडतो                | रोदति (रुद्) .             | - रडतो, विलाप करतो     |
| पापुणाति (प्र+आप्) .         | - प्राप्त करतो,        | रोपेति (रुप्) ...          | - रोप लावतो, रोपण      |
|                              | पोहोचतो                |                            | करतो                   |
| पालेति (पाल्)                | - पालन करतो, शासन      | लभति (लभ्) .               | - मिलवतो, स्वीकारतो    |
|                              | करतो                   | लिखति (लिख्) .....         | - लिहितो               |
| पियायति (पिय्) .....         | - प्रिय आहे,           | वह्नेति (वृध्) -           | विकसित होतो, वाढतो     |
|                              | आवडतो                  | वन्दति (वन्द्) .....       | - वंदन करतो            |
| पिवति (पा) .....             | - पितो                 | वपति (वप्) ...             | - बी लावतो, बियाणे     |
| पीळेति (पीड्)                | - पीडतो, दमन करतो      |                            | पेरतो                  |
| पुच्छति (पृच्छ) .....        | - प्रश्न विचारतो       | वसति (वस्) .....           | - वसतो, राहतो          |
| पूजेति (पूज्) -              | पूजतो, सन्मान करतो     | वाचेति (वच्) .....         | - शिकवतो               |
| पूरेति (पृ) .....            | - भरतो                 | वायमति (वि+आ+यम्) .....    | - प्रयास               |
| पेसेति (प्र+इष्) .....       | - पाठवतो               |                            | करतो                   |
| पोसेति (पुष्) ..             | - पालन करतो, निगा      | विक्किणाति (वि+क्री) ..... | - विकतो                |
|                              | राखतो                  | विज्ञति (व्यध्) .....      | - वेधतो                |
| फुसति (स्पश्) .....          | - स्पर्श करतो          | विन्दति (विद्) -           | अनुभवतो, उपभोगतो       |
| बन्धति (बध्) .....           | - बांधतो               | विष्पकिरति (वि+प्र+कृ) .   | - विखरतो,              |
| भजति (भज्) .....             | - सोबत राहतो           |                            | पसरवतो                 |
| भञ्जति (भञ्ज्) .....         | - फोडतो                | विभजति (वि+भज्) .....      | - विभागतो              |
| भवति (भू)                    | - होतो, असतो, उद्धवतो  | विवरति (वि+वृ) .....       | - उघडतो                |
| भायति (भी)                   | ..... - भितो           | विस्सज्जेति (वि+सृज्) -    | खर्च करतो,             |
| भासति (भाष्) .....           | - बोलतो                |                            | उत्तर देतो             |
| भिन्दति (भिद्) ....          | - फोडतो, तोडतो         | विहरति (वि+हृ) ....        | - राहतो, वसतो          |
| भुञ्जति (भुज्) -             | खातो, आस्वाद घेतो      | विहिंसति (वि+हिंस्) ..     | - हिंसा करतो           |
| मन्तेति (मंत्र) ..           | - चर्चा करतो, सल्ला    | विहेठेति (वि+हीड्) .....   | - सतावतो               |
|                              | घेतो                   | वेठेति (वेष्ट्) -          | वेष्टण घालतो, वेष्टितो |
| मापेति (मा)                  | - बांधतो, निर्माण करतो | व्याकरेति (वि+आ+कृ) ...    | - विवेचन               |
| मारेति (मृ) .....            | - (ठार) मारतो          |                            | करतो,                  |
| मिनाति (मा) .....            | - मोजतो                | स्पष्टीकरण करतो            |                        |
| मुञ्चति (मुच्)               | - मुक्त करतो, मोकळे    | संहरति (स+ह) ....          | - जमवितो, गोळा         |
|                              | सोडतो                  |                            | करतो                   |

|   |   |
|---|---|
| सक्कोति (शक्) - शक्तो, सक्षम आहे                    | सयति (शी) ..... - झोपतो                             |
| सन्निपत्ति (सं+नि+पत्) ..... - एकत्र<br>जमतात       | सल्लपति (सं+ल्प्) .... - चर्चा करतो,<br>संभाषण करतो |
| समस्सासेति (सं+आ+श्वस्) - सांत्वन<br>करतो, धीर देतो | सादियति (स्वद्) ..... - उपभोगतो                     |
| समिज्जति (सं+ऋध्) - (कार्य/कर्तव्य)<br>पूर्ण करतो   | सिब्बति (सीवू) ..... - शिवतो                        |
| सम्मज्जति (सं+मृज्) ..... - झाडतो,<br>स्वच्छ करतो   | सुणाति (श्रु) ..... - ऐकतो                          |
| सम्मिस्सेति (सं+मिश्र) .... - मिसळतो                | हनति (हन्) ..... - ठार मारतो                        |
|   | हरति (ह) ..... - हरण करतो                           |
|   | हसति (हस्) ..... - हसतो                             |
|   | होति (भू) ..... - आहे, उद्भवतो                      |

## पाली शब्दार्थ

### क्रियापदां खेरीजः-

पु. = पुल्लिंग; स्त्री. = स्त्रीलिंग; न. = नपुंसकलिंग; वि. = विशेषण; अ. = अव्यय; क्रि.वि. = क्रिया विशेषण; स. = सर्वनाम.

|                         |                     |                |                       |   |                     |
|-------------------------|---------------------|----------------|-----------------------|---|---------------------|
| अकुसल (वि.) .....       | -                   | अकुशल          | आखु (पु.) .....       | - | उंदीर               |
| अक्रिख (न.) .....       | -                   | डोळा           | आचरिय (पु.) .....     | - | आचार्य              |
| अग्नि (पु.) .....       | -                   | आग             | आपण (न.) .....        | - | दुकान               |
| अङ्गुलि (स्त्री.) ..... | -                   | अंगुली, बोट    | आलोक (पु.) .....      | - | प्रकाश              |
| अच्छि (न.) .....        | -                   | ज्योत          | आवाट (पु.) .....      | - | खड्डा               |
| अज (पु.) .....          | -                   | बकरा           | आसन (न.) .....        | - | आसन                 |
| अज्ज (अ.) .....         | -                   | आज             | इथि (स्त्री.) .....   | - | स्त्री              |
| अटवि (स्त्री.) .....    | -                   | वन             | इद्धि (स्त्री.) ..... | - | ऋद्धी, सिद्धी       |
| अट्ठि (न.) .....        | -                   | हाड            | इसि (पु.) .....       | - | ऋषि                 |
| अतिथि (पु.) .....       | -                   | पाहुणा         | उच्छु (पु.) .....     | - | ऊस                  |
| अथ्यञ्जू (पु.) -        | अर्थ जाणणारा, दयाळू |                | उदक (न.) .....        | - | पाणी                |
| अद्भा (अ.) .....        | -                   | खरोखर, निश्चित | उदधि (पु.) .....      | - | सागर, समुद्र        |
| अधिपति (पु.) .....      | -                   | प्रमुख         | उपमा (स्त्री.) .      | - | उपमा (शब्दालंकार)   |
| अनिच्छ (वि.) .....      | -                   | अनित्य         | उपलित्त (पु.)         |   |                     |
| अन्तरा (अ.) .....       | -                   | दोहोच्या मध्ये | (स्त्री.) (न.) .      | - | लांछित, लेप लावलेला |
| अमच्च (पु.) .....       | -                   | मंत्री         | उपासक (पु.)           | - | उपासक, गृहस्थ शिष्य |
| अम्बु (न.) .....        | -                   | पाणी           | उच्यान (न.) .....     | - | उद्यान, बाग         |
| अम्मा (स्त्री.) .....   | -                   | आई             | उरग (पु.) .....       | - | साप                 |
| अरञ्ज (न.) .....        | -                   | अरण्य, वन      | ओदन (पु.) .....       | - | भात                 |
| अरि (पु.) .....         | -                   | शत्रू          | ओजवन्तु (वि.) .....   | - | पोषक                |
| असनि (स्त्री.) .....    | -                   | वीज            | ओवरक (पु.) .....      | - | शयन घर              |
| असप्पुरिस (पु.) .....   | -                   | दुष्ट मनुष्य   | ओवाद (न.) .....       | - | सल्ला               |
| असि (पु.) .....         | -                   | तलवार          | ककच (पु.) .....       | - | करवत                |
| अस्सु (न.) .....        | -                   | अश्रू          | कञ्जा (स्त्री.) ..... | - | कन्या               |
| अस्स (पु.) .....        | -                   | अश्व, घोडा     | कटच्छु (पु.) .....    | - | चमचा                |
| अहं (स.) .....          | -                   | मी             | कणेरु (स्त्री.) ..... | - | हत्तीण              |
| अहि (पु.) .....         | -                   | साप            | कत्तु (पु.) .....     | - | करणारा              |
| आकास (पु.) .....        | -                   | आकाश           | कथ (क्रि.वि.) .....   | - | कोठे                |

|                             |                             |                        |               |
|-----------------------------|-----------------------------|------------------------|---------------|
| कथा (स्त्री.) .....         | - भाषण                      | खुदा (स्त्री.) .....   | - क्षुधा, भुक |
| कथं (क्रि.वि.) .....        | - कसे                       | खेत (न.) .....         | - शेत         |
| कदली (स्त्री.) .....        | - केळी                      | गङ्गा (स्त्री.) .....  | - (गंगा) नदी  |
| कदा (क्रि.वि.) .....        | - केव्हा                    | गन्तु (पु.) .....      | - जाणारा      |
| कदाचि करहचि (क्रि.वि.) .... | - केव्हा<br>केव्हा, कधी कधी | गरु (पु.) .....        | - गुरु        |
| कपि (पु.) .....             | - माकड                      | गहपति (पु.) .....      | - गृहस्थ      |
| कम्म (न.) .....             | - कर्म, क्रिया              | गाम (पु.) .....        | - गाव         |
| करी (पु.) .....             | - हत्ती                     | गावी (स्त्री.) .....   | - गाय         |
| कवि (पु.) .....             | - कवी                       | गिरि (पु.) .....       | - गिरी, टेकडी |
| कस्मा (क्रि.वि.) .....      | - कशासाठी                   | गिलान (पु.) .....      | - रोगी, आजारी |
| काक (पु.) .....             | - कावळा                     | गीत (न.) .....         | - गीत         |
| काय (पु.) .....             | - काया, शरीर                | गीवा (स्त्री.) .....   | - मान         |
| कारुणिक (वि.) .....         | - कारुणिक                   | गुणवन्तु (वि.) .....   | - गुणवंत      |
| कासु (स्त्री.) .....        | - खड्डा                     | गुहा (स्त्री.) .....   | - गुहा        |
| किलज्जा (स्त्री.) .....     | -चटई, गालिचा                | गेह (न.) .....         | - घर          |
| कुक्कुर (पु.) .....         | - कुत्रा                    | गोण (पु.) .....        | - बैल         |
| कुच्छि (पु.) (स्त्री.) .... | - उदर, पोट                  | घट (न.) .....          | - घट, मडके    |
| कुट्टी (पु.) .....          | -कुष्ठरोगी                  | घर (न.) .....          | - घर          |
| कुतो (क्रि.वि.) .....       | - कोठून                     | च (अ.) .....           | - व, आणि      |
| कुत्र (क्रि.वि.) .....      | - कोठे                      | चक्खु (न.) .....       | - चक्षु, डोळा |
| कुमार (पु.) .....           | - कुमार, मुलगा              | चण्डाल (पु.) .....     | - चांडाल      |
| कुमारी (स्त्री.) .....      | - कुमारी                    | चन्द (पु.) .....       | - चंद्र       |
| कुलवन्तु (वि.) .....        | - कुलवंत                    | चित (न.) .....         | - चित्त, मन   |
| कुसल (वि.) .....            | - कुशल                      | चीवर (न.) .....        | - चीवर        |
| कुसुम (न.) .....            | - कुसुम, फूल                | चोर (पु.) .....        | - चोर         |
| कुहिं (वि.) .....           | - कोठे                      | छाया (स्त्री.) .....   | - छाया, सावली |
| केतु (पु.) .....            | - पताका, झेंडा              | जाणु/जण्णु (न.) .....  | - गुडघा       |
| खग्ग (पु.) .....            | - खड्ग                      | जल (न.) .....          | - जल, पाणी    |
| खण्ड (न.) .....             | - खंड, भाग                  | जात (पु.)              |               |
| खादनीय (न.) .....           | - खाद्य                     | (स्त्री.) (न.) .....   | - जन्मलेला    |
| खिप्पं (क्रि.वि.) .....     | - लवकर                      | जिव्हा (स्त्री.) ..... | - जिव्हा, जीभ |
| खीर (न.) .....              | - दूध                       | जेतु (पु.) .....       | - विजेता      |
|                             |                             | तण्डुल (न.) .....      | - तांदूल      |

|                          |                               |                        |                                 |
|--------------------------|-------------------------------|------------------------|---------------------------------|
| ततो (क्रि.वि.) .....     | - म्हणून                      | दूत (पु.) .....        | - दूत, संदेशवाहक                |
| तथ (क्रि.वि.) .....      | - तेथे                        | देव (पु.) .....        | - देव                           |
| तत्र (क्रि.वि.) .....    | - तेथे                        | देवता (स्त्री.) .....  | - देवता                         |
| तथा (क्रि.वि.) .....     | - त्याप्रमाणे,<br>अशा प्रकारे | देवि (स्त्री.) .....   | - राणी                          |
| तथागत (पु.) .....        | - तथागत, बुद्ध                | दोणि (स्त्री.) .....   | - होडी, बोट                     |
| तदा (क्रि.वि.) .....     | - तेव्वा                      | द्वार (न.) .....       | - दार, दरवाजा                   |
| तरु (पु.) .....          | - तरु, झाड                    | धञ्ज (न.) .....        | - धान्य                         |
| तरुणी (स्त्री.) .....    | - तरुणी, युवती                | धन (न.) .....          | - धन, संपत्ती                   |
| तस्मा (क्रि.वि.) .....   | - म्हणून                      | धनु (न.) .....         | - धनुष्य, तीर                   |
| तापस (पु.) .....         | - तपस्वी, ऋषि                 | धम्म (पु.) .....       | - धम्म, धर्म, स्वभाव            |
| ताव (क्रि.वि.) .....     | - तोपर्यंत                    | धातु (स्त्री.) ...     | - देहावशेष, मूलद्रव्य,<br>अस्थी |
| तिण (न.) .....           | - तृण, गवत                    | धीतु (स्त्री.) .....   | - (स्वतःची) मुलगी               |
| तीर (न.) .....           | - तीर, तट, किनारा             | धीवर (पु.) .....       | - मच्छिमार                      |
| तुण्ड (न.) .....         | - चोच                         | धेनु (स्त्री.) .....   | - धेनु, गाय                     |
| तेल (न.) .....           | - तेल                         | न (अ.) .....           | - नाही                          |
| त्वं (स.) .....          | - तू                          | नगर (न.) .....         | - नगर, शहर                      |
| दक्ख (वि.) .....         | - दक्ष                        | नदी (स्त्री.) .....    | - नदी                           |
| ददु (स्त्री.) (न.) ..... | - चर्मरोग                     | नयन (न.) .....         | - नयन, डोळा                     |
| दधि (न.) .....           | - दही                         | नर (पु.) .....         | - नर, माणूस, मनुष्य             |
| दाठी (पु.) .....         | - सुळेवाला हत्ती              | नरक (न.) .....         | - नरक                           |
| दातु (पु.) .....         | - दाता                        | नव (वि.) .....         | - नव, नवीन                      |
| दान (न.) .....           | - दान                         | नाना (अ.) .....        | - नाना, वेगवेगळे, अनेक          |
| दारक (पु.) .....         | - (लहान) मुलगा                | नारी (स्त्री.) .....   | - नारी, स्त्री                  |
| दारु (न.) .....          | - जळण, लाकूड                  | नालि (स्त्री.) .....   | - मापटे, माप                    |
| दास (पु.) .....          | - दास, सेवक                   | नावा (स्त्री.) .....   | - जहाज                          |
| दीघजीवी (पु.) .....      | - दीर्घायुषी                  | नाविक (पु.) .....      | - नाविक, नावाडी                 |
| दीप (पु.) ..             | - द्वीप, बेट, दीपक, दिवा      | निधि (पु.) .....       | - कोष, खजिना                    |
| दीपि (पु.) ..            | - चित्ता                      | निवास (पु.) .....      | - निवास, घर                     |
| दुक्खं (क्रि.वि.) .....  | - दुःख                        | नेतु (पु.) .....       | - नेता, पुढारी                  |
| दुब्बल (वि.) .....       | - दुर्बल, असहाय               | पक्खी (पु.) .....      | - पक्षी                         |
| दुस्स (न.) .....         | - कपडा                        | पञ्जर (पु.) (न.) ..... | - पिंजरा                        |
| दुहितु (स्त्री.) .....   | - कन्या, मुलगी                | पञ्जा (स्त्री.) .....  | - प्रज्ञा                       |

|                                      |                           |                                 |                                 |
|--------------------------------------|---------------------------|---------------------------------|---------------------------------|
| पञ्च (पु.) .....                     | - प्रश्न                  | पुष्पासन (न.) .....             | - पुष्पासन                      |
| पण्डित (पु.) .....                   | - विद्वान्                | पुब्बक (पु.)(स्त्री.)(न.) ..... | - प्राचीन                       |
| पण्ण (न.) .....                      | - पर्ण, पान               | पुरिस (पु.) .....               | - पुरुष, माणूस, नर              |
| पति (पु.) .....                      | - पती                     | पोक्खरणी (स्त्री.) .....        | - पुष्करणी,<br>तलाव             |
| पत्त (पु.) .....                     | - पात्र, भिक्षापात्र      | पोथक (न.) .....                 | - पुस्तक                        |
| पथ्यना (स्त्री.) .....               | - आशा, अपेक्षा, प्रार्थना | फरसु (पु.) .....                | - कुङ्हाड                       |
| पदुम (न.) .....                      | - पद्म, कमल               | फल (न.) .....                   | - फल                            |
| पब्बत (पु.) .....                    | - पर्वत, डोंगर            | बन्धु (पु.) .....               | - नातेवाईक                      |
| पभात (न.) .....                      | - प्रभात, सकाळ            | बलवन्तु (पु.)                   |                                 |
| पभू (पु.) .....                      | - प्रसुख व्यक्ति          | (स्त्री.)(न.) .....             | - बलवान्,<br>शक्तिशाली          |
| पसु (पु.) .....                      | - पशु                     | बली (पु.) .....                 | - बलवान्                        |
| परिसा (स्त्री.) .....                | - परिजन,<br>लवाजमा, परीषद | बहु (वि.) .....                 | - खूप, अनेक                     |
| पवत्तु (पु.) ..                      | - पारायण/पाठ करणारा       | बीज (न.) .....                  | - बीज, बी                       |
| पहूत (वि.) .....                     | - खूप, अधिक               | बुद्ध (पु.) .....               | - बुद्ध                         |
| पाणि (पु.) .....                     | - हात, तळहात              | बुद्धि (स्त्री.) .....          | - बुद्धी                        |
| पाणी (पु.) .....                     | - प्राणी                  | ब्राह्मण (पु.) .....            | - ब्राह्मण                      |
| पाद (पु.) .....                      | - पाय                     | ब्राह्मणी (स्त्री.) .....       | - ब्राह्मणी,<br>ब्राह्मण स्त्री |
| पानीय (न.) .....                     | - पिण्याचे पाणी           | भगिनी (स्त्री.) .....           | - भगिनी, बहीण                   |
| पाप (न.) .....                       | - पाप, वाईट कर्म          | भगवा (पु.) .....                | - भगवान्, बुद्ध                 |
| पासाण (पु.) .....                    | - दगड                     | भण्ड (न.) .....                 | - वस्तू, सामान                  |
| पासाद (पु.) .....                    | - प्रासाद, महाल           | भत्त (पु.) (न.) .....           | - भात                           |
| पि (अ.) .....                        | - सुद्धा, अतिरिक्त        | भत्तु (पु.) .....               | - पती                           |
| पिटक (पु.) .....                     | - टोपली, पेटी             | भरिया (स्त्री.) .....           | - भार्या,<br>बायको, पत्नी       |
| पितु (पु.) .....                     | - पिता                    | भातु (पु.) .....                | - भाऊ                           |
| पिपासा (स्त्री.) .....               | - तहान                    | भानुमा (पु.) .....              | - सूर्य                         |
| पिपासित (पु.)<br>(स्त्री.)(न.) ..... | - तहानलेला                | भिक्खु (पु.) .....              | - भिक्खु, भिक्षु                |
| पुञ्ज (न.) .....                     | - पुण्य                   | भूपति (पु.) .....               | - राजा                          |
| पुत (पु.) .....                      | - पुत्र                   | भूपाल (पु.) .....               | - राजा                          |
| पुत्तदार (पु.) .....                 | - मुले व पत्नी            | भूमि (स्त्री.) .....            | - भूमी,<br>जमीन, पृथ्वी         |
| पुन (अ.) .....                       | - पुन्हा                  |                                 |                                 |
| पुण्फ (न.) .....                     | - पुण्प                   |                                 |                                 |

|                                    |                             |  |                                    |
|------------------------------------|-----------------------------|--|------------------------------------|
| भोजन (न.) .....                    | - भोजन,                     | यदा (क्रि.वि.) .....                   | - जेव्हा                           |
|                                    | अन्न, जेवण                  | यदि (अ.) .....                         | - जर                               |
| भोजनीय (न.) .....                  | - मऊ खाद्य<br>(पिण्यायोग्य) | यसवन्तु (पु.)(स्त्री.)(न.)             | - प्रसिद्ध                         |
| मक्कट (पु.) .....                  | - मर्कट, माकड               | यस्मा (क्रि.वि.) ....                  | - ज्या कारणामुळे                   |
| मग (पु.) .....                     | - मार्ग, रस्ता, पथ          | यागु (स्त्री.) .....                   | - (तांदलाची<br>इ.) पेज, पेय पदार्थ |
| मच्छ (पु.) .....                   | - मासा                      | याचक (पु.) .....                       | - याचक, मागणारा                    |
| मञ्च (पु.) .....                   | - मंच, पलंग                 | याव (क्रि.वि.) .....                   | - किती दूर                         |
| मञ्जूसा (स्त्री.) .....            | - पेटी                      | युवति (स्त्री.) .....                  | -युवती, तरुणी                      |
| मणि (पु.) .....                    | - रत्न                      | रजक (पु.) .....                        | - धोबी                             |
| मत्तञ्जू (पु.) .....               | - नेमस्त, संयमी             | रज्जु (स्त्री.) .....                  | - दोरी                             |
| मधु (न.) .....                     | - मध                        | रत्ति (स्त्री.) .....                  | - रात्र                            |
| मधुकर (पु.) .....                  | - मधमाशी, भुंगा             | रथ (पु.) .....                         | - रथ, वाहन                         |
| मनुस्स (पु.) .....                 | - मनुष्य                    | रवि (पु.) .....                        | - रवी, सूर्य                       |
| मन्त (न.) .....                    | - मंत्र                     | रस (न.) .....                          | - रस, चव, स्वाद                    |
| मन्त्री (पु.) .....                | - मंत्री                    | रस्मि (स्त्री.) .....                  | - प्रकाशकिरण                       |
| मा (अ.) ... - ना, नको (निषेधार्थक) |                             | राजिनी (स्त्री.) .....                 | - राणी                             |
| मातु (स्त्री.) .....               | - माता, आई                  | रासि (पु.) .....                       | - रास, ढीग                         |
| मातुल (पु.) .....                  | - मामा                      | रुक्ख (पु.) .....                      | - वृक्ष, झाड                       |
| मार (पु.) .....                    | - मार, दुष्टशक्ती           | रुक्खमूळ (न.) .....                    | - वृक्षमूळ                         |
| माला (स्त्री.) .....               | - माला, माल                 | रूप (न.) .....                         | - रूप, वस्तु                       |
| मिंग (पु.) .....                   | - मृग, हरिण                 | लता (स्त्री.) .....                    | - लता, वेल                         |
| मित (पु.) (न.) .....               | - मित्र                     | लाभ (पु.) .....                        | - लाभ, फायदा                       |
| मुख (न.) .....                     | - मुख, चेहरा, तोँड          | लुढक (पु.) .....                       | - शिकारी                           |
| मुट्ठि (पु.) .....                 | - मूठ                       | लोक (पु.) .....                        | - जग                               |
| मुनि (पु.) .....                   | - मुनी                      | लोचन (न.) .....                        | - लोचन, डोळा                       |
| मूल (न.) ....                      | - पैसे, मूल्य, मूळ, धन      | वड्हकी (पु.) .....                     | - सुतार                            |
| मोदक (न.) .....                    | - मिठाई, मोदक               | वण्णवन्तु (पु.)<br>(स्त्री.)(न.) ..... | - रंगीत, रंगीबेरंगी                |
| यट्ठि (स्त्री.) .....              | - काठी                      | वत्तु (पु.) .....                      | - वक्ता                            |
| यतो (क्रि.वि.) .....               | - जेव्हापासून               | वथ (न.) .....                          | - वस्त्र, कापड                     |
| यथ (क्रि.वि.) .....                | - जेथे                      | वथु (न.) .....                         | - मालमत्ता                         |
| यत्र (क्रि.वि.) .....              | - जेथे                      | वदञ्जू (पु.) .....                     | - उदार                             |
| यथा (क्रि.वि.) .....               | - जसे                       |  |                                    |

|                         |                    |                               |                     |
|-------------------------|--------------------|-------------------------------|---------------------|
| वधू (स्त्री.) .....     | - वधू, नवरी, सून   | सथि (न.) .....                | - मांडी             |
| वन (न.) .....           | - वन, जंगल         | सत्थु (पु.) .....             | - शिक्षक, शास्ता    |
| वम्मिक (पु.) (न.) ..... | - वारूळ            | सद्ब (पु.) .....              | - शब्द, आवाज        |
| वराह (पु.) .....        | - वराह, डुक्कर     | सधा (स्त्री.) .....           | - श्रद्धा           |
| वसु (न.) .....          | - संपत्ती          | सधिं (अ.) .....               | - सह, बरोबर         |
| वा (अ.) .....           | - किंवा            | सप्प (पु.) .....              | - साप               |
| वाणिज (पु.) .....       | - वाणी, व्यापारी   | सप्पि (न.) .....              | - तूप               |
| वात (पु.) .....         | - वात, वारा        | सप्पुरिस (पु.) .....          | - सत्पुरुष          |
| वानर (पु.) .....        | - वानर, माकड       | सब्ब (पु.)(स्त्री.)(न.) ..... | - सर्व              |
| वापी (स्त्री.) ....     | - हौद, विहीर, तले  | सबञ्ज (पु.) .....             | - सर्वज्ञ           |
| वारि (न.) .....         | - नदी              | सभा (स्त्री.) .....           | - सभा               |
| वालुका (स्त्री.) .....  | - वालू             | समण (पु.) .....               | - श्रमण             |
| विज्जु (स्त्री.) .....  | - वीज              | समुद्र (पु.) .....            | - समुद्र            |
| विज्ञातृ (पु.) .....    | - ज्ञानी           | सम्मज्जनी (स्त्री.) ..        | - केरसुणी, झाडू     |
| विज्ञू (पु.) .....      | - विद्वान          | सम्मा (अ.) .....              | - चांगले, वैध       |
| विदू (पु.) .....        | - जाणता            | सर (पु.) .....                | - शर, बाण           |
| विनेतू (पु.) .....      | - शिस्त लावणारा    | सस्सु (स्त्री.) .....         | - सासू              |
| विय (अ.) .....          | - सारखा, प्रमाणे   | सह (अ.) .....                 | - सह                |
| विहार (पु.) .....       | - विहार            | सहायक (पु.) .....             | - मित्र, सहायक      |
| वीसति (स्त्री.) .....   | - वीस (२०)         | साखा (स्त्री.) .....          | - शाखा, फांदी       |
| वीहि (पु.) ....         | - साळ, भाताचे पीक  | साटक (पु.) .....              | - कपडा              |
| वेग (वि.) .....         | - वेग              | सामी (पु.) .....              | - पती               |
| वेतन (न.) .....         | - वेतन, पगार       | सारथी (पु.) .....             | - सारथी             |
| वेळु (पु.) .....        | - वेळू, बांबु      | साला (स्त्री.) ....           | - शाळा, सभागृह      |
| व्याधि (पु.) .....      | - व्याधी, रोग      | सावक (पु.) .....              | - श्रावक, शिष्य     |
| सकट (पु.) .....         | - गाडी, छकडा       | सिखी (पु.) .....              | - मोर               |
| सकल (वि.) ....          | - सकल, पूर्ण, सर्व | सिगाल (पु.) .....             | - कोल्हा            |
| सकुण (पु.) .....        | - पक्षी            | सिन्धु (पु.) .....            | - समुद्र            |
| सखी (स्त्री.) .....     | - सखी, मैत्रीण     | सिप्प (न.) .....              | - शिल्प व शास्त्र   |
| सग (न.) .....           | - स्वर्ग           | सिस्स (पु.) .....             | - विद्यार्थी, शिष्य |
| सचे (अ.) .....          | - जर               | सीघं (क्रि.वि.) .....         | - शीघ्र,            |
| सच्च (न.) .....         | - सत्य             | लवकर                          |                     |
| सत्तु (पु.) .....       | - शत्रू            | सील (न.) .....                | - शील               |

|                       |                  |                             |                    |
|-----------------------|------------------|-----------------------------|--------------------|
| सीस (न.) .....        | - डोके           | सुसु (पु.) .....            | - लहान मूळ         |
| सीह (पु.) .....       | - सिंह           | सूकर (पु.) .....            | - डुक्कर           |
| सुक (पु.) .....       | - पोपट           | सेढि (पु.) .....            | - श्रेष्ठी, सावकार |
| सुखं (क्रि.वि.) ..... | - सुख            | सेतु (न.) .....             | - सेतू, पूल        |
| सुखी (पु.) .....      | - सुखी (व्यक्ति) | सोण (पु.) .....             | - श्वान, कुत्रा    |
| सुगत (पु.) .....      | - सुगत, बुद्ध    | सोत (न.) .....              | - कान              |
| सुनख (पु.) .....      | - कुत्रा         | सोतु (पु.) .....            | - श्रोता           |
| सुर (पु.) .....       | - सुर, देवता     | सोपान (पु.) .....           | - सोपान, जिना      |
| सुरा (स्त्री.) .....  | - मद्य           | हथ (पु.) .....              | - हात              |
| सुरिय (पु.) .....     | - सूर्य          | हथी (पु.) .....             | - हत्ती            |
| सुव (पु.) .....       | - पोपट           | हिमवन्तु (पु.)(स्त्री.)(न.) | - हिमालय           |
| सुवण्ण (न.) .....     | - सोने           | हिरञ्ज (न.) .....           | - सोने             |

## शब्दार्थ (मराठी-पाली)

|                          |                      |                     |                      |
|--------------------------|----------------------|---------------------|----------------------|
| अकुशल .....              | - अकुसल/पाप          | ऐकणे .....          | - सुणाति             |
| अग्नि .....              | - आगि                | उपमा (अलंकार) ..... | - उपमा               |
| अनुभव करणे .....         | - विन्दति            | उगवणे .....         | - उदेति              |
| अंगुली, बोट .....        | - अंडुलि             | उद्यान .....        | - उद्यान             |
| अतिथी, पाहुणे .....      | - अतिथि              | उडणे .....          | - उड्हेति/उप्पत्ति   |
| अनित्य .....             | - अनिच्छ             | उदर .....           | - कुच्छि             |
| अनुकंपा करणे .....       | - अनुकम्पति          | उतरणे .....         | - ओतरति/ओरुहति       |
| अनुसरणे .....            | - अनुगच्छति          | उदार .....          | - वदञ्जू             |
| अनेक प्रकारे .....       | - नाना               | उपजणे .....         | - उप्पज्जति          |
| अपेक्षा करणे .....       | - आकङ्क्षति/पथेति    | उपभोगणे .....       | - विन्दति            |
| अरण्य/वन .....           | - अरञ्ज/वन/अटवि      | उपासक .....         | - उपासक              |
| अशा प्रकारे .....        | - तथा                | उघडणे .....         | - विवरति             |
| असणे/होणे .....          | - अत्थि/भवति/होति    | उपदेश देणे .....    | - देसेति             |
| अस्थी/धातु/मूलतत्व ..... | - धातु               | ऊस .....            | - उच्छु              |
| अश्व, घोडा .....         | - अस्स               | ऋद्धी .....         | - इळ्डि              |
| अस्वीकार करणे .....      | - पजहति              | ऋषी/मुनी .....      | - इसि/मुनि           |
| आच्छादणे .....           | - छादेति/पटिच्छादेति | ओढणे .....          | - आकङ्क्षति          |
| आज .....                 | - अज्ज               | कन्या/युवती ...     | - कज्जा/कुमारी/युवती |
| आजार, रोग .....          | - व्याधि             | नको/नये .....       | - मा                 |
| आजारी मनुष्य .....       | - गिलान              | करणारा, कर्ता ..... | - कर्तु              |
| आई .....                 | - अम्मा/मातु         | करणे .....          | - करोति              |
| आणणे .....               | - आनेति/आवहति/आहरति  | कर्म .....          | - कम्म               |
| आणि .....                | - च                  | काया .....          | - काय                |
| आसन .....                | - आसन                | कारण की .....       | - यतो/यस्मा          |
| आकाश .....               | - आकास               | कारुणिक .....       | - कारुणिक            |
| आवाज .....               | - सद्भ               | कावळा .....         | - काक                |
| आचार्य/गुरु .....        | - आचरिय/गरु/सत्थु    | कान .....           | - सोत                |
| अश्रू .....              | - अस्सु              | कुमार, मुलगा .....  | - कुमार              |
| ओढणे .....               | - आकङ्क्षति          | कुळ्हाड .....       | - फरसु               |
| अधिक .....               | - पहुत               | कूळ .....           | - कुल                |
| अनुशासक .....            | - विनेतृ             | कुदळ .....          | - कुदाल              |
| इच्छिणे .....            | - इच्छति/पथेति       | कसे .....           | - कथं                |

|                         |                           |                      |                         |
|-------------------------|---------------------------|----------------------|-------------------------|
| किती दूर .....          | - याव....ताव              | गुणवंत/शीलवंत .....  | - गुणवन्तु/<br>सीलवन्तु |
| कुष्ठी, कुष्ठरोगी ..... | - कुट्टी                  | गृहस्थ .....         | - गहपति                 |
| केरसुणी .....           | - सम्ज्ञनी                | गुहा .....           | - गुहा                  |
| करवत .....              | - ककच                     | घट, मडके .....       | - घट                    |
| केळी .....              | - कदली                    | घर .....             | - घर/गेह/निवास          |
| केव्वा केव्वा .....     | - कदाचि/करहचि             | घर सोडणे .....       | - निक्खमति              |
| कोठे .....              | - यथ्य/कथ्य/कुच्छ         | घरटे .....           | - कुलावक                |
| कोठून .....             | - यतो/कुतो                | धेणे .....           | - गण्हाति/आदाति         |
| कोल्हा .....            | - सिगाल                   | चढणे .....           | - आरुहति                |
| केव्वा .....            | - यदा/कदा                 | चित, मन .....        | - चित्त                 |
| कमळ .....               | - पदुम                    | चित्ता .....         | - दीपि                  |
| किंवा .....             | - वा                      | चांडाळ .....         | - चण्डाल                |
| कसणे, नांगरणे .....     | - कसति                    | चीवर .....           | - चीवर                  |
| कवी .....               | - कवि                     | पळी, चमचा .....      | - कटच्छु                |
| किरण .....              | - रस्मि                   | चंद्र .....          | - चन्द                  |
| काही वेळा .....         | - कदाचि करहचि             | चर्चा करणे .....     | - मन्तेति               |
| काठी .....              | - यद्धि                   | चर्मरोग .....        | - दहु                   |
| क्रोध करणे .....        | - कुज्जति                 | चालवतो .....         | - पाजेति                |
| खजिना, निधी .....       | - निधि                    | चुंबन धेणे .....     | - चुम्बति               |
| खड्हा .....             | - आवाट/कासु               | चोरणे .....          | - चोरेति                |
| खणणे .....              | - खणति                    | चोच .....            | - तुण्ड                 |
| विकत घणे .....          | - किणाति                  | चोर .....            | - चोर                   |
| खर्चणे .....            | - विस्सज्जेति             | चटई .....            | - किलज्जा               |
| खाणे .....              | - खादति/भुज्जति           | चेहरा .....          | - मुख                   |
| (मेजवानी) खाणे .....    | - भुज्जति                 | ...च्या पासून वाचणे, |                         |
| खेळणे .....             | - कीळति                   | टाळणे .....          | - परिवज्जेति            |
| खंड (तुकडा) .....       | - खण्ड                    | छाया, सावली .....    | - छाया                  |
| गडगडाट                  |                           | छेदणे, कापणे .....   | - छिन्दति               |
| (वादळी), वीज .....      | - असनि                    | जग, लोक .....        | - लोक                   |
| गाणे ....               | - गायति (क्रि.) गीत (नाम) | जन्म धेणे .....      | - उप्पज्जति             |
| गाय/धेनू .....          | - गावी/धेनु               | जिंकणे .....         | - जयति                  |
| गाव .....               | - गाम                     | जोपर्यंत .....       | - याव....ताव            |
| गुडघा .....             | - जाणु/जण्णु              |                      |                         |

|                          |                       |                        |                 |
|--------------------------|-----------------------|------------------------|-----------------|
| जमणे .....               | - सन्निपत्ति          | तयार करणे .....        | - पटियादेति     |
| जवळ पोहचणे .....         | - उपसङ्कमति           | तेव्हापासून .....      | - यतो           |
| जर .....                 | - सचे/यदि             | तलवार/खड्ग .....       | - असि/खग्ग      |
| जाणारा .....             | - गन्तु               | तेव्हा .....           | - तदा           |
| जाणे .....               | - गच्छति              | तेथे .....             | - तथ            |
| जाणणे .....              | - जानाति              | तहान .....             | - पिपासा        |
| ज्योत, ज्वाला .....      | - अच्च्य              | तहानलेला .....         | - पिपासित       |
| जिना, पायरी .....        | - सोपान               | तू/तुम्ही .....        | - त्वं/तुम्हे   |
| जीभ .....                | - जिह्वा              | तलहात .....            | - पाणि          |
| जेव्हा पासुन .....       | - यतो                 | तलाव .....             | - पोक्खरणी      |
| जगणे .....               | - जीवति               | थांबणे/उभे राहणे ..... | - तिट्ठति       |
| जंगल, वन ...             | - अरब्ज, वन, अटवि     | दुष्ट माणूस .....      | - असप्पुरिस     |
| झोपणे .....              | - सयति                | दुवळा, अशक्त .....     | - दुब्बल        |
| झाडणे .....              | - सम्मज्जति           | दगड .....              | - पासाण         |
| झाड .....                | - रुक्ख/तरु           | दक्ष .....             | - दक्ख          |
| टोपळी .....              | - पिटक                | दान .....              | - दान           |
| ठेवतो (सांभाळून) .....   | - ठपेति               | दहि .....              | - दधि           |
| ठार मारणे .....          | - हनति/मारेति         | दार, दरवाजा .....      | - द्वार         |
| ठेवणे (जागेवर) .....     | - पक्खिपति            | दाता .....             | - दातु          |
| डसणे, चावणे .....        | - डसति                | दुःख .....             | - दुक्ख         |
| डोळा, नयन .              | - अक्रिय/चक्रवृ/लोचन/ | दीप, बेट .....         | - दीप           |
| नयन                      |                       | दीर्घायुषी .....       | - दीर्घजीवी     |
| डुक्कर                   | - सूकर/वराह           | दूत .....              | - दूत           |
| डागाळलेला, बरबटलेला .... | - उपलित्त             | देणे .....             | - ददाति/देति    |
| तरणे, तरून जाणे .....    | - तरति                | दूध .....              | - खीर           |
| तट .....                 | - तीर                 | देव/देवता/सुर .....    | - देव/देवता/सुर |
| तापस, तपस्वी .....       | - तापस                | दुषित करणे .....       | - दूसेति        |
| तीर, काठ .....           | - तीर                 | दुकान .....            | - आपण           |
| तेल .....                | - तेल                 | दारु .....             | - सुरा          |
| तोडणे .....              | - भज्जति              | धन .....               | - धन/वसु        |
| तृण, गवत .....           | - तिण                 | धनुष्य .....           | - धनु           |
| तूप .....                | - सप्पि               | धम्म .....             | - धम्म          |
| त्यागणे, सोडणे .....     | - निक्रियमति          | धान्य .....            | - धज्ज          |

|                          |                  |                               |                           |
|--------------------------|------------------|-------------------------------|---------------------------|
| (दुधाची) धार काढणे ..... | - दुहति          | पहाणे .....                   | - पस्सति                  |
| धावणे .....              | - धावति          | पक्षी .....                   | - पक्खी/सकुण              |
| धुणे .....               | - धोवति          | प्रकाश .....                  | - आलोक                    |
| धोबी .....               | - रजक            | प्रकाशणे .....                | - ओभासेति                 |
| न, नाही .....            | - न              | प्रभात .....                  | - पभात                    |
| नगर, शहर .....           | - नगर            | प्रज्वलित करणे .....          | - जालेति                  |
| न्हाणे .....             | - नहायति         | प्रभू (मोठा माणूस) .....      | - पभू                     |
| नाव .....                | - दोणि           | प्रयत्न करणे .....            | - उस्सहति/वायमति          |
| नाचणे .....              | - नच्यति         | प्रलोभणे .....                | - पलोभति                  |
| नवे .....                | - नव             | प्रवर्तन करणे .....           | - पवत्तेति                |
| नासणे .....              | - नासेति         | प्रवेश करणे .....             | - पविसति                  |
| निर्माण करणे .....       | - मापेति         | प्रश्न .....                  | - पञ्च                    |
| निमंत्रण देणे .....      | - निमन्तेति      | प्रसन्न होणे .....            | - पसीदति                  |
| नरक .....                | - नरक            | पसराविणे (अंथरणे) .....       | - पत्थरति                 |
| नातेवाईक .....           | - बन्धु          | प्रहार करणे .....             | - पहरति                   |
| निवारणे .....            | - निवारेति       | प्रज्ञा .....                 | - पञ्जा                   |
| नदी .....                | - नदी/वारि       | प्रज्ञावंत .....              | - पञ्जावन्तु              |
| नाविक .....              | - नाविक          | परमार्थ .....                 | - ओवाद                    |
| नाव, जहाज .....          | - नावा           | पराजित करणे .....             | - पराजेति                 |
| नेणे, घेऊन जाणे .....    | - हरति           | परिजन (लवाजमा) .....          | - परिसा                   |
| नेता .....               | - नेतु           | परिव्रजा घेणे, दीक्षित होणे - | पब्बजति                   |
| नेतृत्व करणे .....       | - नेति/नयति      | पाठलाग करणे .....             | - अनुबन्धति,<br>अनुगच्छति |
| नोकर, सेवक .....         | - दास            | पाठवणे (पत्र. इ.) -           | पेसेति/पहिणाति            |
| नाना (वेगवेगळे) .....    | - नाना           | पाडणे .....                   | - पातेति                  |
| पडणे .....               | - पतति           | पिण्याचे पाणी ...             | - उदक/जल/पार्नीय<br>(पेय) |
| पल्ली .....              | - भरिया/वधु      | पात्र .....                   | - पत्त                    |
| पल्ली व पुत्र .....      | - पुतलदारा       | पान .....                     | - पण्ण                    |
| पताका .....              | - केतु           | प्राणी .....                  | - पाणी                    |
| पती .....                | - पति/भत्तु/सामी | पाप .....                     | - पाप                     |
| पदार्थ .....             | - रूप            | पाय .....                     | - पाद                     |
| परशु, कुळाड .....        | - फरसु           | पारायण करणारा .....           | - पवत्तू                  |
| पर्वत, डोंगर .....       | - पब्बत          |                               |                           |
| पशु .....                | - पसु            |                               |                           |

|                           |                          |                                |                      |
|---------------------------|--------------------------|--------------------------------|----------------------|
| प्रासाद, महाल .....       | - पासाद                  | बजावून सांगणे - अनुसासति/ओवदति |                      |
| पिंजरा .....              | - पञ्जर                  | बंद करणे, झाकणे .....          | - ठकेति              |
| पीडणे, दमन करणे .....     | - पीळेति                 | बांधणे .....                   | - बन्धति             |
| पिणे .....                | - पिवति/पिबति            | बकरा .....                     | - अज                 |
| पिता, वडील .....          | - पितु                   | बघणे .....                     | - ओलोकेति            |
| प्रिय असणे, आवडणे ....    | - पियायति                | ब्राम्हण .....                 | - ब्राह्मण           |
| पुण्य .....               | - पुञ्ज/कुसल             | बहू, खुप .....                 | - बहु                |
| पूर्ण करणे .....          | - समिज्ञति               | बहुत .....                     | - पहूत               |
| पुत्र .....               | - पुत                    | बुद्ध .....                    | - तथागत/सुगत/भगवा    |
| पुत्री, मुलगी .....       | - दारिका/धीतु/दुहितु     | बसणे .....                     | - निसीदति            |
| पुन्हा .....              | - पुन                    | बैल .....                      | - गोण                |
| पुरातन .....              | - पुब्वक                 | बोलावणे .....                  | - पक्कोसति           |
| पुल .....                 | - सेतू                   | बली/बलवान .....                | - बली/बलवन्तु        |
| पुसणे (विचारणे) .....     | - पुच्छति                | बीज .....                      | - बीज                |
| पुस्तक .....              | - पोत्थक                 | बोलणे, भाषण देणे ..            | - कथेति/भासति        |
| पुष्पासन .....            | - पुफ्फासन               | बाहेर काढणे .....              | - नीहरेति            |
| पेज (तांदळाची इ.) .....   | - यागु                   | बरोबर, सह .....                | - सद्ब्बि/सह         |
| पेटी .....                | - मञ्जूसा, पिटक          | बाणाने मारणे .....             | - विज्ञति            |
| पेरणे .....               | - वपति                   | भरणे .....                     | - पूरेति             |
| पोट .....                 | - कुच्छि                 | भ्राता, भाऊ .....              | - भातु               |
| पोपट .....                | - सुक/सुव                | भाषण देणे .....                | - आमन्तेति           |
| पोसणे .....               | - पोसेति                 | भिक्षा,दान .....               | - दान                |
| पंडित .....               | - विदू/विज्ञू/पञ्जावन्तु | भिक्षु .....                   | - भिक्खु/समण         |
| पडणे .....                | - पतति                   | भिणे .....                     | - भायति              |
| प्रसिद्ध .....            | - यसवन्तु                | भाताचे पीक .....               | - साळ/वीहि           |
| पूजा करणे .....           | - पूजेति, वन्दति         | भूमी .....                     | - भूमि               |
| प्रस्थान करणे .....       | - निक्खमति               | भोजन/खाद्य .....               | - भोजन/भोजनीय/खादनीय |
| पिण्याचे पाणी .....       | - पानीय                  | भात .....                      | - भत्त/ओदन/तण्डुल    |
| पोषाख .....               | - साटक , वथ              | भगिनी, बहीण .....              | - भगिनी              |
| प्राप्त करणे, मिळणे ..... | - लभति                   | भाषण, कथन .....                | - कथा                |
| फडकावणे (झेंडा) .....     | - उस्सापेति              | भूक (क्षुदा) .....             | - खुदा               |
| फळ .....                  | - फल                     | भेदणे/भंजणे .....              | - भिन्दति/भञ्जति     |
| फेकणे .....               | - छहेति                  |                                |                      |

|                           |                   |                              |                   |
|---------------------------|-------------------|------------------------------|-------------------|
| मच्छीमार .....            | - धीवर            | रागावणे .....                | - कुञ्जति         |
| मधमाशी/भ्रमर, भुंगा ..... | - मधुकर           | राजा .....                   | - भूपाल/भूपति     |
| मध .....                  | - मधु             | रास (ढीग) .....              | - रासि            |
| मधे .....                 | - अन्तरा          | रात्र .....                  | - रत्ति           |
| मनुष्य .....              | - मनुस्स/पुरिस/नर | रोपणे .....                  | - रोपेति          |
| माहिती देणे .....         | - आरोचेति         | राणी .....                   | - राजिनी          |
| माला .....                | - माला            | राज्य करतो .....             | - पालेति          |
| मासा .....                | - मच्छ            | रोगी .....                   | - गिलान           |
| मी .....                  | - अहं             | रस/चव .....                  | - रस              |
| मित्र .....               | - मित्त/सहाय(क)   | रथ .....                     | - रथ              |
| मुक्त करणे .....          | - मुञ्चति         | रडणे .....                   | - रोदति           |
| मुख, तौँड, चेहरा .....    | - मुख             | रंगीत .....                  | - वण्णवन्तु       |
| मूठ .....                 | - मुट्ठि          | लता (वेल) .....              | - लता             |
| मूल .....                 | - दारक            | लाभ .....                    | - लाभ             |
| मापटे, माप .....          | - नाळि            | लाभणे/मिळविणे/स्विकारणे .... | - लभति            |
| मिसलणे .....              | - साम्मिस्सेति    | लवाजमा/परिजन .....           | - परिसा           |
| मोजणे .....               | - मिनाति          | लवकर .....                   | - खिप्पं          |
| आनंदित होणे .....         | - मोदति           | लिहिणे .....                 | - लिखति           |
| मैत्रीण .....             | - सखी             | व, आण .....                  | - च               |
| मंच .....                 | - मञ्च            | वस्त्र, कापड .....           | - वथ्य/दुस्स/साटक |
| मंत्र .....               | - मन्त्र          | वाढणे .....                  | - वढेति           |
| मंत्री .....              | - मन्त्री         | वारूळ .....                  | - वम्मिक          |
| मान .....                 | - गीवा            | वास्तू .....                 | - वस्थु           |
| मोर .....                 | - सिखी            | वाहन, बैलगाडी .....          | - सकट             |
| मार्ग .....               | - मग्ग            | विभाजणे .....                | - विभजति          |
| मिठाई .....               | - मोदक            | विवरण करणे .....             | - व्याकरोति       |
| म्हणून .....              | - तस्मा           | वसणे/विहार करणे ..           | - वसति/विहरति     |
| मामा .....                | - मातुल           | वस्तू (सामान) .....          | - भण्ड            |
| मुलबाळ (व पल्नी) .....    | - पुतदार          | वास्तवात, निश्चित .....      | - अद्वा           |
| याचक .....                | - याचक            | विद्वान .....                | - विदू/विझू       |
| येणे .....                | - आगच्छति         | वीज .....                    | - असनि            |
| रल/मणी .....              | - मणि             | व्यापारी .....               | - वाणिज           |
| रक्षण करणे .....          | - रक्खति          | विहार .....                  | - विहार           |

|                              |                        |                            |                  |
|------------------------------|------------------------|----------------------------|------------------|
| विचार करतो .....             | - चिन्तेति             | सारथी .....                | - सारथी          |
| वीस (२०) .....               | - वीसति                | सासू .....                 | - सस्तु          |
| विजेता .....                 | - जेतु                 | सुतार .....                | - वहुकि          |
| वानर, माकड ...               | - वानर/मक्कट/कपि       | सेतू, पूल .....            | - सेतु           |
| वाळू .....                   | - वालुका               | सोने .....                 | - सुवण्ण/हिरञ्ज  |
| वारा .....                   | - वात                  | सोबत राहतो .....           | - भजति/परिवारेति |
| वक्ता .....                  | - वक्तु                | संभाषण करणे .....          | - सल्लपति        |
| वंदन करणे .....              | - वन्दति/नमस्ति        | सकल, सर्व .....            | - सकल            |
| वेष्टन घालणे, गुंडाळणे ..... | - वेठेति               | सरपण, लाकुड .....          | - दारु           |
| वेचणे, गोळा करणे .....       | - ओचिनाति/<br>संहरति   | सम्यक, योग्य .....         | - सम्मा          |
| वेतन, पगार .....             | - वेतन                 | सभागृह/शाला .....          | - साला           |
| विद्यार्थी .....             | - सिस्स                | सुखी (माणूस) .....         | - सुखी           |
| विखरणे .....                 | - विष्किरति            | सुखाने .....               | - सुखं           |
| विकणे .....                  | - विकिकणाति            | स्वर्ग .....               | - सग             |
| विकसित करणे .....            | - वहेति                | सारखे (असणे) .....         | - विय            |
| विचार-विमर्श .....           | - मन्त्रेति            | सिंह .....                 | - सीह            |
| वाटणे .....                  | - विभजति               | सुरा (मध्य) .....          | - सुरा           |
| वस्तू .....                  | - पदार्थ               | संयमी, नेमस्त .....        | - मतञ्जू         |
| विभाग .....                  | - खण्ड                 | संबोधन करणे .....          | - आमन्तेति       |
| व्याधी, रोग .....            | - व्याधि               | सर्वज्ञ .....              | - सब्बञ्जू       |
| वर्जिणे, सोडणे, टाळणे ..     | - परिवज्जेति           | सरोवर .....                | - पोक्खरणी       |
| सिंचणे, शिंपडणे .....        | - सिज्जति              | साप .....                  | - सप्प/अहि/उरग   |
| स्पर्श करणे .....            | - फुसति                | सावली .....                | - छाया           |
| सत्य .....                   | - सच्च                 | सूचना देणे .....           | - आरोचेति        |
| समजणे .....                  | - अधिगच्छति            | सोने .....                 | - हिरञ्ज, सुवण्ण |
| समुद्र, सागर ..              | - समुद्र, उदधि, सिन्धु | सखी .....                  | - सखी            |
| सत्युरुष .....               | - सप्पुरिस             | सोडून देणे, मुक्त करणे ... | - मुञ्चति        |
| सभा .....                    | - सभा                  | सोडणे, अस्विकार करणे ...   | - पजहति          |
| सल्ला .....                  | - ओवाद                 | सर्वज्ञ .....              | - सब्बञ्जू       |
| सल्ला देणे .....             | - ओवदति                | शिकवणे .....               | - वाचेति         |
| सर्व .....                   | - सब्ब                 | शिव्र .....                | - सीधं           |
| सांत्वन करणे .....           | - समस्सासेति           | शीर्ष (डोके) .....         | - सीस            |
|                              |                        | शिकारी, व्याध .....        | - लुद्दक         |

|                         |                |                          |                       |
|-------------------------|----------------|--------------------------|-----------------------|
| शेत .....               | - खेत्त        | श्रेष्ठी, सावकार .....   | - सेद्धी              |
| शिवणे .....             | - सिब्बति      | थ्रोता .....             | - सोतु                |
| शिशू .....              | - सुसु         | हत्ती .....              | - हत्थी/करी/दाठी      |
| (परि) शोध घेणे .....    | - परियेसति     | हत्तीण .....             | - कणेरु               |
| शर, बाण .....           | - सर           | हरीण .....               | - मिग                 |
| शरीर .....              | - काय          | हात .....                | - हत्थ                |
| शाखा .....              | - साखा         | हितचिंतक .....           | - अथञ्जू              |
| शिल्प आणि शास्त्र ..... | - सिप्प        | हिमालय .....             | - हिमवन्तु            |
| शकणे .....              | - सक्कोति      | हिंसा करणे .....         | - हिंसति              |
| शिकणे .....             | - उग्गणहाति    | हसणे .....               | - हसति                |
| शिजवणे .....            | - पचति         | हाताचा तळवा .....        | - पाणि                |
| शिल्प .....             | - सिप्प        | होणे .....               | - भवति/होति           |
| शील .....               | - सील          | हिंडणे/प्रवास करणे ..... | - आहिण्डति/<br>चरति   |
| शिस्तीचा .....          | - विनेतृ       | हौद, विहीर .....         | - वापी                |
| शत्रू .....             | - सत्तु/अरि    | हरविणे .....             | - पराजेति अनुक्रमणिका |
| शक्तिशाली .....         | - बली, बलवन्तु |                          |                       |
| श्रद्धा .....           | - सद्धा        |                          |                       |
| श्रावक, शिष्य .....     | - सावक         |                          |                       |



### आचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का एवं श्रीमती इलायचीदेवी गोयन्का

श्री सत्यनारायणजी गोयन्का यांचा जन्म म्यंमा (ब्रह्मदेश) च्या मांडळे शहरात सन १९२४ मध्ये झाला. दहाव्या वर्गात साच्या ब्रह्मदेशात सर्वप्रथम आल्यावरही पारिवारिक कारणामुळे त्यांना पुढे शिकता आले नाही. त्यांनी लहान वयातच अनेक वाणिज्यिक व औद्योगिक संस्थांची स्थापना केली व खूप धन अर्जित केले. अनेक सामाजिक व सांस्कृतिक केंद्रांची स्थापना केली. ते सततच्या तनावामुळे तीव्र डोकेदुखी (Migraine) ने आजारी झाले, ज्याचा इलाज ब्रह्मदेशातीलच नाहीत तर विश्वातील प्रसिद्ध डॉक्टरही करू शकले नाहीत. तेव्हा एकाने त्यांना विपश्यना करण्यासाठी प्रेरित केले, जे आज त्यांच्या व अनेकांच्या कल्याणाचे कारण झाले.

सयाजी ऊ वा खिन यांच्याकडून श्री गोयन्काजी सन १९५५ ला विपश्यना विद्या शिकले आणि चौदा वर्षापर्यंत त्यांच्या पायाशी बसून अभ्यास करण्यासोबतच त्यांनी बुध्दवाणीचेही अध्ययन केले. सन १९६९ मध्ये ते भारतात आले आणि त्यांनी मुंबईत पहिले शिविर घेतले. त्यानंतर शिविरांची रांगच लागली. सन १९७६ ला इगतपुरीत पहिले निवासी विपश्यना केंद्र बनले. आतापर्यंत विश्वभरात जवळपास १७२ केंद्र बनली आहेत व रोज नवीन केंद्रांची स्थापना होत आहे. जेथे प्रशिक्षित केलेल्या जवळपास १२०० विपश्यनाचार्यांच्या सहकाऱ्याने विश्वातील ५९ भाषांमध्ये १० दिवसांच्या शिविरा व्यतिरिक्त, अनेक केंद्रांवर २०, ३०, ४५, व ६० दिवसांची शिविरे आयोजित केली जातात. सर्व शिविरांचे संचालन निशुल्क असते. भोजन, निवास इत्यादींचा खर्च शिविराने लाभान्वित साधकांच्या स्वैच्छिक दानाने चालतो. ह्याच्या सर्वहितकारी स्वरूपाला पाहून जगातील अनेक कारागृहात व शाळांमध्येच नाही तर पोलिस, न्यायाधीश, सरकारी अधिकारी इत्यादींसाठीही शिविरे आयोजित केली जातात.

ISBN 978-81-7414-369-3



VRI - M2 6